जन-जन की वाणी...

हिन्दी दैनिक

सोन वर्षा वाणी

औरंगाबाद, पटना, आरा एवं रांची से प्रकाशित

Page 11 खेल

श्रेयस अय्यर को मिल सकता है बड़ा इनाम, बीसीसीआई ने चैंपियंस के बाद बनाया...

Page 10 देश

अश्लील जोक्स मामला : रणवीर इलाहाबादिया को नया समन भेजेगी...

शुक्ल पक्ष, आर्द्रा, विक्रम संवत् 2081 • औरंगाबाद • शनिवार • 08 मार्च 2025 • वर्ष 27 • अंक 88 • पृष्ठ 12

मूल्य ₹ 2.00

सोना चांदी

सोना	चांदी
10 ग्राम 22 कैरेट	1 किलो चांदी
₹ 87,160	₹99,100

आज का इतिहास

- **2009 :** भारत के अग्रणी गोल्फ खिलाड़ी ज्योति रंधावा ने थाइलैंड ओपन ख़िताब जीता।
- **2013 :** वेनेजुएला के पूर्व राष्ट्रपति ह्यूगो शावेज का निधन। उपराष्ट्रपति निकोलस मादुरो अंतरिम राष्ट्रपति बने।

न्यूज बाइट्स

हाटे एक्सप्रेस से मिली 42 लाख की चांदी

कटिहार (नि.सं.)। कटिहार जंक्शन पर रेल पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 70 किलो चांदी के आभूषण जब्त किए हैं। जब्त किए गए आभूषणों की कीमत लगभग 42 लाख रुपए आंकी गई है। रेल एसपी हरिशंकर कुमार ने बताया कि चांदी के आभूषणों को कोलकाता से हाटे बजारे एक्सप्रेस ट्रेन की जनरल बोगी में लाया जा रहा था। इस मामले में दो संदिग्धों को गिरफ्तार किया गया है। प्रारंभिक जांच में टैक्स चोरी का मामला सामने आया है। रेल एसपी ने बताया कि नियमों के अनुसार 50 हजार रुपए से अधिक की वस्तुओं के अंतर-राज्यीय परिवहन के लिए ई-वे बिल जरूरी है। इस मामले में कोई ई-वे बिल नहीं बनवाया गया था। पुलिस मामले की गहन जांच कर रही है और जल्द ही इस पूरे रैकेट का खुलासा किया जाएगा। रेल एसपी ने बताया है कि कुछ दिनों से ये गुप्त सूचना मिल रही थी कि पश्चिम बंगाल से यहां पर अवैध रूप से कुछ आभूषण यहां लाए जा रहे है।

आज से 4 जगह शुरू होगा मॉडल ट्रैफिक चेकपोस्ट

पटना (नि.सं.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर पटना शहरी इलाके में 4 मॉडल ट्रैफिक चेक पोस्ट की शुरुआत हो रही है। इसमें पूरी तरह से महिला पदाधिकारी तैनात होंगी। इसमें चिड़ियाखाना गेट नंबर 2, सगुना मोड़, नवीन सचिवालय मोड़ और हड़ताली मोड़ का चेकपोस्ट शामिल है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 8 मार्च को चिड़ियाखाना गेट नंबर 2 के पास बनाए गए मॉडल ट्रैफिक चेकपोस्ट का उद्घाटन करेंगे। इसकी पुष्टि ट्रैफिक एसपी पटना के कार्यालय से शुक्रवार को की गई है।

मुख्यमंत्री ने पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के अन्तर्गत सुधा के पहले एक्सपोर्ट कंसाइनमेंट का किया शुभारंभ, कहा

अब विदेश में भी मिलेगी बिहारी मिठाई

निज संवाददाता | पटना

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शुक्रवार को 1 अणे मार्ग से पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के अन्तर्गत सुधा के पहले एक्सपोर्ट कंसाइनमेंट का शुभारंभ किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने दो वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम के दौरान भेजे जानेवाले सामान घी, मखाना एवं गुलाब जामुन का मुख्यमंत्री ने अवलोकन किया। इस दौरान पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ. एन. विजयालक्ष्मी ने मुख्यमंत्री को विस्तृत जानकारी देते हुये बताया कि एक वाहन में मखाना और घी को अमेरिका के लिये तथा दूसरे वाहन में गुलाब जामुन को कनाडा के लिये भेजा जा रहा है। यह वाहन समुद्री पोर्ट तक सामानों को पहुँचायेगा। समुद्री पोर्ट से फिर सामान को अमेरिका और कनाडा भेजा जायेगा। कार्यक्रम में पशु एवं मत्स्य संसाधन मंत्री श्रीमती रेणु देवी ने मुख्यमंत्री को पुष्प गुच्छ भेंटकर स्वागत किया। प्रसिद्ध 'सुधा ब्राण्ड' घी, गुलाबजामुन और मखाना उत्पादों के निर्यात का पहला खेप गुजरात के मुद्रा पोर्ट और वेस्ट बंगाल के कोलकाता पोर्ट के लिए भेजा गया है।

वहीं, सुधा गुलाब जामुन 1 किलो के पैक साइज में कनाडा में निर्यात किया जा रहा है। निर्यात के वर्तमान खेप में कुल 48.00 लाख का सुधा उत्पाद। इसमें 31.45 लाख का 5700 किलोग्राम घी, 8.30 लाख का 500 किलो मखाना और 8.25 लाख का 5000 किलो गुलाब जामुन शामिल है। गुलाब जामुन का मैन्युफैक्चर डेट से 1 साल तक लाइफ और घी का डेढ़ साल तक लाइव रहेगा। सीएम नीतीश कुमार ने इस मौके पर कॉम्फेड की और से अपने उत्पादों को निर्यात शुरू करने पर खुशी जताई। साथ ही कहा कि यह क्षण पुरे बिहार वासियों विशेषकर बिहार के किसानों एवं पशुपालकों के लिये गौरव का पल है। उन्होंने प्रदेश के पशुपालकों को भी धन्यवाद दिया। साथ ही कॉम्फेड के सभी पदाधिकारियों का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि कॉम्फेड अपने अधिक से अधिक उत्पाद श्रृंखला का निर्यात का विस्तार विश्व के अन्य देशों में भी करें। इस अवसर पर केन्द्रीय पंचायती राज, पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह, उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, जल संसाधन सह संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी, पशु एवं मत्स्य संसाधन मंत्री रेणु देवी, राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री संजय सरावगी, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री डॉ. सुनील कुमार, सांसद संजय कुमार झा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, विकास आयुक्त प्रत्यय अमृत, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ. एस. सिद्धार्थ, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग की अपर मुख्य सचिव डॉ. एन. विजयालक्ष्मी, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव कुमार रवि, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह सहित अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

उत्पादों में हुआ काफी सुधार

मीडिया से बात करते हुए कॉम्फेड के प्रबंध निदेशक राज कुमार ने बताया कि कॉम्फेड ने अपने उत्पादों की गुणवत्ता में काफी सुधार किया है, जिससे उत्पादों के सेल्फ लाइफ में बढ़ोतरी हुई है। पिछले साल पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग की अपर मुख्य सचिव के मार्गदर्शन में कॉम्फेड के पदाधिकारी शामिल थे।

गांवों में मिलेगा सुधा का दूध-दही, पेड़ा और गुलाब जामुन, पंचायतों में बनेंगे आउटलेट

बिहार के गांवों में सुधा उत्पाद के आउटलेट खुलेंगे। यहां दूध, दही, पेड़ा और गुलाबजामुन सहित सुधा के अन्य सभी उत्पाद मिलेंगे। बिहार राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (कॉम्फेड) के माध्यम से राज्य की सभी 8053 पंचायतों के पंचायत सरकार भवन में ये आउटलेट खुलेंगे। इसके लिए कॉम्फेड की ओर से पंचायती राज विभाग से जल्द ही करार होगा। इससे बिहार के ग्रामीण इलाकों में गुणवत्तापूर्ण दुग्ध उत्पादों की उपलब्धता बढ़ेगी। इनमें सुगर फ्री मिठाइयां एवं अन्य उत्पाद भी शामिल होंगे। घर में किसी मेहमान के आने पर ग्रामीणों को अपने पंचायत से बाहर स्थित दुकानों पर जाकर मिठाई या अन्य उत्पाद लाने की मजबूरी भी नहीं रहेगी। कॉम्फेड के प्रस्ताव के अनुसार, पंचायत सरकार भवन में न्यूनतम 400 वर्ग गफीट जगह ली जाएगी। साथ ही, पंचायती राज विभाग को इसके किराये का भुगतान कॉम्फेड करेगा। इस स्थान पर आउटलेट के संचालन के लिए स्थानीय लोगों से प्रस्ताव मांगा जाएगा और उन्हें किराये पर जगह उपलब्ध कराई जाएगी। वर्तमान में सुधा के उत्पादों की बिक्री बिहार सहित दूसरे राज्यों में हो रही है। साथ ही इसका निर्यात भी शुरू होने जा रहा है। सुधा के उत्पाद को लोकल से ग्लोबल बनाया जा रहा है।

बिहार में हैं सुधा डेयरी के 640 आउटलेट

जानकारी के अनुसार, वर्तमान में राज्य में सुधा के आउटलेट प्रखंड स्तर पर हैं। राज्य में अभी इसके कुल 640 आउटलेट हैं। कॉम्फेड एवं अन्य संबद्ध सहकारी समितियों के माध्यम से इसकी राज्य में करीब 5400 करोड़ की बिक्री होती है। प्रदेश सरकार का प्रयास है कि इसे इस साल बढ़ाकर 7500 करोड़ रुपये तक किया जाएगा। ताकि दुग्ध उत्पादक किसानों की आय बढ़े और युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी मिले। सुधा ब्रांड को गांवों तक पहुंचाने की कॉम्फेड की योजना से स्थानीय स्तर पर इसके उत्पादों को बड़ा बाजार मिलेगा। सुधा उत्पादों की पहुंच ग्रामीण इलाकों तक हो जाएगी। गांवों में दूध की खरीद कॉम्फेड द्वारा की जाती है, जबकि गुणवत्तापूर्ण उत्पादों की खरीद के लिए उन्हें नजदीकी बाजार में जाना होता है।

उप मुख्यमंत्री ने राज्य स्तरीय एफपीओ मेला एवं कार्यशाला का किया उद्घाटन

निज संवाददाता | पटना

उप मुख्यमंत्री सह कृषि मंत्री विजय कुमार सिन्हा ने आज कृषि भवन, पटना में राज्य स्तरीय किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) मेला, प्रदर्शनी और कार्यशाला 2025 का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने की। उन्होंने बताया कि पिछले एक दशक में देश में कृषि उत्पादन 265 मिलियन टन से बढ़कर 330 मिलियन टन और बागवानी उत्पादन 350 मिलियन टन से अधिक हो गया है। यह सरकार की 'बीज से बाजार' तक की रणनीति का परिणाम है। सरकार ने किसान-केंद्रित फिजिकल, डिजिटल और सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर पर विशेष बल दिया है, जिससे बिचौलियों और लीकेज की संभावनाओं को खत्म किया जा सके। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री की प्रेरणा से एफपीओ योजना शुरू की गई, जिसके तहत पूरे देश में किसानों के लिए लाभकारी संगठनों का एक नेटवर्क तैयार किया जा रहा है। एफपीओ के माध्यम से किसान उत्पादन, प्रोसेसिंग, मूल्यवर्धन और मार्केटिंग में सशक्त भूमिका निभाएंगे, जिससे उनकी आय में वृद्धि होगी।

कृषि उद्यमिता और किसान सशक्तिकरण पर जोर

अपने संबोधन में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि कृषि केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि उद्यमिता का उभरता हुआ क्षेत्र बन गया है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में उठाए जा रहे कदमों का उल्लेख करते हुए कहा कि किसानों को विकास का पहला इंजन मानते हुए उनकी समृद्धि सुनिश्चित करना सरकार की प्राथमिकता है।

उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री ने 29 फरवरी 2020 को 10,000 एफपीओ के गठन और संवर्द्धन की केंद्रीय योजना की शुरुआत की थी, जिसके लिए 6,865 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है। हाल ही में 26 फरवरी को भागलपुर दौरे के दौरान प्रधानमंत्री ने 10,000वें एफपीओ का उद्घाटन किया था, जिसे बिहार के खगड़िया जिले में मक्का, केला और धान उत्पादन पर केंद्रित किया गया है। बिहार में अब तक 696 एफपीओ का गठन हो चुका है, जिससे 2 लाख से अधिक किसान लाभान्वित हो रहे हैं।

70वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा पर सुनवाई 18 मार्च तक टली

निज संवाददाता | पटना

पटना हाईकोर्ट में 70वीं बीपीएससी सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा को दोबारा कराने को लेकर दायर याचिकाओं पर सुनवाई अब 18 मार्च, 2025 को होगी। इस मामले की सुनवाई एक्टिंग चीफ जस्टिस आशुतोष कुमार की खंडपीठ कर रही है। इससे पहले जस्टिस ए एस चंदेल इस मामले की सुनवाई कर रहे थे, लेकिन अब सभी संबंधित याचिकाओं को एक्टिंग चीफ जस्टिस की खंडपीठ के समक्ष सूचीबद्ध किया गया है। जस्टिस अरविंद कुमार चंदेल ने पहले राज्य सरकार और बीपीएससी को 30 जनवरी, 2025 तक हलफनामा दायर कर स्थिति स्पष्ट करने का निर्देश दिया था। कोर्ट ने स्पष्ट किया था कि आयोग द्वारा घोषित परीक्षा परिणाम इस याचिका के अंतिम निर्णय पर निर्भर करेगा। याचिकाकर्ता पप्पू कुमार और अन्य की ओर से वरीय अधिवक्ता वाई वी गिरी ने कोर्ट को बताया कि 13 दिसंबर, 2024 को आयोजित प्रारंभिक परीक्षा में बड़े पैमाने पर धांधली हुई थी, लेकिन बीपीएससी न तो इस मामले की जांच करा रही है और न ही परीक्षा दोबारा लेने के लिए तैयार है। परीक्षा 912 केंद्रों पर आयोजित हुई थी, लेकिन कई केंद्रों पर परीक्षा के दौरान ही प्रश्नपत्र लीक होने की शिकायतें आई थीं। बाद में आयोग ने 4 जनवरी, 2025 को बापू सभागार, पटना में पुनः परीक्षा कराई, जिसमें शामिल उम्मीदवारों को छह अतिरिक्त अंक दिए गए।

300 कब्रिस्तानों और 54 मंदिरों की इसी साल होगी घेराबंदी

पटना (नि.सं.)। राज्य सरकार इस साल 300 कब्रिस्तानों की घेराबंदी और 54 मंदिरों की चहारदिवारी का निर्माण करेगी। इसके लिए व्यापक कार्ययोजना बनायी गयी है। योजना एवं विकास विभाग ने इन कब्रिस्तानों और मंदिरों की घेराबंदी तथा चहारदिवारी का निर्माण कराने का फैसला किया है। हालांकि इसकी जिम्मेवारी गृह विभाग को सौंपी गयी है। दरअसल, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के निर्देश के बाद विभाग के स्तर पर यह पहल की गयी है। इनकी घेराबंदी 31 मार्च 2026 तक कर लेनी है। इन कब्रिस्तानों और मंदिरों का चयन जिलास्तर पर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में बनी कमेटी की प्राथमिकता सूची के आधार पर किया गया है।

डीटीओ के घर विजिलेंस टीम की छापेमारी

निज संवाददाता | नालंदा

स्पेशल विजिलेंस यूनिट की टीम ने शुक्रवार की सुबह नालंदा जिला के परिवहन अधिकारी अनिल कुमार दास के किराए के मकान पर छापामारी की। जानकारी के अनुसार, विजिलेंस टीम की यह कार्रवाई आय से अधिक संपत्ति मामले से जुड़ी बताई जा रही है। सुबह करीब 6 से 7 बजे के बीच विजिलेंस की दो गाड़ियां बिहारशरीफ स्थित डीटीओ के किराए के फ्लैट पर अचानक पहुंचीं। डीएसपी चंद्र भूषण सिंह के नेतृत्व में छह सदस्यीय टीम ने फ्लैट को अंदर से बंद कर जांच अभियान शुरू किया। फिलहाल डीटीओ अनिल कुमार दास के घर पर छापामारी जारी है। इस वजह से मीडिया को अंदर जाने की अनुमति नहीं दी गई है। विजिलेंस टीम के अधिकारी दस्तावेजों की जांच कर रहे हैं। बता दें, अनिल कुमार दास मूल रूप से जमुई जिले के रहने वाले हैं।

देशभर के 60 ऐसे स्टेशनों पर स्थायी प्रतीक्षा क्षेत्र बनाने का निर्णय

रेलमंत्री की अध्यक्षता में स्टेशनों पर भीड़ नियंत्रण को लेकर एक उच्चस्तरीय बैठक आयोजित

- सभी स्टाफ को नया डिज़ाइन यूनीफॉर्म दी जाएगी ताकि किसी भी आपातकालीन स्थिति में उन्हें आसानी से पहचाना जा सके।

एजेंसी | नई दिल्ली

रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव की अध्यक्षता में रेलवे स्टेशनों पर भीड़ नियंत्रण को लेकर एक उच्चस्तरीय बैठक आयोजित की गई, जिसमें कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। देशभर के 60 प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर स्थायी बाहरी वेटिंग एरिया बनाए जाएंगे ताकि त्योहारों और अन्य व्यस्त समय में यात्रियों की भीड़ को नियंत्रित किया जा सके। यह व्यवस्था पहले प्रयागराज के नौ स्टेशनों पर महाकुंभ के दौरान सफल रही थी। अब इसे नई दिल्ली, आनंद विहार, वाराणसी, अयोध्या और पटना स्टेशनों पर पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू किया जा रहा है। इस योजना के तहत यात्रियों को केवल ट्रेन के प्लेटफॉर्म पर आने के बाद ही प्रवेश दिया जाएगा, जिससे स्टेशन परिसर में भीड़भाड़ कम होगी।

भीड़ नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए इन 60 स्टेशनों पर पूरी तरह से प्रवेश नियंत्रण लागू किया जाएगा। केवल कंफर्म टिकट धारकों को सीधे प्लेटफॉर्म तक जाने की अनुमति होगी, जबकि बिना टिकट या प्रतीक्षा सूची वाले यात्रियों को बाहरी वेटिंग एरिया में रुकना होगा। इसके अलावा, सभी अनधिकृत प्रवेश बिंदु बंद कर दिए जाएंगे। यात्री सुविधाओं में सुधार के लिए चौड़े फुट-ओवर ब्रिज बनाए जाएंगे, जिनकी चौड़ाई 12 मीटर और 6 मीटर होगी। ये फुट-ओवर ब्रिज महाकुंभ जैसे आयोजनों के दौरान भीड़ प्रबंधन में अत्यंत प्रभावी साबित हुए हैं। सुरक्षा और निगरानी को मजबूत करने के लिए सभी स्टेशनों पर उच्च गुणवत्ता वाले कैमरे लगाए जाएंगे। प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर वॉर रूम विकसित किए जाएंगे, जहां किसी भी आपात स्थिति में रेलवे के विभिन्न विभागों के अधिकारी तत्काल निर्णय ले सकेंगे। भीड़ प्रबंधन को और अधिक कुशल बनाने के लिए रेलवे ने अत्याधुनिक डिजिटल संचार उपकरण जैसे वॉकी-टॉकी, अनाउंसमेंट सिस्टम और कॉलिंग सिस्टम लगाने का भी निर्णय लिया है। रेलवे स्टाफ की पहचान और दक्षता बढ़ाने के लिए उन्हें नई डिजाइन की यूनिफॉर्म और आईडी कार्ड प्रदान किए जाएंगे, जिससे वे भीड़ में आसानी से पहचाने जा सकें। इसके अलावा, सभी प्रमुख स्टेशनों पर वरिष्ठ अधिकारियों को स्टेशन निदेशक के रूप में नियुक्त किया जाएगा, जिन्हें वित्तीय अधिकार भी दिए जाएंगे ताकि वे स्टेशन सुधार और संचालन को बेहतर बना सकें। स्टेशन निदेशक को यह अधिकार भी मिलेगा कि वे टिकटों की बिक्री को स्टेशन की क्षमता और उपलब्ध ट्रेनों के अनुसार नियंत्रित कर सकें।

संक्षिप्त समाचार

सीयूएसबी में विकसित भारत युवा संसद महोत्सव

गया। सीयूएसबी को मार्च महीने में विकसित भारत युवा संसद महोत्सव 2025 के आयोजन का दायित्व मिला है। कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह के संरक्षण में इस कार्यक्रम का आयोजन सीयूएसबी के राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक प्रो. बुधेंद्र कुमार सिंह के द्वारा किया जाएगा। बताया गया कि युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित किए जाने वाले इस महोत्सव के तहत चयनित भारत के 300 नोडल जिलों में गया भी नोडल जिला के रूप में चयनित किया गया है। गया के साथ संबद्ध जिलों में जहानाबाद, नवादा और औरंगाबाद भी शामिल है। गया नोडल जिले के कार्यक्रम अध्यक्ष और सीयूएसबी के एनएसएस समन्वयक प्रो. बुधेंद्र ने बताया कि यह कार्यक्रम तीन चरणों (जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर) में आयोजित किया जाएगा। चयनित प्रतिभागियों को नई दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम में संसद भवन में भाग लेने का अवसर मिलेगा । एनएसएस समन्वयक ने बताया कि 18 से 25 वर्ष के हर इच्छुक युवा mybharat.gov.in पर 9 मार्च तक आवेदन कर सकते हैं। पंजीकरण के लिए इच्छुक युवाओं को आपके लिए विकसित भारत का क्या अर्थ है?' विषय पर एक मिनट का वीडियो अपलोड करना अनिवार्य होगा।

सात मार्च को पीएनबी का ऋण मुक्ति शिविर

गया। पंजाब नैशनल बैंक अपने गैर निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) खाता धारकों को राहत प्रदान करने के उद्देश्य से 7 मार्च को गया एवं जहानाबाद जिले की सभी शाखाओं में ऋण मुक्ति शिविर का आयोजन कर रहा है। इस शिविर के माध्यम से ग्राहकों को अपने ऋण भुगतान करने का सुनहरा अवसर मिलेगा, जिससे वे किसी भी सम्भावित कानूनी करवाई से बचकर ऋण मुक्त हो सकते हैं और न्यायिक व्यवधानों से बच सकते हैं। एकमुश्त ऋण निपटान योजना के माध्यम से बैंक अधिक से अधिक छूट देकर ग्राहकों को लाभान्वित करेगा, जिससे ग्राहक कानूनी करवाई से बच सकते हैं एवं वित्तीय स्थिरता प्राप्त कर सकते हैं। पंजाब नैशनल बैंक मंडल कार्यालय में आयोजित यह ऋण मुक्ति शिविर प्रधान कार्यालय के उप महाप्रबंधक श्री प्रफुल्ल कुमार की अध्यक्षता में किया जाएगा। मंडल कार्यालय के मंडल प्रमुख श्री विवेक कुमार सिंह एवं शस्त्रा प्रमुख श्री मनोज कुमार साह भी उपस्थित रहेंगे। वन टाइम सेटलमेंट योजना के लिए इच्छुक ऋणियों को सुविधा प्रदान करने हेतु अन्य शहरों जैसे अग्रणी जिला कार्यालय जहानाबाद, शेरघाटी एवं इमामगंज में भी बैंक के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहेंगे। इच्छुक ऋणी अपने नजदीकी शाखा/ ऋण मुक्ति शिविर में पहुंचकर ओटीएस योजना के तहत रियायती दर पर अपने ऋण का निपटान करें।

चार लोगों की मौत के बाद पीड़ितों से मिले लोजपा नेता

गया। जिले के मोहड़ा प्रखंड के अरई पंचायत के पासवान टोला निवासी श्रीपासवान के पीड़ित परिवार से गुरुवार को लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय सचिव सह झारखंड प्रभारी अरविन्द कुमार सिंह ने मुलाकात की। इस बीच उन्होंने बताया कि श्री पासवान का 22 वर्षीय पुत्र संजीव पासवान ट्रक ड्राइवर था। बुधवार को नवादा में स्थित राजीव नगर में टूटे बिजली प्रवाहित तार की चपेट में आने से उसकी मौत हो गई थी। वहीं सरसु पंचायत के चानपुर निवासी लोहा राजवंशी की पत्नी 32 वर्षीय गौरी देवी, तीन वर्षीय पुत्री अनु कुमारी व एक वर्षीय पुत्र कार्तिक कुमार की भी मौत इसी करंट प्रवाहित तार की चपेट में आने से हो गई थी। लोजपा नेता ने बताया कि यह घटना हृदय विदारक हैं। पीड़ित परिवारों से मिलकर सांत्वना दी, साथ ही दोनों मृतक के परिवारों को 25-25 लाख रुपए देने की मांग बिहार सरकार से की।

कोठी वीयर के निर्माण से सिंचित होंगी 26 गांवों की भूमि

गया। इमामगंज प्रखंड के बीकोपुर पंचायत में मोरहर नदी पर कोठी वीयर के निर्माण और इससे निःसृत पईन का पुनर्स्थापन कार्य 88.1249 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। सिंचाई प्रमंडल, गया इस योजना का क्रियान्वयन करा रहा है। इस योजना से इमामगंज क्षेत्र के लोगों को काफी फायदा मिलेगा। बता दें कि गया जिले में प्रगति यात्रा के दौरान सीएम नीतीश कुमार ने जन कल्याण से जुड़ी अनेकों घोषणाएं की थी, जिसमें यह भी शामिल है। गया जिला पहाड़ी क्षेत्र के साथ सुखाड़ग्रस्त क्षेत्र भी है।

नालंदा में सड़क हादसे में 5 लोगों की मौत

निज संवाददाता। नालंदा

- बाइक सवार तीन युवकों को अज्ञात वाहन ने कुचला, ऑटो और कार की टक्कर में गई 2 की जान

नालंदा में शुक्रवार की रात 2 अलग-अलग थाना क्षेत्र में शादी समारोह में शामिल होने गए पांच लोगों की सड़क हादसे में मौत हो गई। हादसा एकंगरसराय थाना और हरनौत थाना क्षेत्र में हुई है। जिनमें 3 दोस्त और 2 सगे साढ़ू की मौत हो गई। हिलसा थाना क्षेत्र के बाईपास इलाके में बीती रात शादी समारोह में शामिल होने जा रहे एक ही बाइक पर तीन युवकों की अज्ञात वाहन से कुचल कर मौत हो गई। मृतकों में हिलसा थाना क्षेत्र के पारथु गांव निवासी पप्पू प्रसाद के (20) वर्षीय पुत्र रोहित राज राजनंदन बिन्द के (18) वर्षीय पुत्र दिलशांत कुमार एवं योगेश्वर प्रसाद के (23) वर्षीय पुत्र ओमप्रकाश के रूप में की गई है। घटना के संबंध में परिजन ने बताया कि तीनों युवक एक ही बाइक पर सवार होकर गांव से निकली बारात में शामिल होने के लिए पटना के फरीदपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत अरैया गांव जा रहे थे। इसी बीच हिलसा थाना क्षेत्र के बाईपास इलाके में अज्ञात बोलेरो ने टक्कर मार दी। इस हादसे में तीनों युवक की मौके पर ही मौत हो गई। दिलशांत कुमार क्लास 9वीं क्लास में ओम प्रकाश ग्रेजुएशन पार्ट 3 में जबकि रोहित राज ग्रेजुएशन के पार्ट वन में पढ़ाई कर रहा था।

ऑटो और कार की टक्कर में हुई मौतः वहीं, दूसरी तरफ सीएनजी ऑटो और कार के बीच टक्कर हो गई। जिसके बाद दोनों गाड़ियां करीब 30 फीट नीचे गहरी खाई में चली गई। इस हादसे में दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। मामला हरनौत थाना क्षेत्र अंतर्गत गोनावां पुल के समीप की है। मृतकों की पहचान नूरसराय थाना क्षेत्र के मेयार गांव निवासी स्वर्गीय सरयुग पासवान के (58) वर्षीय पुत्र राम प्रवेश पासवान एवं पटना जिला के सकसोहरा थाना क्षेत्र निवासी स्वर्गीय बच्चू पासवान के (50) वर्षीय पुत्र विवेक कुमार के रूप में की गई है। दोनों रिश्ते में साढ़ू लगते हैं।

घटना के बाद मौके से चालक फरारः घटना के संबंध में परिजन ने बताया कि हरनौत थाना क्षेत्र के बलवापर गांव से शादी समारोह में शामिल होकर ऑटो पर सवार होकर दोनों व्यक्ति लौट रहे थे। तभी गोनावां पुल के समीप कार ने टक्कर मार दी। मौके से ऑटो चालक और कार सवार फरार हो गया।

ऑर्केस्ट्रा डांसर बोली- स्टेज पर चढ़कर लोग इधर-उधर छूते

निज संवाददाता। नालंदा

नालंदा में शुक्रवार को ऑर्केस्ट्रा में रेड कर 3 तीन नाबालिग लड़कियों को छुड़वाया गया है। रेस्क्यू की गईं तीनों लड़कियां हिमाचल की रहने वाली हैं। लड़कियों को बहला-फुसलाकर बिहार बुलाया गया था। 2 लड़कियों की उम्र 17 साल और एक की 16 साल है। यहां लड़कियों से ऑर्केस्ट्रा और पार्टियों में डांस करवाया जाता था। कई बार उसके साथ छेड़छाड़ भी की जाती थी। लड़कियां जब घर जाने की बात करती थीं तो उन्हें पैसे चुकाने और नुकसान की भरपाई करने के लिए कहा जाता था। छुड़ाई गईं नाबालिग लड़कियों ने बताया कि, कई बार स्टेज पर चढ़कर लोग इदर-उधर गंदे तरीके से छूते थे। रेस्क्यू की गईं सभी लड़कियों ने घर जाने की इच्छा जताई है। पुलिस ने ऑर्केस्ट्रा संचालक भोजपुर निवासी सन्नी राज को गिरफ्तार किया गया है। कमरे से शराब की बोतल भी बरामद की गई हैं।

डांस के दौरान लोग जहां-तहां छूते थेः 5 महीने पहले मुझे घर से बार में काम करने का कहकर लाया गया था। मुझे 5 महीने से यहां रखा गया था। मैंने ठेकेदार से कहा कि डांस करने के दौरान लोग जहां-तहां छूते भी हैं। कई जगह पर लोग स्टेज पर चढ़ जाते हैं। मुझे घर जाना है, घर में मम्मी और छोटी बहन है। बीच में मैं बीमार पड़ी थी, उन्होंने कहा कि पहले अपने इलाज में खर्च हुए 1 लाख चुका दो, फिर चले जाना।

एक दोस्त के कहने पर यहां चली आई थीः फोन पर मेरी एक लड़की से बात होती थी, उससे दोस्ती हो गई थी। उसने मुझसे कहा कि यहां आ जाओ, अच्छा काम होता है। ज्यादा डांस नहीं करवाते और अच्छी कमाई होती है। जब यहां आई तो ये लोग मालिक मुझे ऑर्केस्ट्रा में डांस करवाने लगा। इसी बीच मेरी मम्मी की डेथ हो गई तो मैंने अपने घर जाने की बात कही।

नालंदा DTO के घर से 1 करोड़ की ज्वेलरी जब्त

निज संवाददाता। नालंदा

स्पेशल विजिलेंस यूनिट (SVU) की टीम ने शुक्रवार सुबह नालंदा DTO के घर पर रेड की है। पटना और नालंदा में टीम की कार्रवाई चल रही है। अब तक 1 करोड़ की ज्वेलरी, डेढ़ करोड़ की प्रॉपर्टी के पेपर, 2 लाख कैश और महंगे जूते मिले हैं। अनिल कुमार दास नालंदा DTO हैं और वह बिहारशरीफ में किराए के मकान में रह रहे हैं। पूरा मामला आय से अधिक संपत्ति से जुड़ा बताया जा रहा है। शुक्रवार सुबह 6 से 7 बजे के बीच ही 2 गाड़ियों से SVU की टीम बिहारशरीफ स्थित DTO अनिल कुमार के किराए के मकान के पास पहुंच गई थी। कुल 6 सदस्यीय टीम रेड को लेकर पहुंची है।

आय से अधिक संपत्ति के मामले में रेडः डीएसपी चंद्र भूषण सिंह के नेतृत्व में यह छापेमारी की जा रही है। पिछले दो घंटे से DTO के फ्लैट को बंद कर कार्रवाई की जा रही है। फिलहाल मीडिया को अंदर जाने की अनुमति नहीं दी गई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अनिल दास के खिलाफ पहले आय से अधिक संपत्ति का केस दर्ज किया गया था। 94 लाख रुपए का मामला बताया जा रहा है। वहीं DTO के दानापुर के गोला रोड स्थित सोनू मार्केट रोड में सुबह 8 बजे के करीब SUV की एक टीम छापेमारी करने पहुंची हैं।

आनंद यालविगी बने क्रिकेट संचालन निदेशक

निज संवाददाता। नालंदा

- बिहार क्रिकेट संघ में मिली नियुक्ति, कर्नाटक-मुंबई की रणजी ट्रॉफी विजेता टीमों का रह चुके हैं हिस्सा

बिहार क्रिकेट के इतिहास में एक नया अध्याय शुरू होने जा रहा है। प्रथम श्रेणी क्रिकेट के अनुभवी खिलाड़ी और कुशल प्रशासक आनंद यालविगी को बिहार क्रिकेट संघ (बीसीए) में क्रिकेट विकास और संचालन निदेशक (डायरेक्टर - गेम डेवलपमेंट एंड क्रिकेट ऑपरेशंस) के महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया गया है। यह निर्णय बीसीए की हाल ही में संपन्न आम सभा की बैठक में लिए गए फैसले के अनुरूप है, जिसमें बिहार में क्रिकेट को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए अनुभवी नेतृत्व की आवश्यकता पर जोर दिया गया था। आनंद यालविगी का क्रिकेट करियर अत्यंत प्रभावशाली रहा है। उन्होंने न केवल भारत की जूनियर टीमों का प्रतिनिधित्व किया है, बल्कि कर्नाटक और मुंबई की रणजी ट्रॉफी विजेता टीमों का भी अहम हिस्सा रहे हैं। खेल के प्रति उनकी गहरी समझ और प्रतिबद्धता के चलते उन्होंने मुंबई की जूनियर और रणजी टीम के चयनकर्ता के रूप में भी सराहनीय कार्य किया है। इस नियुक्ति पर बीसीए के अध्यक्ष राकेश तिवारी ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा की "हमें आनंद यालविगी का बिहार क्रिकेट संघ में क्रिकेट विकास और संचालन निदेशक के रूप में स्वागत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। उनके व्यापक क्रिकेटिंग और खेल प्रबंधन अनुभव के साथ, हमें पूरा विश्वास है कि उनकी नेतृत्व क्षमता और दूरदर्शी दृष्टिकोण बिहार में क्रिकेट के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। हम मिलकर बिहार क्रिकेट को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए तत्पर हैं।

कुशल खेल प्रबंधन विशेषज्ञ भी हैं आनंदः आनंद यालविगी केवल एक प्रतिभाशाली क्रिकेटर ही नहीं, बल्कि एक कुशल खेल प्रबंधन विशेषज्ञ भी हैं। पिछले दो दशकों में उन्होंने क्रिकेट संचालन और खेल प्रबंधन के क्षेत्र में विभिन्न भूमिकाओं में अपनी सेवाएँ दी हैं। अपने समृद्ध करियर में उन्होंने कई प्रतिष्ठित क्रिकेट लीगों और विकास परियोजनाओं का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया है। बीसीए में अपने नए पद पर रहते हुए यालविगी की जिम्मेदारियों में नई नीतियों का निर्माण, क्रिकेट संचालन का सुव्यवस्थीकरण, खेल के बुनियादी ढांचे का प्रबंधन, विश्लेषण और प्रशासनिक समर्थन प्रदान करना शामिल है। इसके अतिरिक्त, वे बीसीसीआई के साथ समन्वय स्थापित कर बिहार क्रिकेट से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर कार्य करेंगे।

पूर्व रेलवे

ई-निविदा सूचना संख्याः ओ-एसी-टी-209-24-25 (ओपन), दिनांकः 04.03.2025। मंडल रेल प्रबंधक, पूर्व रेलवे, आसनसोल, स्टेशन रोड, पिन-713301 द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदा (खुली) आमंत्रित की जाती है: **केस संख्याः ओ-एसी-टी-209-24-25। कार्य का नामः** वरिष्ठ मंडल अभियंता/2/ आसनसोल के अधीन तुलसीटांड़ और लाहाबन के बीच एलएचएस 31 पर पर्याप्त जल निकासी सुविधा के प्रावधान एवं अन्य आनुषंगिक कार्य के लिए खुली निविदा। **निविदा मूल्यः** ₹ 1,40,22,817.74। **बयाना राशिः** ₹ 2,20,100। **कार्य पूरा करने की अवधिः** 06 महीना। **निविदा बंद होने की तारीख एवं समयः** 28.03.2025 को दोपहर 12.00 बजे। सम्पूर्ण विवरण रेलवे की वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर देखा जा सकता है।

(ASN-368/2024-25)

निविदा सूचना वबसाइटः **www.er.indianrailways.gov.in/ www.ireps.gov.in** पर भी उपलब्ध है

हमें यहाँ देखें: @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

मगध प्रमंडल आयुक्त ने किया औचक निरीक्षण

निज संवाददाता। गया

- छात्रावासों की हालत देखकर हुए नाराज, तत्काल प्रभाव पर काम करने का निर्देश

गया में मगध प्रमंडल के आयुक्त प्रेम सिंह मीणा ने डॉ. भीमराव अंबेडकर कल्याण छात्रावास और ज्योतिबा फुले छात्रावास, रामपुर का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान छात्रावासों की बदहाली देखकर वे नाराज हो गए। निरीक्षण के दौरान छात्रावास परिसर में जगह-जगह गंदगी मिली। ईंट-बालू बिखरे हुए थे, जबकि छात्रों के कमरों में मकड़ी के जाले पसरे थे। सबसे गंभीर मामला शौचालयों का निकला, जो पूरी तरह डंप थे। आयुक्त ने इसे गंभीर लापरवाही मानते हुए तत्काल सफाई और मरम्मत कराने के निर्देश दिए। अंबेडकर कल्याण छात्रावास रामपुर-1 का भवन बेहद पुराना है। रंग-रोगन की जरूरत तो थी ही, साथ ही किचन, डाइनिंग हॉल और पुस्तकालय जैसी मूलभूत सुविधाओं का भी अभाव मिला। आयुक्त ने भवन निर्माण विभाग को जल्द से जल्द प्राक्कलन तैयार कर मरम्मत कार्य शुरू करने का आदेश दिया।

साइकिल स्टैंड और ओपन जिम की व्यवस्थाः छात्रावास में छात्रों की साइकिलें इधर-उधर बेतरतीब पड़ी थीं। आयुक्त ने जिला कल्याण पदाधिकारी को शेड बनाकर साइकिल स्टैंड बनाने का निर्देश दिया। वहीं, ओपन जिम की दुर्दशा देखकर वे नाराज हो गए। जमीन उबड़-खाबड़ थी और उपकरण ठीक से नहीं रखे गए थे। इसे तुरंत समतल कराने और व्यवस्थित करने के निर्देश दिए गए। बिजली व्यवस्था की स्थिति भी चिंताजनक मिली। ट्रांसफार्मर पुराना था और बिजली के तार लटक रहे थे, जिससे हादसे की आशंका बनी हुई थी। सोलर लाइटें भी खराब थीं। आयुक्त ने तत्काल सुधार के निर्देश जारी किए। छात्रावास की सफाई व्यवस्था पूरी तरह चरमराई हुई थी। इस लापरवाही पर आयुक्त ने सफाई का काम देख रही आउटसोर्सिंग एजेंसी पर जुर्माना लगाने का आदेश दिया। साथ ही जिला कल्याण पदाधिकारी और छात्रावास समन्वयकों से स्पष्टीकरण मांगा गया है। निरीक्षण के बाद आयुक्त ने साफ कहा कि छात्रों की सुविधाओं में कोई लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

पूर्व रेलवे

ई-निविदा सूचना सं.: ईएलएस/ एसडीएएच/ ओटी/24-018, दिनांकः 03.03.2025। वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता/ईएमयू/ सियालदह, पहली मंज़िल, कंट्रोल बिल्डिंग, सियालदह, पूर्व रेलवे, कोलकाता-700014 द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। **निविदा संख्याः ईएलएस/एसडीएएच/ओटी/24-018। कार्य का नामः** सोनारपुर कारशेड में इपोक्सी फ्लोरिंग का प्रावधान तथा निरीक्षण के अधीन पिट तथा हैवी बे का जीर्णोद्धार। **निविदा मूल्यः** ₹ 42,80,738। **बयाना राशिः** ₹ 85,600। **निविदा दस्तावेज की कीमतः** ₹ शून्य। **पूरा करने की अवधिः** 06 महीना। **बंद होने की तारीख एवं समयः** 07.04.2025 को दोपहर 2.00 बजे। निविदा सूचना एवं समय-समय पर जारी की जाने वाली संशोधनी का विवरण वेबसाइट: **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है।

(SDAH-374/2024-25)

निविदा सूचना वबसाइट:**www.er.indianrailways.gov.in/ www.ireps.gov.in** पर भी उपलब्ध है

हमें यहाँ देखें: @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

पूर्व रेलवे

संक्षिप्त निविदा सूचना संख्याः केपीए-ईआरएस-ओटी-41-24-25, दिनांकः 04.03.2025। उप मुख्य विद्युत अभियंता, पूर्व रेलवे, कांचरापाड़ा वर्कशॉप, कांचरापाड़ा, उत्तर 24 परगना, पिन-743145, पश्चिम बंगाल द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदा आमंत्रित की जाती है: **निविदा संख्याः केपीए-ईआरएस-ओटी-41-24-25। विवरणः** डब्ल्यूएपी-4/डब्ल्यूएजी-7 लोकोमोटिव के लिए कॉपर कॉयल वुंड 5400 केवीए ट्रांसफॉर्मर की पुनर्बहाली । मात्रा : 10 अदद। **निविदा मूल्यः** ₹ 1,86,20,744.70 (जीएसटी एवं अन्य सभी प्रभार सहित)। **निविदा खुलने की तारीख एवं समयः** 27.03.2025 को अपराह्न 3.00 बजे। **पूरा करने की अवधिः** 12 महीना। निविदा दस्तावेज एवं अन्य विवरण वेबसाइट: **www.ireps.gov.in** से प्राप्त किये जा सकते हैं। निविदा हेतु बोलियां उपर्युक्त वेबसाइट पर ई-निविदा के जरिये जमा करनी होंगी। इस निविदा के तहत मैनुअल प्रस्ताव की अनुमति नहीं है तथा कोई भी मैनुअल प्रस्ताव प्राप्त होने पर उसे स्वीकार नहीं किया जायेगा तथा सीधे रद्द कर दिया जायेगा।

(MISC-365/2024-25)

निविदा सूचना वेबसाइट:**www.er.indianrailways.gov.in/ www.ireps.gov.in** पर भी उपलब्ध है

हमें यहाँ देखें: @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

पूर्व रेलवे

मंडल अभियंता (IV), पूर्व रेलवे, हावड़ा, डीआरएम बिल्डिंग, रेलवे स्टेशन के पास, हावड़ा-711101 द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए सिंचाई/सीपीडब्ल्यूडी/एसईबी/एमईएस या किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के पास पंजीकृत समेत समरूप प्रकृति के कार्य का अनुभव एवं आवश्यक वित्तीय क्षमता रखने वाले निविदादाताओं से निम्नलिखित ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं: **[मंडल अभियंता/4/हावड़ा]। ई-निविदा संख्याः 360_2024-25, दिनांकः 04.03.2025। कार्य का विवरणः** (1) एसएसई/डब्ल्यू/ बोलपुर शांतिनिकेतन के अधिकार क्षेत्र के अधीन अहमदपुर, बोलपुर शांतिनिकेतन, भेदिया, गदाधरपुर, प्रान्तिक, बातासपुर एवं नोआदर ढाल स्टेशनों पर प्लेटफॉर्म की ऊंचाई बढ़ाना। (2) सहायक अभियंता/बोलपुर शांतिनिकेतन के अधीन किमी. 70-23 से 70-37ए तक सैंथिया-अंडाल लाइन पर रिटेनिंग वाल सह ड्रेन का निर्माण। (3) एसएसई/डब्ल्यू/ बोलपुर शांतिनिकेतन के खंड में बोलपुर शांतिनिकेतन पर क्वार्टरों की मरम्मत एवं जीर्णोद्धार। **अनुमानित लागतः** ₹ 7,28,10,228.05। **बयाना राशिः** ₹ 5,14,100। **निविदा प्रपत्र की कीमतः** शून्य। **पूरा करने की अवधिः** स्वीकृति पत्र जारी किये जाने की तारीख से 12 (बारह) महीना। निविदा आमंत्रण सूचना में उल्लिखित बंद होने की तारीख को किसी कारणवश छुट्टी/बंद/हड़ताल घोषित होने पर ऑनलाइन निविदा के बंद होने की तारीख में कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा क्योंकि आईआरईपीएस की वेबसाइट में आवेदन निविदा बंद होने की तारीख एवं समय के बाद किसी भी प्रस्ताव को जमा करने की अनुमति नहीं देता है। तथापि, ऑनलाइन निविदा को अगले कार्य दिवस में खोला जाएगा। **निविदा बंद होने की तारीख और समयः** 26.03.2025 को दोपहर 2:00 बजे। निविदा का सम्पूर्ण विवरण वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। निविदादाताओं से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त वेबसाइट पर अपने प्रस्ताव ऑनलाइन जमा करें। ई-निविदा के सम्बन्ध में निविदा दस्तावेज की कीमत एवं जमा बयाना राशि (ईएमडी) का भुगतान उपर्युक्त वेबसाइट के जरिये सिर्फ नेट बैंकिंग या पेमेंट गेटवे के जरिये स्वीकार किया जायेगा। **द्रष्टव्यः** आईआरईपीएस (ई-निविदा पोर्टल) पर आमंत्रित निविदाओं के लिए ईएमडी के रूप में सावधि जमा रसीद (एफडीआर) स्वीकार नहीं की जाएगी। मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

(HWH-649/2024-25)

निविदा सूचना वेबसाइट:**www.er.indianrailways.gov.in/ www.ireps.gov.in** पर भी उपलब्ध है

हमें यहाँ देखें: @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

पूर्व रेलवे

मंडल रेल प्रबंधक, पूर्व रेलवे, हावड़ा, डीआरएम बिल्डिंग, रेलवे स्टेशन के पास, हावड़ा-711101 द्वारा निम्नलिखित कार्यों के लिए सिंचाई/सीपीडब्ल्यूडी/एसईबी/एमईएस या किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के पास पंजीकृत समेत समरूप प्रकृति के कार्य का अनुभव एवं आवश्यक वित्तीय क्षमता रखने वाले निविदादाताओं से ऑनलाइन के जरिये निम्नलिखित ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं: **[वरिष्ठ मंडल अभियंता/3/हावड़ा]। क्रम संख्याः** 1। **ई-निविदा संख्याः 363_2024-25, दिनांकः 06.03.2025। कार्य का विवरणः** सहायक अभियंता/कटवा के अधीन कटवा (4 अदद) में 50000 गैलन की क्षमता के आरसीसी ओ.एच. टैंक द्वारा स्टील ओ .एच. टैंक की बदली। **अनुमानित लागतः** ₹ 6,34,13,006.04। **बयाना राशिः** ₹ 4,67,100। **क्रम संख्याः** 2। **ई-निविदा संख्याः 364_2024-25, दिनांकः 06.03.2025। कार्य का विवरणः** सहायक अभियंता/कटवा के अधीन आजिमगंज में (01 अदद) तथा सलार में (01 अदद) तथा सहायक अभियंता/नबद्वीप धाम के अधीन नबद्वीप धाम में (01 अदद) तथा त्रिबेणी में (01 अदद) पाइप लाइन सहित 50000 गैलन की क्षमता के आरसीसी ओ.एच. टैंक द्वारा स्टील ओ .एच. टैंक की बदली तथा अन्य आनुषंगिक कार्य। **अनुमानित लागतः** ₹ 6,69,54,320.85। **बयाना राशिः** ₹ 4,84,800। **पूरा करने की अवधिः** स्वीकृति पत्र जारी किये जाने की तारीख से 12 (बारह) महीना (क्रम संख्या 1 और 2 प्रत्येक के लिए)। निविदा आमंत्रण सूचना में उल्लिखित बंद होने की तारीख को किसी कारणवश छुट्टी/बंद/हड़ताल घोषित होने पर ऑनलाइन निविदा के बंद होने की तारीख में कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा क्योंकि आईआरईपीएस की वेबसाइट में आवेदन निविदा बंद होने की तारीख एवं समय के बाद किसी भी प्रस्ताव को जमा करने की अनुमति नहीं देता है। तथापि, ऑनलाइन निविदा को अगले कार्य दिवस में खोला जाएगा। **निविदा बंद होने की तारीख और समयः** 27.03.2025 को दोपहर 2:00 बजे (क्रम संख्या 1 और 2 प्रत्येक के लिए)। निविदा का सम्पूर्ण विवरण वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। निविदादाताओं से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त वेबसाइट पर अपने प्रस्ताव ऑनलाइन जमा करें। ईएमडी और टीडीसी का भुगतान- ई-निविदा के सम्बन्ध में निविदा दस्तावेज की कीमत एवं जमा बयाना राशि (ईएमडी) का भुगतान सिर्फ नेट बैंकिंग या पेमेंट गेटवे के जरिये स्वीकार किया जायेगा। **द्रष्टव्यः** आईआरईपीएस (ई-निविदा पोर्टल) पर आमंत्रित निविदाओं के लिए ईएमडी के रूप में सावधि जमा रसीद (एफडीआर) स्वीकार नहीं की जाएगी। मैनुअल प्रस्ताव

(HWH-652/2024-25)

निविदा सूचना वबसाइट:**www.er.indianrailways.gov.in/ www.ireps.gov.in** पर भी उपलब्ध है

हमें यहाँ देखें: @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

पूर्व रेलवे

मंडल अभियंता (IV), पूर्व रेलवे, हावड़ा, डीआरएम बिल्डिंग, रेलवे स्टेशन के पास, हावड़ा-711101 द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए सिंचाई/सीपीडब्ल्यूडी/एसईबी/एमईएस या किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के पास पंजीकृत समेत समरूप प्रकृति के कार्य का अनुभव एवं आवश्यक वित्तीय क्षमता रखने वाले निविदादाताओं से निम्नलिखित ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं: **[मंडल अभियंता/4/हावड़ा]। ई-निविदा संख्याः 365_2024-25, दिनांक : 06.03.2025। कार्य का विवरणः** सहायक अभियंता/रामपुरहाट के अधीन रामपुरहाट (4 अदद) एवं नलहाटी (1 अदद) में पाइपलाइन के साथ 50000 गैलन की क्षमता के आरसीसी ओ.एच. टैंक द्वारा स्टील ओ .एच. टैंक की बदली एवं अन्य आनुषंगिक कार्य। **अनुमानित लागतः** ₹ 7,90,06,905.84। **बयाना राशिः** ₹ 5,45,000। **निविदा प्रपत्र की कीमतः** शून्य। **पूरा करने की अवधिः** स्वीकृति पत्र जारी किये जाने की तारीख से 12 (बारह) महीना। निविदा आमंत्रण सूचना में उल्लिखित बंद होने की तारीख को किसी कारणवश छुट्टी/बंद/हड़ताल घोषित होने पर ऑनलाइन निविदा के बंद होने की तारीख में कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा क्योंकि आईआरईपीएस की वेबसाइट में आवेदन निविदा बंद होने की तारीख एवं समय के बाद किसी भी प्रस्ताव को जमा करने की अनुमति नहीं देता है। तथापि, ऑनलाइन निविदा को अगले कार्य दिवस में खोला जाएगा। **निविदा बंद होने की तारीख और समयः** 28.03.2025 को दोपहर 2:00 बजे। निविदा का सम्पूर्ण विवरण वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। निविदादाताओं से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त वेबसाइट पर अपने प्रस्ताव ऑनलाइन जमा करें। ई-निविदा के सम्बन्ध में निविदा दस्तावेज की कीमत एवं जमा बयाना राशि (ईएमडी) का भुगतान उपर्युक्त वेबसाइट के जरिये सिर्फ नेट बैंकिंग या पेमेंट गेटवे के जरिये स्वीकार किया जायेगा। **द्रष्टव्यः** आईआरईपीएस (ई-निविदा पोर्टल) पर आमंत्रित निविदाओं के लिए ईएमडी के रूप में सावधि जमा रसीद (एफडीआर) स्वीकार नहीं की जाएगी। मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

(HWH-653/2024-25)

निविदा सूचना वबसाइट:**www.er.indianrailways.gov.in/ www.ireps.gov.in** पर भी उपलब्ध है

हमें यहाँ देखें: @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

पूर्व रेलवे

ई-नीलामी सूचना

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, पूर्व रेलवे, मालदा, ऑफिस बिल्डिंग, पो.ऑ.-झलझलिया, जिला-मालदा, पिन-732102 (पश्चिम बंगाल) (नीलामी आयोजित करने वाले अधिकारी) मालदा मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर आउट ऑफ़ होम (ओओएच), रेलवे डिस्प्ले नेटवर्क (डिजिटल) नीति के अधीन विज्ञापन लॉट के लिए **www.ireps.gov.in** पर ई-नीलामी कैटेलॉग आमंत्रित करते हैं: **नीलामी कैटेलॉग संख्या : एडीवीआरटी-2025-04। नीलामी शुरूः** 22.03.2025 को सुबह 11.45 बजे। **मालदा मंडल में आउट ऑफ़ होम (ओओएच) के लिए ई-नीलामी। एसईक्यू. संख्याः** एए/1। **लॉट संख्या/श्रेणीः** एडीवीटी-एमएलडीटी-बीजीपी-ओएच-172-23-1। **स्टेशनः** भागलपुर। **मालदा मंडल में रेल डिस्प्ले नेटवर्क (डिजिटल) के लिए ई-नीलामी। एसईक्यू. संख्याः** एबी/1। **लॉट संख्या/श्रेणीः** एडीवीटी-एमएलडीटी-आरजेएल-ओएसडी-220-25-1। **स्टेशनः** राजमहल। भावी बोलीदाताओं से अनुरोध है कि वे अधिक जानकारी के लिए आईआरईपीएस ई-नीलामी मॉड्यूल देखें।

(MLD-242/2024-25)

निविदा सूचना वेबसाइट:**www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in** पर भी उपलब्ध है

हमें यहाँ देखें: @EasternRailway easternrailwayheadquarter

बिहार समेत देश-दुनिया की ताजा-तरीन खबरों को जानने के लिए लॉगऑन करें : www.sonvarshavani.com

संक्षिप्त समाचार

अनुमंडलीय अस्पताल की बदहाली

रजौली (नवादा) (नि.सं.)। मुख्यालय स्थित अनुमंडलीय अस्पताल अपनी कमियों के कारण शुरुआती दौर से ही सुर्खियों में रही है। बीते चार वर्षों से अस्पताल का नाममात्र जिम्मा बिना वित्तीय प्रभार के डॉ. दिलीप कुमार को बनाया गया है, जिससे अस्पताल के संचालन में काफी परेशानी हो रही है। अस्पताल में चिकित्सकों एवं अन्य स्वास्थ्यकर्मियों के पद खाली पड़े हुए हैं। वहीं अस्पताल में पीकू की सुविधा ठप पड़ी हुई है।इसके बावजूद अनुमंडलीय अस्पताल को कागजों पर ट्रामा सेंटर बनाकर संचालन किया जा रहा है। अस्पताल में बीते दो-तीन माह पूर्व एक गर्भवती महिला का प्रसव करवाया गया, जिससे आसपास के लोगों में काफी उम्मीदें जगी, किंतु उसके बाद स्थिति पूर्ववत ही बनी हुई है। वहीं अस्पताल में बंध्याकरण कराने आई महिलाओं को भी आधारभूत सुविधा नहीं दी जाती है। शुक्रवार को अनुमंडलीय अस्पताल में आसपास के क्षेत्रों के कुल 6 महिलाएं अपने परिजनों के साथ बंध्याकरण कराने पहुंची, जिनका सफल बंध्याकरण डॉ. अनुज कुमार के द्वारा किया गया। वहीं अस्पताल में मौजूद झिरझो गांव से आई कौशल्या देवी अपने मरीज कविता कुमारी, भाईजी भित्ता गांव से आई तेतरी देवी अपने मरीज सरिता कुमारी, बिजवन गांव से आये अजय कुमार अपने मरीज सरिता देवी, भुसडी गांव से आई सुनीता देवी अपने मरीज आरती कुमारी व आशा ललिता देवी अपने मरीज रुक्मिणी देवी एवं अमावां गांव से आई आरती कुमारी अपने मरीज संगीता कुमारी के साथ मौजूद रहीं।परिजनों ने बताया कि अस्पताल प्रबंधन द्वारा बेड पर चादर एवं कम्बल उपलब्ध नहीं कराया गया। वहीं परिजनों ने अपने घरों से गंदे बिस्तर एवं कम्बल को लाकर मरीज को ढांकते नजर आए।बंध्याकरण के बाद अस्पताल में साफ-सफाई का कोई ध्यान नहीं रखा गया, जबकि गंदगी के कारण मरीजों में संक्रमण फैलने के संभावना प्रबल रहती है। अनुमंडलीय अस्पताल में बीते लगभग आठ-दस महीनों से रसोई एवं बेड पर बिछने वाले चादरों की साफ-सफाई का जिम्मा जीविका दीदी को सौंपा गया था। अस्पताल में जीविका दीदियों द्वारा रसोई का संचालन तो किया जा रहा है, किंतु चादरों की साफ-सफाई का काम अबतक शुरू नहीं किया गया है। इस कारणवश अस्पताल में आनेवाले मरीजों को या तो बिना चादर के बेड पर लेटना पड़ता है या तो उन्हें अपने घर से चादर एवं कम्बल आदि लाना पड़ता है। मरीजों के परिजनों ने बताया कि जीविका दीदी के हाथों में साफ-सफाई का जिम्मा गया है, तबसे स्थिति दयनीय है।इससे तो अच्छा अस्पताल प्रबंधन के द्वारा पूर्व में साफ-सुथरे बेड पर चादरों की व्यवस्था की जाती थी। अनुमंडलीय अस्पताल में शुक्रवार को बंध्याकरण के बाद ऑपरेशन थियेटर से महिलाओं को पुरुष स्वास्थ्यकर्मी अपने गोद में उठाकर दूसरे कमरों में पड़े बेड तक ले जाते दिखाई दिए। बंध्याकरण महिलाओं के सुरक्षा को दरकिनार रखकर उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जाना किसी भी स्तर से सही नहीं है। इस दौरान मरीज के ऑपरेशन के टांके तक बुरी तरह से प्रभावित हो सकते हैं। अस्पताल में स्ट्रेचर रहने के बावजूद मरीजों से साथ दुर्व्यवहार किया गया, जिससे परिजन काफी आहत हुए। इस बाबत एसडीओ आदित्य कुमार पीयूष ने कहा कि मरीजों के साथ दुर्व्यवहार कदापि बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। साथ ही उन्होंने कहा कि मामले को संज्ञान में आने के बाद दोषियों के विरुद्ध उचित कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। वहीं प्रभारी डीएस डॉ. दिलीप कुमार को वित्तीय प्रभार के बारे में भी वरीय पदाधिकारी से बातचीत किया जाएगा।

अवैध खनन करने वालों पर चला डंडा

रजौली (नवादा) (नि.सं.)। थाना क्षेत्र के सुदूरवर्ती सवैयाटांड़ पंचायत के टिटहींयाटांड़ में अवैध खनन करने में जुटे एक ट्रैक्टर को कंप्रेशर मशीन के साथ जब्त किया गया है। रेंजर मनोज कुमार ने बताया कि बीते गुरुवार की रात्रि टिटहींयाटांड़ में अवैध माइका खनन की गुप्त सूचना मिली। सूचना के सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई को लेकर वनपाल राजू कुमार शर्मा एवं वनपाल रवि कुमार के साथ वनरक्षी संजीत कुमार और रंजन कुमार के द्वारा छापेमारी की गई। अवैध खनन में जुटे दो-तीन लोग वन कर्मियों को आता देख अंधेरे का फायदा उठाकर भागने में सफल रहे। वहीं खनन में लगे ट्रैक्टर को कंप्रेशर मशीन के साथ जब्त किया गया। इस दौरान कंप्रेशर मशीन का पाइप खनन के लिए जमीन के अंदर घुसाया गया था, जिसे वन कर्मियों ने काटकर जब्त किया। रेंजर ने बताया कि जब्त ट्रैक्टर समेत कंप्रेशर मशीन को वन परिसर में लगाया गया है। वहीं खनन में जुटे रजौली थाना क्षेत्र के टिटहींयाटांड़ गांव निवासी ईश्वर सिंह के पुत्र अशोक कुमार सिंह के विरुद्ध वन अधिनियम के सुसंगत धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है। वहीं अवैध माइका खनन में जुड़े लोगों के विरुद्ध अग्रतर कार्रवाई की जा रही है।

फ्लाई एश डस्ट से बढ़ी परेशानी

रजौली (नवादा)। प्रखंड क्षेत्र के बिहार-झारखंड के सीमावर्ती क्षेत्र दिबौर से लेकर लालू मोड़ तक झारखंड की ओर से आने वाली दर्जनों ट्रकों पर ढोए जाने वाले फ्लाई एश डस्ट से सड़कों पर चलने वाले राहगीर समेत चितरकोली स्थित समेकित जांच चौकी पर तैनात उत्पाद बल काफी परेशान हैं। इस फ्लाई एश डस्ट के कारण लोगों को कई प्रकार के सांसों से संबंधित बीमारियां हो रही है। वहीं सड़क किनारे अवस्थित हरदिया समेत अन्य गांवों के लोग बहुत ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। उत्पाद विभाग के एसआई बब्लू कुमार एवं एएसआई सुधीर कुमार समेत अन्य लोगों ने बताया कि वे लोग प्रतिदिन चौबीसों घंटे झारखंड की ओर से आने वाली प्रत्येक वाहनों की जांच में जुटे रहते हैं। इस दौरान झारखंड की ओर से आने वाली ट्रकों एवं हाइवा पर लोड फ्लाई एश डस्ट सड़कों पर गिरते जाता है, जो बाद में सूखने के बाद हवाओं के साथ वातावरण में फैलकर नाक एवं आंख को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। वहीं परिवहन विभाग में तैनात लोगों ने बताया कि वे ड्यूटी के दौरान उनके शरीर पर फ्लाई एश डस्ट का एक मोटा परत जमा हो जाता है, जिसके कारण उन्हें ड्यूटी के बाद स्नान के साथ-साथ कपड़े भी साफ करने पड़ते हैं। हालांकि स्नान करने के बाद शरीर एवं कपड़े तो साफ हो जाते हैं, किंतु नाक से गए धूलकण के कारण सांस लेने में एवं आंखों में काफी परेशानी हो रही है। वहीं हरदिया निवासी पवन सिंह ने बताया कि उनका घर सड़क के किनारे है एवं उड़ते फ्लाई एश डस्ट के कारण वे अपने घरों के खिड़की एवं दरवाजे को बंद करके रखना पड़ता है। वहीं घर के बाहरी दीवारों पर उजले रंग का मोटा परत जम जाता है, जिसे तीन-चार दिनों के अंतराल पर धोना पड़ता है। फ्लाई एश डस्ट का प्रकोप इतना ज्यादा बढ़ा हुआ है कि बूढ़े-बुजुर्ग समेत अन्य लोग यदि घर के बाहर कुर्सी लगाकर थोड़ी देर बैठ जाए, तो उन्हें खांसी होने लगती है। वहीं ग्रामीणों ने स्थानीय प्रशासन से गुहार लगाई है कि यदि फ्लाई एश डस्ट ढोने वाले वाहनों पर कोई कार्रवाई नहीं की गई,तो लोगों का जीना मुहाल हो जाएगा और लोग नाक, कान और आंख के विभिन्न गंभीर बीमारियों के चपेट में आने से नहीं बच सकते हैं।

बाइक चोरी के दो आरोपी गिरफ्तार

निज संवाददाता | रजौली (नवादा)

अनुमंडल क्षेत्र में बाइक की चोरी की घटनाओं को लेकर एसपी नवादा अभिनव धीमान के निर्देश पर गठित एसआईटी की टीम ने दो बाइक चोर के साथ 6 चोरी के बाइकों को जब्त किया है। एसडीपीओ गुलशन कुमार ने शुक्रवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बताया कि अनुमंडल क्षेत्र में बाइक की चोरी की घटना एवं चोरी की बाइकों का इस्तेमाल अवैध कार्यों में किये जाने की सूचना लगातार मिल रही थी। सूचना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक नवादा के निर्देश पर सिरदला थानाध्यक्ष सह एसआई संजीत राम के नेतृत्व में एक एसआईटी टीम का गठन किया गया, जो बाइकों की चोरी एवं बाइक चोर गिरोह पर काम कर रहा था।बीते दिन गुरुवार को एसआईटी टीम को सूचना मिली कि एक युवक चोरी की मोटरसाइकिल से सिरदला बाजार से बहुआरा गांव जाने वाला है। गुप्त सूचना के आलोक में गुप्तचर एवं पुलिस बल सक्रिय हो गए। इस दौरान सिरदला बाजार से चोरी के एक बाइक के साथ एक युवक को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार युवक की पहचान अमावां के दरियापुर गांव निवासी नवलेश प्रसाद के पुत्र सागर कुमार के रूप में हुई है। गिरफ्तार युवक को थाना लाकर सघन पूछताछ की गई। गिरफ्तार युवक से पूछताछ एवं अन्य सूचनाओं के सत्यापन के बाद एक अन्य अभियुक्त गया जिले के फतेहपुर थाना क्षेत्र के छोटकी नगमा गांव निवासी राजेंद्र चौधरी के पुत्र संतोष चौधरी को गिरफ्तार किया गया। एसडीपीओ ने बताया कि गिरफ्तार बाइक चोरों के निशानदेही पर पांच अन्य चोरी के बाइकों को बरामद किया गया है। वहीं अंतरजिला बाइक चोर गिरोह के अन्य सदस्यों के गिरफ्तारी को लेकर एसआईटी टीम अग्रतर कार्रवाई में जुटी है। फिलहाल सिरदला पुलिस द्वारा की गई कार्रवाई सराहनीय है। एसडीपीओ ने कहा कि दोनों गिरफ्तार अभियुक्त को स्वास्थ्य जांच के बाद न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है।

होली पर्व में हुड़दंग मचाने वाले का खैर नहीं

निज संवाददाता | नारदीगंज (नवादा)

थाना परिसर नारदीगंज में होली पर्व को शांतिपूर्ण तरीके से मनाने को लेकर शुक्रवार को शांति समिति की बैठक की गई। इंस्पेक्टर धीरेन्द्र कुमार सिंह, बीडीओ रंजीत कुमार, सीओ मो. रईस आलम, थानाध्यक्ष प्रभा कुमारी समेत अन्य शामिल रहे। अधिकारियों ने कहा शराब का सेवन करने वालों व शराब का धंधा करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। पर्व में आम लोगों से सहयोग करने की बात कही। थानाध्यक्ष व सीओ ने संयुक्त रूप से कहा होली महान पर्व है। इसमें लोग एक दूसरे को रंग व गुलाल का प्रयोग कर के खुशी मानते हैं। उन्होंने कहा कि कोई भी शराब का सेवन या धंधा करते पकड़ा गया तो जेल भेज दिया जाएगा। शांति व्यवस्था बनाने के लिए पूर्ण व्यवस्था की गई है। किसी प्रकार की कहीं कोई गलत घटना या अपराध नहीं हो। इसके लिए पुलिस प्रशासन मुस्तैद रहेगी। बैठक में मुखिया झमन मांझी, प्रदीप सिंह, अर्जुन यादव, धनंजय कुमार, संजय यादव, प्रदीप यादव, गुड्डू सिंह, विनय साव, राजू सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित थे।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर पूर्व मध्य रेल ने महिला कर्मचारियों को किया सम्मानित

निज संवाददाता | हाजीपुर (वैशाली)

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में पूर्व मध्य रेल द्वारा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मुख्यालय मुख्यालय, हाजीपुर स्थित वैशाली रेल प्रेक्षागृह में महिला रेलकर्मियों के लिए सम्मान में एक समारोह का आयोजन किया गया। महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह तथा पूर्व मध्य रेल महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा सुनिता सिंह ने समारोह का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर पूर्व मध्य रेल महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा द्वारा पांचों मंडलों एवं मुख्यालय के रेलकर्मियों के उच्च तकनीकी/व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर रहीं 446 चयनित पुत्रियों को कर्मचारी कल्याण निधि से छात्रवृत्ति के रूप में 80.30 लाख रुपए की राशि वितरित की गयी। इस अवसर पर महाप्रबंधक महोदय ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामानएं देते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस ''आधी आबादी'' के संघर्षों को याद करने का भी दिन है जिसके कारण आज महिलाएं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यथा-सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक में सफल हुई है। उन्होंने कहा कि भारतीय रेल में आज लगभग एक लाख महिलाएं कार्यरत हैं जिनमें लगभग 5000 महिलाएं पूर्व मध्य रेल में अधिकारी, डॉक्टर, पारा मेडिकल स्टाफ, लोको पायलट, स्टेशन मास्टर, इंजीनियर, गार्ड, ट्रैक मेंटेनर, जैसे महत्वपूर्ण एवं संरक्षा से जुड़े पदों पर कार्य करते हुए रेल और देश के विकास में योगदान दे रहीं हैं। पूर्व मध्य रेल महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा सुनिता सिंह ने कहा कि प्रत्येक वर्ष महिलाओं की उपलब्धियों एवं लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमलोग अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को उत्सव के तौर पर मनाते हैं। आज देश हीं नहीं, विश्व पटल पर महिलाओं के नेतृत्व की सराहना सर्वत्र हो रही है। जहां देश का नेतृत्व महिला के रूप में माननीया राष्ट्रपति द्रौपदी मूर्मू के हाथों में है वहीं, भारतीय रेल भी इसमें पीछे नही है क्योंकि लगभग एक लाख महिलाएं भारतीय रेल को प्रगति के पथपर अग्रसर करने में अपना योगदान दे रहीं हैं। महिला दिवस के अवसर पर आज पूर्व मध्य रेल मुख्यालय में महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा सुनिता सिंह के नेतृत्व में महिला रेल कर्मचारियों के स्वास्थ्य जांच के लिए हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया गया।

पुरानी पेंशन बहाल को लेकर तीन दिवसीय अनशन को माले विधान पार्षद ने दिया समर्थन

माले विधान पार्षद कॉमरेड शशि यादव ने सम्बोधित करते हुए पुरानी पेंशन बहाली की मांग

निज सवांददाता | पटना

एनपीएस -यूपीएस रद्द करो -पुरानी पेंशन बहाल करो ' की मांग को लेकर एनएमओपीएस, बिहार का तीन दिवसीय क्रमिक अनशन आज सम्पन्न हुआ। तीसरे दिन क्रमिक अनशन सह धरना प्रदेश संरक्षक प्रेमचंद कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में शुरू हुई जिसका संचालन एनएमओपीएस के प्रदेश महासचिव शशिभूषण कुमार ने से किया। क्रमिक अनशन सह धरना को माले विधान पार्षद कॉ0 शशि यादव ने सम्बोधित करते हुए राज्य सरकार से पुरानी पेंशन बहाली की मांग की एवं इस मांग की पूर्ति के लिए महागठबंधन की कल हुई बैठक में बातचीत हुई है। इस क्रमिक अनशन सह धरना को संबोधित करते हुए एनएमओपीएस जिला अध्यक्ष अजय कुमार ने कहा जल्द से जल्द एनपीएस को रद्द किया जाए एवं पुरानी पेंशन ओपीएस को रद्द किया जाये। क्रमिक अनशन को नेशनल मूवमेंट फॉर सेव रेलवे के राष्ट्रीय प्रचार सचिव डॉक्टर कमल ने कहा कि हम लोग पुरानी पेंशन बहाली की लड़ाई दिल्ली से लेकर पटना तक लड़ रहे हैं और कई राज्यों में पुरानी पेंशन बहाल भी करवाया है एवं पुरानी पेंशन बहाली होने तक संघर्ष जारी रहेगा। एआईसीसीटीयू के राष्ट्रीय सचिव रणविजय कुमार ने कहा कि एक देश एक चुनाव की बात करने वाले एक देश -एक पेंशन की बात क्यों नहीं करते हैं जब पडोसी राज्य झारखण्ड में ओपीएस लागू हो सकता है तो बिहार में क्यों नहीं, नीतीश मोदी सरकार को इसका जवाब देना होगा। रामबली प्रसाद सम्मानित अध्यक्ष, महासंघ गोप गुट ने मांग किया की बुढ़ापे का सहारा पुरानी पेंशन बहाल करने की घोषणा करे अन्यथा आने वाले चुनाव में वोट फोर ओपीएस का अभियान पूरे राज्य में चलाना होगा तभी हमारा अधिकार हासिल होगा। क्रमिक अनशन को सम्बोधित करते हुए अमन कुमार, बीपीएससी अभ्यर्थी संघ के नेता ने आह्वान किया कि हमसब को मिलकर लोकतान्त्रिक तरीके से आंदोलन कर रहे लोगों की बात नहीं मानने वाली भ्रष्टाचार में लिप्त सरकार को विदा कर लोकतंत्र में विश्वास रखने वाले लोगों को सत्ता में लाने की जरूरत पर बल दिया। सभी साथियों से केंद्र सरकार द्वारा घोषित यूपीएस के विरोध में 01 अप्रैल को काला दिवस मनाने तथा 01 मई को दिल्ली के जंतर - मंतर पर धरना देने का अपील करते हुए क्रमिक अनशन समाप्त किया गया। एनएमओपीएस द्वारा आयोजित क्रमिक अनशन को संबोधित करने वाले प्रमुख नेताओं में प्रदेश अध्यक्ष वरुण पाण्डेय, अमृतेश कुमार, सहकारिता प्रसार पदाधिकारी संघ, उमेश कुमार सुमन, महासचिव, जनसेवक संघ, जिला अध्यक्ष ब्रजेश कुमार, भागलपुर, जिला अध्यक्ष, कैमूर विद्यासागर प्रभाकर जी, जिला अध्यक्ष विपिन कुमार,अरवल, नागेंद्र सिंह महासचिव, प्राथमिक शिक्षक संघ गोप गुट, कौशिक कुमार, राजेश भगत, राजीव अखौरी, चिकित्सा संघ गोप गुट, नवल किशोर सिंह, श्रीमन्नारायण शर्मा, सुनील गुप्ता, सोनू कुमार, ब्रजराज चौधरी, भागलपुर, कंचन मिश्रा, समस्तीपुर सहित दर्जनों लोगों ने सम्बोधित किया।

सांसद ने जेनेरिक दवाइयों के प्रयोग पर दिया बल

निज संवाददाता | वारिसलीगंज (नवादा)

नगर परिषद क्षेत्र स्थित जन औषधि केंद्र पर आयोजित जन औषधि दिवस समारोह को संबोधित करते हुए नवादा सांसद विवेक ठाकुर ने कहा की देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा देश में करीब 15 हजार जन औषधि केंद्र खोले गए हैं जहाँ 12सौ तरह की दवाइयां उपलब्ध कराई गयी है जो अन्य कम्पनीयों के द्वारा बाजार में बेचीं जा रही महंगी दवाइयों की अपेक्षा काफ़ी सस्ती और कारगर है। उन्होंने कहा की वर्तमान समय में लोगों को दवाइयों के लिये काफ़ी परेशानियों का सामना करना पड़ता है जिले के वारिसलीगंज में एक मात्र जन औषधि केंद्र है जहां सस्ती दवाइयां उपलब्ध है। उन्होंने लोगों को जन औषधि केंद्र से जुड़ने एवं इसके प्रचार प्रसार कर ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को जागरूक करने पर बल दिया। उन्होंने कहा की भविष्य में नवादा जिले के विभिन्न प्रखंडों में भी जन औषधि केंद्र खोले जाने हैं। उन्होंने केंद्र सरकार की उपलब्धियों पर भी चर्चा करते हुए कहा की केंद्र सरकार गरीबों के लिये कई योजनाएं चला रही है। सांसद के वारिसलीगंज पहुंचने पर जदयू के कार्यकर्ताओं ने हॉस्पिटल के निकट जोरदार स्वागत किया। मौके पर क्षेत्रीय विधायक अरुणा देवी एवं अपसढ़ पंचायत के मुखिया राजकुमार सिंह, भाजपा नेता शैलेन्द्र सिंह, भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष, जदयू प्रखंड अध्यक्ष अजय राय, नगर अध्यक्ष रणविजय कुमार, महासचिव सह नगर परिषद के उप मुख्य पार्षद अरुण कुमार, विजय राय, भाजपा नेता मुकेश दिनकर सहित दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद थे।

9 मार्च को प्रतिभा सम्मान समारोह के साथ धूम-धाम से मनाया जायेगा वसंतोत्सव

निज संवाददाता | नवादा

कुशवाहा सेवा समिति नवादा के तत्वाधान में 9 मार्च को नगर के मिर्जापुर रोड स्थित मौर्य नगर के निर्माणाधीन कुशवाहा छात्रावास में प्रतिभा सम्मान समारोह सह वसंतोत्सव कार्यक्रम धूम धाम से मनाया जायेगा। जानकारी देतें हुए समिति के अध्यक्ष महेशवर प्रसाद ने बताया की समिति के द्वारा प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन किया गया था जिसमें नीट, इंजिन्यरिंग, यूपीएससी /बीपीएस सी एवं समान्य प्रतियोगिता परीक्षा के तर्ज पर परीक्षा का आयोजन किया गया था जिसमें हजारों की संख्या में परीक्षार्थियों ने भाग लिया था। परीक्षा में सफल छात्रों में प्रथम तीन छात्रों को देश के नामचीन कोचिंग संस्थानों में रिच माइंड डिजिटल कम्पनी के निदेशक निशिकांत सिन्हा के द्वारा नामांकन कराया जायेगा वहीं अन्य सफल छात्रों को समिति के सदस्यों के आर्थिक सहयोग से टैब, लैपटॉप, मोबाइल एवं डायरी तथा प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया जायेगा। समारोह के सफल आयोजन को लेकर जोर शोर से तैयारी की जा रही है।

जो कर्म आप कर रहे हैं जिसका वेद में चर्चा नही है वह अधर्म है : स्वामी प्रभंजनानन्द

निज संवाददाता | नरहट (नवादा)

जो कर्म आप कर रहे हैं जिसका वेद में चर्चा नही है वह अधर्म है। पूजा प्रद्धति वही करो जो परम्परा से चली आ रही है। उक्त बातें बनिया बदलपुर दुर्गा मंडप के मैदान में आयोजित श्री सीता राम महायज्ञ में प्रवचन के दौरान स्वामी प्रभंजनानन्द जी महाराज ने कही। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म के साथ छेड़ छाड़ किया गया है। आज जो बली प्रथा है। लोग दुर्गा जी देवी जी के पास बली दे रहे हैं। बली प्रथा हमारे यहां नही है। मां सब के लिए है। मां के लिए सब बराबर है। क्या मनुष्य ही उसकी सन्तान है। नही, उसकी संतान तो चराचर जीव है। क्या बकरा उसकी संतान नही है। हमारे धर्म में हिंसा की परंपरा नही है। मुगलकाल में हमारे शास्त्रों के साथ छेड़छाड़ की गई है। मुगलों ने हमारे मंदिरों को तोड़ा। हिंदू से मुसलमान बना दिया। जगहों का नाम बदल दिया। हमारे धर्म ग्रन्थ में गंगा लिखा है, सरस्वती लिखा है। प्रयागराज, अयोध्या लिखा है। कहाँ तुम्हारे धर्म ग्रन्थों में लिखा हुआ है। नालन्दा विश्वविद्यालय को जला कर रख दिया। औरंगजेब ने हिदुओं के ऊपर बहुत अत्याचार किया। महाराज शिवाजी के साथ कितना बर्बरता किया। कितनों के साथ ऐसी बर्बरता किया है। गंगा यमुना तहजीब क्या है। गंगा भी हमारा और यमुना भी हमारा है। क्या है गंगा यमुना तहजीब। बाम पंथी विचार धरा वाले हमारे धर्म धर्म को तोड़ मरोड़ कर दिखाया है। स्वामी जी ने भगवान श्री राम की कथा सुनाते हुए बताया कि भगवान श्री राम अंतिम व्यक्ति तक पहुच कर उन्हें गले से लगते हैं, चाहे केवट, निषाद, कोल भील, सबरी हो चाहे पशु पक्षि सब को ह्रदय से लगते हैं।

होली एवं रमजान को लेकर एसडीओ एवं एसडीपीओ ने थाना परिसर में किया शांति समिति की बैठक

निज संवाददाता | रजौली

थाना परिसर में शुक्रवार को होली एवं रमजान को लेकर एसडीओ आदित्य कुमार पीयूष एवं एसडीपीओ गुलशन कुमार ने संयुक्त रूप से शांति समिति की बैठक की।इस दौरान प्रभारी बीडीओ सह सीओ मो. गुफरान मजहरी, थानाध्यक्ष सह इंस्पेक्टर राजेश कुमार एवं महिला डेस्क प्रभारी एसआई पिंकी कुमारी के अलावे विभिन्न पंचायतों के मुखिया व सरपंच के अलावे दर्जनों समाजसेवी मौजूद रहे। एसडीओ ने बैठक में उपस्थित जनप्रतिनिधियों एवं समाजसेवियों से अपील किया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी होली एवं रमजान आपसी सौहार्द एवं शांतिपूर्वक मनाएं। इस दौरान डीजे पर पूर्णतः प्रतिबंध रहेगा। वहीं होलिका दहन में विशेष सावधानियां बरतने की जरूरत है, क्योंकि बहुत सारे जगहों पर जलते हुए लुहाठी को फेंकने की परम्परा है और इस दौरान किसी के घर, खेत अथवा धार्मिक स्थल को आहत न पहुंचे इसका ध्यान रखना है। साथ ही होलिका दहन में लकड़ी इक्कठा करने के दौरान बिना अनुमति के किसी के निजी संपति को नुकसान नहीं पहुंचाना है। होली रंगों का त्यौहार है और इसे बिल्कुल शांतिपूर्ण मनाना है। बिहार में पूर्ण शराबबंदी है, इसलिए शराब के सेवन आदि से बचना है। वहीं एसडीपीओ गुलशन कुमार ने लोगों से अपील किया कि शांतिपूर्ण त्यौहार मनाने के लिए पुलिस आपका सहयोग करेगी। वहीं होली में हुड़दंगियों पर पुलिस की पैनी नजर रहेगी। क्षेत्र में कहीं भी विधि व्यवस्था बिगड़ती नजर आए, तो पुलिस व प्रशासन को जरूर सूचित करें। वहीं सोशल मीडिया पर फैल रहे अफवाहों से बचने एवं गलत पोस्ट को शेयर नहीं करने को कहा गया है। इस दौरान थाने में मौजूद चौकीदारों से उनके क्षेत्रों में शराब संबंधित गतिविधियों की जानकारी ली गई। वहीं बैठक में मौजूद लोगों से भी उनके क्षेत्रों की जानकारियां ली गई एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

प्राथमिक कृषि साख सहयोग समिति लिमिटेड, खरांठ
प्रखंड -नवादा सदर, जिला -नवादा (बिहार)
निबंधन संख्या 18/नवादा दिनांक 17.10.2008

सूचना

खरांठ प्राथमिक कृषि सहयोग समिति लिमिटेड में आदर्श सेवा नियमावली के तहत एक प्रबंधक की नियुक्ति की जानी है। इच्छुक उम्मीदवार आगामी 22 मार्च 2025 तक पैक्स कार्यालय खरांठ में आकर सम्पर्क कर सकते हैं।

निवेदक
सत्येंद्र सिंह प्रबंध समिति प्राथमिक कृषि साख सहयोग समिति लिमिटेड, खरांठ, नवादा

दहेज लोभीयों की भेंट चढ़ी तनु

निज संवाददाता | नवादा

जिले के अकबरपुर थाना क्षेत्र के बकसंडा गांव के देवेंद्र सिंह ने जमुई थाने में अपनी बेटी की हत्या का आरोप ससुराल वालों पर लगाकर न्याय की गुहार लगाई है। मृतका के पिता ने बताया कि पिंकी देवी पति द्रवेश सिंह ग्राम बकसंडा थाना अकबरपुर जिला नवादा का स्थायी निवासी हूं। मेरी पुत्री तनु कुमारी का विवाह प्रिंस कुमार पिता विद्याभूषण सिंह ग्राम बनार थाना चंद्रदीप जिला जमुई से 23 दिसंबर 2023 को हुई थी। शादी के पूर्व अपने औकात से अधिक लड़के पक्ष के मांग के अनुरूप 20 लाख (90 ग्राम) सोने का आभूषण दिया था। 6 महीने बाद मारपीट व किया प्रताड़ित करने का दौर हुआ आरंभः- उन्होंने बताया कि शादी के छह महीने बाद ससुराल वालों ने पुत्री के साथ मारपीट एवं प्रताड़ित करने का सिलसिला आरंभ कर दिया। सूचना मिली तो लड़के पक्ष के सदस्यों ने बताया कि रांची में जमीन खरीदना है जिसके लिए हमें और पांच लाख रुपए चाहिए। लड़के के पिता विद्याभूषण सिंह से बात किया और अपने स्थिति एवं परिस्थिति से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि हमारी औकात नहीं है। जिस पर प्रिंस कुमार उसी समय घर से गुस्सा होकर जाने लगे। तब मैं अपने सगा संबंधी से तत्काल 50 हजार रुपए कर्ज लेकर उन्हें नगद दिया। प्रिंस कुमार, सास सुनीता देवी, ससुर विद्याभूषण सिंह, देवर मनीष कुमार और नीतीश कुमार दोनों बनार थाना चंद्रदीप जिला जमुई ने गला दबाकर हत्या कर दिया। जिसकी सूचना सूचना थाना को दिया जिस पर थाना कानूनी कार्रवाई करते हुए शव को अपने कब्जे में लेकर तुरंत पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पिता ने न्याय की गुहार लगाते हुए कहा कि इन सभी पांचों आरोपियों को थाना चंद्रदीप जिला जमुई पर कानूनी कार्रवाई करने की गुहार लगायी है।

संक्षिप्त समाचार

31 तक कार्डधारियों की ई-केवाईसी करें सुनिश्चित

आरा| जिलाधिकारी तनय सुल्तानिया के अध्यक्षता में गुरुवार को कार्यालय प्रकोष्ठ में जन वितरण प्रणाली से संबंधित समीक्षात्मक बैठक की गई। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने ई-केवाईसी और राशन कार्डधारियों के आधार सीडिंग की अद्यतन स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने सभी प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारियों को 31 मार्च तक सभी राशन कार्डधारियों का ई-केवाईसी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। इसके साथ ही जिन राशन कार्डधारियों का आधार सीडिंग पूर्ण नहीं हुआ है, उनके आधार सीडिंग कार्य को तत्काल पूरा करने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने जिला आपूर्ति पदाधिकारी को इसका सतत अनुश्रवण करने का निर्देश भी दिया। इस मौके पर अपर समाहर्ता, जिला आपूर्ति पदाधिकारी, जिला सहकारिता पदाधिकारी, जिला कृषि पदाधिकारी, अनुमंडल पदाधिकारी (आरा, जगदीशपुर, पीरो), जिला प्रबंधक (राज्य खाद्य निगम) और प्रबंध निदेशक (सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक) समेत अन्य अफसर मौजूद रहे।

नल- जल व आवास योजना के क्रियान्वयन की जांच

आरा| पीएम आवास योजना, शौचालय निर्माण व हर घर नल का जल योजना के सही तरीके से क्रियान्वयन को लेकर डीएम ने विशेष दिशा-निर्देश दिए है। जिलाधिकारी तनय सुलतानिया के निर्देशानुसार प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत प्रतीक्षा सूची से छूटे हुए योग्य लाभार्थियों को आवास उपलब्ध कराने के लिए आवास प्लस एप के द्वारा जिले के सभी प्रखंडों की पंचायतों में आवास सर्वेयर द्वारा सर्वेक्षण कराया जा रहा है। साथ ही जिले के महादलित टोलों में आईएचएचएल गैप परिवारों को शौचालय निर्माण के लिए प्रेरित किया जा रहा है, ताकि स्वच्छता और स्वास्थ्य को बढ़ावा दिया जा सके। जिलाधिकारी के निर्देशानुसार जिला, अनुमंडल व प्रखंड स्तरीय पदाधिकारियों द्वारा विभिन्न प्रखंडों के 165 पंचायतों के महादलित टोलों में विभागीय एप के द्वारा हर घर नल का जल योजना व आवास योजना की अद्यतन स्थिति व क्रियान्वयन की जांच की गयी। साथ ही आम लोगों से फीडबैक भी लिया गया।

श्रम मंत्री ने कार्यकर्ताओं के साथ किया विमर्श

आरा|बिहार सरकार के श्रम संसाधन विभाग मंत्री संतोष कुमार सिंह गुरुवार को एक दिवसीय दौरे पर आरा पहुंचे। इस क्रम में जिला अतिथि गृह में कार्यकर्ताओं और अधिकारियों ने उनका स्वागत किया। मंत्री ने एनडीए कार्यकर्ताओं और श्रम संसाधन विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की। इस दौरान भाजपा के जिलाध्यक्ष दुर्गा राज, विजय सिंह, धीरेंद्र सिंह, शशि चौधरी, राकेश रंजन पुतुल मुकुल सिंह, और संतोष चंद्रवंशी समेत कई नेता उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने किया वेयरहाउस का निरीक्षण

आरा| जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी तनय सुल्तानिया ने गुरुवार को ब्लॉक रोड, आरा स्थित ईवीएम/ भीभीपीएटी वेयरहाउस का त्रैमासिक आंतरिक निरीक्षण मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के जिलाध्यक्षों व सचिवों की उपस्थिति में किया। निरीक्षण के दौरान वेयरहाउस की सुरक्षा में तैनात पुलिस अधिकारियों और सुरक्षा बलों को सुरक्षा मानकों का पूर्ण तौर से पालन करने के निर्देश दिए गए। साथ ही भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी ईवीएम/ भीभीपीएटी मैनुअल के अनुसार ईवीएम/ भीभीपीएटी के भंडारण, रखरखाव और सुरक्षा से संबंधित सभी निर्देशों का पालन सुनिश्चित करने के लिए जिलाधिकारी ने वेयरहाउस के प्रभारी पदाधिकारी व प्रभारी पुलिस पदाधिकारी को आवश्यक निर्देश दिए। इस निरीक्षण के दौरान अपर पुलिस अधीक्षक, उप निर्वाचन पदाधिकारी, कार्यपालक अभियंता, भवन प्रमंडल व प्रभारी पदाधिकारी, अग्निशमन भी मौजूद रहे।

खड़ाव उपकेंद्र पर 110 लोगों की हुई स्वास्थ्य जांच

आरा| राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालय,भोजपुर में द्वितीय वर्ष के छात्रों ने 5 मार्च 2025 को प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए फ्रेशर पार्टी आयोजित की। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. सीबी महतो, डीन डॉ. पंकज कुमार श्रीवास्तव और विभागाध्यक्षा डॉ. मनीषा कुमारी ने दीप प्रज्वलित कर किया। अन्य सहायक प्राध्यापक भी मौजूद रहे। प्राचार्य ने नए छात्रों का स्वागत किया। आगे की पढ़ाई के लिए मार्गदर्शन दिया। विभिन्न रोचक चयन प्रक्रियाओं के बाद मिस्टर फ्रेशर सत्यम पार्थ और मिस फ्रेशर श्वेता चुने गए। कार्यक्रम का संचालन द्वितीय वर्ष के छात्र वरुण कुमार और आलिया नाज़ ने किया।

लोगों के लिए चालू हुआ बिहार घाट पर बनाया गया पीपा पुल

ब्रह्मपुर| प्रखण्ड के नैनीजोर बिहार घाट गंगा नदी पर निर्मित पीपापुल का उद्घाटन भाजपा के वरिष्ठ नेता बजरंगी तिवारी ने फीता काट कर किया। इसके साथ ही बिहार से उत्तर प्रदेश के लिए दो पहिया से लेकर चार पहिया वाहनों को आवागमन के लिए हरी झंडी दे दी गई।अब बिहार के बक्सर एवं भोजपुर जिले सहित अन्य जिलों के व्यवसायिक वर्गों, स्कूलों एवं कालेजों में पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों एवं चिकित्सा संबंधी कई अति आवश्यक कार्यों को आसानी से उत्तर प्रदेश के बलिया सहित अन्य जगहों पर समय के बचत के साथ कम खर्च में कम दुरी तय कर पहुंच सकते हैं। नैनीजोर के गंगा नदी पार दियारा क्षेत्र के खेतों में खेती करने वाले हजारों किसानों को भी फसल कटाई के लिए आने जाने में काफी राहत मिलेगी। बताते चलें कि नैनीजोर गंगा नदी बिहार घाट पर निर्मित पीपापुल का उद्घाटन भाजपा के वरिष्ठ नेता बजरंगी तिवारी के द्वारा फीता काट प्रसाद वितरण कर वाहनों हरी झंडी के साथ परिचालन शुरू हो गया है। उक्त पीपापुल के रास्ते अब उत्तर प्रदेश के बलिया सहित अन्य शहरों से लेकर छपरा सिवान के विभिन्न शहरों तक कम दुरी तय करने के साथ साथ कम समय एवं कम खर्च के साथ आवागमन यातायात सुविधा आसानी के साथ लोग कर सकते हैं। वहीं किसान भी अब गंगा नदी पार अपने खेतों में कृषि कार्य के लिए आसानी से आना जाना करना प्रारंभ कर दी है।

बक्सर में महिला दिवस और ब्रह्मपुर महोत्सव की तैयारी

बक्सर। बक्सर में दो महत्वपूर्ण कार्यक्रमों की तैयारियां जोरों पर हैं। बता दें कि नगर भवन में 8 मार्च 2025 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाएगा। इस कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली महिलाओं को सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम में शिक्षा, खेल, कला, विज्ञान, समाजसेवा, चिकित्सा, प्रशासन और उद्यमिता क्षेत्र की प्रतिभाएं शामिल होंगी। विशेषज्ञ महिलाएं व्याख्यान देंगी। महिला सशक्तिकरण पर विशेष चर्चा होगी। बता दें कि ब्रह्मपुर महोत्सव अब 11 मार्च 2025 को आयोजित किया जाएगा। प्रशासनिक बैठक में यह निर्णय लिया गया। महोत्सव में लोक नृत्य, नृत्य नाटिका, लोक संगीत और गजल प्रस्तुतियां होंगी। स्थानीय कला और संस्कृति को बढ़ावा दिया जाएगा।

सुरक्षा के विशेष इंतजाम: जिला प्रशासन ने दोनों कार्यक्रमों की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर विशेष इंतजाम किए हैं। कार्यक्रम स्थल पर फर्स्ट एड, एंबुलेंस और चिकित्सकों की टीम तैनात रहेगी। अग्निशमन दल भी मौजूद रहेगा। आपात स्थिति से निपटने के लिए फायर टेंडर तैयार रहेंगे। बक्सर जिला प्रशासन ने जिलेवासियों से इन दोनों महत्वपूर्ण आयोजनों में बढ़-चढ़कर भाग लेने और इसे सफल बनाने की अपील की है। महिलाओं को सम्मानित करने और स्थानीय संस्कृति को सहेजने के इस प्रयास को जनसहयोग से और अधिक भव्य बनाया जा सकता है।

बक्सर में बंद घर से 5 लाख की चोरी

बक्सर। बक्सर के राजपुर थाना क्षेत्र के कोनौली गांव में चोरों ने एक परिवार की गैरमौजूदगी का फायदा उठाते हुए बड़ी वारदात को अंजाम दिया। जहां पीड़ित व्यक्ति की पहचान सूरेमन सिंह के रूप में हुई है, बताया गया कि उनके घर से चोरों ने करीब 5 लाख रुपए की संपत्ति की चोरी की है। बताया गया कि सूरेमन सिंह अपनी बीमार मां के इलाज के लिए बनारस गए थे। इसी दौरान चोरों ने घर का ताला तोड़कर वारदात को अंजाम दिया। चोर दीवार फांदकर छत के रास्ते घर में घुसे। उन्होंने तीन लाख रुपये के आभूषण और नगदी समेत कुल 5 लाख रुपए की संपत्ति चुरा ली। चोर खाली बक्सा और बैग जलहरा गांव के पोखरे के पास फेंक गए। स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना पीड़ित परिवार को दी। घर लौटने पर सूरेमन सिंह ने देखा कि अलमारी और बक्सों के ताले टूटे हुए थे।

जांच में जुटी पुलिस: राजपुर थाना अध्यक्ष संतोष कुमार ने बताया कि पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है। उन्होंने कहा कि स्थानीय बदमाशों की संलिप्तता की आशंका है। पुलिस आसपास के इलाके में पूछताछ कर रही है।

दो ट्रकों के बीच टक्कर चालक और खलासी जख्मी

निज संवाददाता। बक्सर

- आरा-बक्सर NH-922 पर हुआ हादसा, लोगों ने केबिन से निकाल कर दोनों को पहुंचाया अस्पताल

बक्सर के नया भोजपुर ढाबा के पास आरा-बक्सर फोरलेन पर दो ट्रकों की टक्कर में दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों की पहचान आजमगढ़ निवासी चालक राम उग्र यादव (30) और खलासी रामकृष्ण यादव (25) के रूप में हुई हैं। बताया जा रहा है कि यह हादसा तब हुआ जब पटना की ओर जा रही एक बालू लोड ट्रक को पीछे से आ रही दूसरी तेज रफ्तार ट्रक ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि ट्रक का अगला हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। चालक और खलासी केबिन में फंस गए। जिसके बाद स्थानीय लोगों ने केबिन से दोनों घायलों को बाहर निकाला और उन्हें तुरंत बक्सर सदर अस्पताल में भर्ती कराया। जहां दोनों की स्थिति गंभीर होने के कारण उन्हें रेफर करने की तैयारी की जा रही है।

दूसरी ट्रक ने पीछे से मारी टक्कर: प्रत्यक्षदर्शी और बालू लोड ट्रक के चालक रामबचन ने बताया कि उनकी ट्रक अपनी लेन में थी। पीछे से आ रही ट्रक ने टक्कर मार दी, जिससे दोनों वाहनों को भारी नुकसान हुआ। स्थानीय निवासी कृष्णा शर्मा ने सड़क सुरक्षा पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि इस मार्ग पर ट्रकों के सड़क किनारे खड़े रहने और वाहनों के गलत लेन में चलने से लगातार दुर्घटनाएं हो रही हैं।

जांच में जुटी पुलिस: नया भोजपुर थानाध्यक्ष मनीष कुमार ने बताया कि पुलिस मामले की जांच कर रही है। साथ ही वाहनों को निर्धारित लेन में चलाने के लिए प्रयासरत है, ताकि ऐसी दुर्घटनाओं को रोका जा सके।

गोली मारने मामले में प्राथमिकी दर्ज

निज संवाददाता। आरा

- जख्मी के चाचा के बयान पर सगे भाई आरोपी, मवेशी बांधकर लौटे के दौरान चलाई थी गोली

शहर के नवादा थाना क्षेत्र के बहिरो मोहल्ले में बुधवार की शाम हुए किशोर गोली कांड मामले में सगे भाइयों के खिलाफ नामजद प्राथमिकी दर्ज की गई है। जख्मी किशोर प्रेम कुमार के चाचा मुकेश कुमार के बयान पर प्राथमिकी दर्ज की गई। दर्ज प्राथमिकी में जख्मी किशोर प्रेम कुमार के चाचा मुकेश द्वारा कहा गया है कि बुधवार की शाम करीब साढ़े छह बजे उनका भतीजा प्रेम कुमार गाय को खिलाने के लिए दालान पर गया था और गाय को खिलाकर लौटते समय मोहल्ले के ही निवासी बलि यादव का पुत्र रौशन कुमार एवं रोहित कुमार हथियार सप्लाई करते हैं और जान से मारने की नीयत से उनके भतीजे प्रेम कुमार को रौशन कुमार ने गोली मार दी।

क्या है पूरा मामला: बता दें कि बुधवार की शाम नवादा थाना क्षेत्र के बहिरो मोहल्ले में दालान से मवेशी को खिलाकर वापस लौट रहे प्रेम कुमार को गोली लग गई थी। जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया था। प्रेम कुमार ने बताया कि उसके घर से महज कुछ दूरी पर ही उसका दालान है जहां मवेशी बांधा जाता है। बुधवार की शाम वह दालान से मवेशी बांधकर घर लौट रहा था। तभी बीच रास्ते में मोहल्ले का ही एक किशोर अपने हाथ में पिस्टल लेकर चेक कर रहा था। उसी दौरान अचानक एक्सीडेंटल फायरिंग हो गई। जिसमें फायरिंग के दौरान उसे गोली लग गई। जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। जिसके बाद उसे इलाज के लिए आरा शहर के बाबू बाजार स्थित निजी अस्पताल लाया गया।

भोजपुर में 4 घंटे बिजली रहेगी बाधित

निज संवाददाता। आरा

- जर्जर तारों के मरम्मत का होगा काम, समय से निपटा लें जरूरी काम

भोजपुर जिले के संदेश, अखगांव, अजीमाबाद, गिधा, बड़हरा और भकुरा PSS से जुड़े क्षेत्रों में आज, 7 मार्च (शुक्रवार) को सुबह 11 बजे से शाम 3 बजे तक विद्युत आपूर्ति बाधित रहेगी। कनीय विद्युत अभियंता के अनुसार, रोड कंस्ट्रक्शन विभाग द्वारा कायमनगर से जीरोमाइल तक सड़क चौड़ीकरण कार्य के तहत पोल लगाने का कार्य किया जाएगा। इस दौरान सभी पुराने एवं जर्जर तारों की मरम्मत भी की जाएगी ताकि उपभोक्ताओं को भविष्य में बिजली से जुड़ी किसी समस्या का सामना न करना पड़े। बिजली उपभोक्ताओं से अपील है कि वे पहले से ही आवश्यक कार्य निपटा लें और पानी की व्यवस्था कर लें। असुविधा के लिए खेद है। सहायक अभियंता ने आश्वासन दिया है कि कार्य पूरा होते ही जल्द से जल्द विद्युत आपूर्ति बहाल कर दी जाएगी।

इन इलाकों में नहीं रहेगी बिजली: संदेश बाजार, कोरी बाजार, काजीचक, फुलारी, अहपुरा, बिछीआवँ, दलेलगंज, डीहरा, काँधरपुर, बारा, बरतीयर, जलपुरा, सलेमपुर, अखगाँव बाजार, बचरी, नसरतपुर, पाण्डुरा, जमुआव, प्रतापपुर, नारायणपुर।नेकनाम टोला, बखोरापुर, बड़हरा, सेमरिया पडरिया, मटुकपुर, एकौना, बभनगावा, पूर्वी बबुरा, पश्चिमी बबुरा, विशुनपुर पंचायत, सकडडी, सोनघट्टा, गीधा औद्योगिक क्षेत्र।जगवलिया, पिरौटा, जयपाल पिपरा, यादोपुर, सभी डुमरा गाँव और आसपास के क्षेत्र।

भोजपुर में मुख्यमंत्री का पुतला दहन

निज संवाददाता। आरा

वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय में चल रहे 15 दिनों से शिक्षक और शिक्षकेतर कर्मचारियों के आंदोलन के समर्थन में आइसा के द्वारा बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का पुतला दहन किया गया। शिक्षक और कर्मचारी को पिछले चार महीनों से वेतन नहीं मिलने से नाराज आइसा के कार्यकताओं ने बिहार सरकार के खिलाफ नारेबाजी की । इसके बाद कार्यकर्ताओं ने सलाई से पुतले में आग लगाकर 15 दिनों से लगातार आंदोलन पर बैठे शिक्षक और कर्मचारियों को वेतन देने की मांग की ।

होली से पहले भुगतान करने की मांग: छात्र संगठन आइसा ने वीर कुंवर सिंह विश्विद्यालय कतिरा में इतिहास विभाग से मार्च निकाल कर पॉलिटिकल विभाग के सामने सभा किया गया और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का पुतला दहन किया गया। सभा का संचालन जैन कॉलेज सचिव चंदन दास करते हुए सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि होली से पहले वेतन का भुगतान नहीं किया गया, तो आइसा पूरे बिहार में शिक्षकों और कर्मचारियों के वेतन भुगतान के मांग को लेकर आंदोलन करेगा। सरकार के उदासीनता के कारण विश्वविद्यालयों के कर्मचारियों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। परिवार चलाने में हो रही परेशानियों के कारण वो मानसिक और आर्थिक दबाव में है। शिक्षा विभाग की ओर से अब तक इस मामले पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है।

सरकार की चुप्पी से बढ़ रहा है आक्रोश: वहीं सभा का संबोधन करते हुए भोजपुर जिला सह सचिव रौशन कुशवाहा ने कहा कि बिहार के विश्वविद्यालयों में कार्यरत हजारों कर्मचारी वेतन के अभाव में अपने परिवार की आवश्यक जरूरतें भी पूरी नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में सरकार की चुप्पी और देरी उनके आक्रोश को और बढ़ा रही है।अगर कर्मचारियों का वेतन शीघ्र नहीं दिया गया, तो इससे विश्वविद्यालयों के प्रशासनिक कार्यों पर भी असर पड़ेगा। शिक्षक और कर्मचारी विश्वविद्यालयों की कार्यप्रणाली का अहम हिस्सा होते हैं, और उनके बिना प्रशासनिक कार्य सुचारू रूप से नहीं चल सकते। बिहार के विश्वविद्यालयों में वेतन संकट एक गंभीर समस्या बन चुकी है। कर्मचारियों के लगातार विरोध और चेतावनी के बावजूद सरकार की निष्क्रियता चिंता का विषय है। अगर जल्द कोई समाधान नहीं निकला, तो आने वाले दिनों में आंदोलन और व्यापक रूप ले सकता है, जिससे राज्य के उच्च शिक्षा संस्थानों की कार्यप्रणाली प्रभावित हो सकती है। भोजपुर जिला अध्यक्ष शाहनवाज खान ने कहा कि शिक्षक और छात्र एक दूसरे के बीच समन्वय स्थापित रहता है उसको बिहार के भाजपा और नीतीश की सरकार खत्म कर देना चाहती है। भाजपा और नीतीश सरकार बिहार में नई शिक्षा नीति थोप कर एक तो पहले से ही गरीब , दलित, पिछड़ा और शोषित तबके से आने वाले विद्यार्थियों को दूर करना चाहती है और वहीं दूसरी तरफ इनको 4 माह से वेतन न देना उसी का एक हिस्सा है जो निजीकरण की ओर बढ़ावा दे रही है। पुतला दहन कार्यक्रम में छात्र संगठन आइसा भोजपुर जिला सह सचिव सुधीर कुमार, उपाध्यक्ष शियाकांत बैठा, महाराजा कॉलेज सचिव राजेश कुमार, अध्यक्ष शुभम मौर्या, SB कॉलेज सचिव साहिल अरोड़ा,अनूप कुमार, आनंद ,नंदनी कुमारी,नीतू कुमारी,अंकित राज, धनु, गोलू, तूफान, विद्यानंद सहित दर्जनों आइसा नेता उपस्थित थे।

3630 लीटर विदेश शराब के साथ 2 तस्कर गिरफ्तार

निज संवाददाता। आरा

- 45 लाख रूपए आंकी गई कीमत, केबिन बनाकर छुपाई गई थी, होली को लेकर था स्टॉक

भोजपुर मद्यनिषेध एवं उत्पाद विभाग की टीम ने होली के मौके पर तस्करी के लिए लाई जा रही बड़ी मात्रा में अंग्रेजी शराब की खेप जब्त की है। यह कार्रवाई बक्सर–पटना फोरलेन के बीबीगंज मोड़ के पास की गई, जहां एक छह चक्का ट्रक से 9744 बोतल (कुल 3630.96 लीटर) विदेशी शराब बरामद हुई। जब्त की गई शराब की अनुमानित बाजार कीमत 45 लाख रुपये बताई जा रही है। इस दौरान दो तस्करों को भी गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार तस्करों की पहचान मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले के नागझीरी थाना क्षेत्र के करौंदया गांव निवासी सुनील सोलंकी और पवासा थाना क्षेत्र के मकसी रोड निवासी नरेंद्र सोलंकी के रूप में हुई है।

ट्रक में एक केबिन बनाकर छिपाई थी शराब: तस्करों के पास से UP14MT–2737 नंबर का ट्रक भी बरामद किया गया। बताया जा रहा है कि ट्रक में एक बड़ा केबिन बनाकर उसमें शराब छिपाई गई थी। तस्कर पंजाब से Mc Dowell's ब्रांड की शराब लेकर मुजफ्फरपुर जा रहे थे। गुप्त सूचना के आधार पर सहायक आयुक्त के निर्देश पर अवर निरीक्षक राहुल कुमार दुबे के नेतृत्व में कार्रवाई की गई। जब ट्रक की जांच की गई तो उसके अंदर बने शौचालयनुमा केबिन में शराब छिपी मिली। जब्त शराब में Mc Dowell's और Imperial Blue ब्रांड की बोतलें शामिल हैं।

प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई जारी: सहायक आयुक्त ने बताया कि तस्कर स्कैनर और चेकपोस्ट से बचने के लिए गुप्त केबिन और पाइप जैसी संरचनाओं का इस्तेमाल करते हैं। हालांकि, विभाग की सतर्कता से इस बार उनकी योजना विफल हो गई। छापेमारी टीम में अवर निरीक्षक राहुल कुमार दुबे, सहायक अवर निरीक्षक रविंद्र यादव, अवर निरीक्षक रवि कुमार, गृह रक्षक और सैप के जवान शामिल थे। गिरफ्तार तस्करों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

बक्सर में 15 लाख के गहनों की चोरी

निज संवाददाता। बक्सर

- परिवार के जनेऊ कार्यक्रम में जाने का उठाया फायदा, चोरों ने तोड़ा मकान का ताला

बक्सर के पुराना भोजपुर में चोरों ने एक मकान से 15 लाख रुपए से अधिक के गहने चोरी कर लिए। घटना गुरुवार और शुक्रवार की मध्य रात्रि की है। मकान मालिक कमलेश पाठक अपने परिवार के साथ चाचा के नाती के जनेऊ कार्यक्रम में गए थे। शुक्रवार सुबह जब परिवार घर लौटा तो मुख्य गेट का ताला टूटा मिला। घर के सभी कमरों के ताले टूटे हुए थे। आलमारियों से टिका, नथीया, झुमका, अंगूठी, मंगलसूत्र, कमरपेटी, चांदी के बर्तन, सिक्के और पायजेब गायब थे।

थानाध्यक्ष ने घटनास्थल का किया निरीक्षण: सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। जांच के लिए एफएसएल और डॉग स्क्वायड टीम को बुलाया गया। सीआई श्रीनाथ कुमार और थानाध्यक्ष मनीष कुमार ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। कमलेश पाठक ने बताया कि वे 6 मार्च को बक्सर के चरित्रवन में जनेऊ कार्यक्रम में शामिल होने गए थे। पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है। स्थानीय लोगों से पूछताछ की जा रही है। थानाध्यक्ष मनीष कुमार ने कहा है कि जल्द ही अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

शिक्षा और व्यक्तित्व विकास पर युवा दें ध्यान : बृजेश कुमार

निज संवाददाता। बक्सर

जिले के मंझरिया गांव के निवासी बृजेश कुमार सिंह को कमांडेंट बनाए जाने की खबर से क्षेत्र में हर्ष का माहौल है। वर्तमान में वे दिल्ली स्थित सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) मुख्यालय में कमांडेंट (ट्रेनिंग) के रूप में कार्यरत हैं। इससे पहले वे विभिन्न सीमाओं पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभा चुके हैं। बचपन से ही मेधावी रहे बृजेश कुमार सिंह का परिवार राष्ट्र सेवा की मजबूत परंपरा से जुड़ा हुआ है। उनके दादा स्वर्गीय गया सिंह और पिता विजय बहादुर सिंह भारतीय वायुसेना में अधिकारी थे। उनकी पत्नी कैप्टन (डॉ.) दिनीषा भारद्वाज सिंह भारतीय सेना में अधिकारी रह चुकी हैं। बृजेश के प्रारंभिक जीवन में उनकी माता स्वर्गीय राम कुमारी सिंह की अहम भूमिका रही। राष्ट्रसेवा की इसी विरासत को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने भी सीमा सुरक्षा बल में अपना योगदान दिया। बृजेश कुमार सिंह ने वर्ष 1998 में बीएसएफ अकादमी से प्रशिक्षण प्राप्त किया और पहली नियुक्ति अनंतनाग में मिली। शुरुआत में ही उन्होंने कारगिल युद्ध के दौरान आतंकवाद विरोधी अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डिप्टी कमांडेंट के रूप में त्रिपुरा बॉर्डर पर उनकी शानदार कार्यशैली के चलते सरकार ने उन्हें सूडान में भी तैनात किया था। वर्ष 2002 में 'ऑपरेशन पराक्रम' के दौरान वे पंजाब में भारत-पाकिस्तान सीमा पर भी तैनात रहे।

भोजपुर में पिता–पुत्री को युवकों ने पीटा

निज संवाददाता। आरा

- जख्मी ने लगाया मारपीट और छेड़खानी का आरोप, अस्पताल में इलाज जारी

भोजपुर जिले के गजराजगंज ओपी क्षेत्र के बरगही गांव में गुरुवार को छेड़खानी का विरोध करने पर गांव के युवकों ने पिता-पुत्री की जमकर पिटाई कर दी गई। जिससे दोनों गंभीर रूप से जख्मी हो गए।इसके बाद अन्य लोगों के बीच बचाव के बाद डायल 112 नंबर पुलिस वाहन द्वारा उन्हें इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। जानकारी के अनुसार ज़ख्मियों में गजराजगंज ओपी क्षेत्र के बरगही गांव निवासी 50 वर्षीय भगवान महतो एवं 18 वर्षीया उनकी पुत्री जया कुमारी है।

पिता-पुत्री को युवकों ने पीटा: जया कुमारी ने बताया कि गांव के ही कुछ युवक के उसके साथ बराबर टोन बाजी और छेड़खानी करने की कोशिश करते थे लेकिन कर नहीं पाते थे। गुरुवार की शाम जब वह अपने दरवाजे पर बैठी थी। तभी उक्त युवक अपने अन्य साथियों के साथ वहां आए और उसके साथ छेड़खानी करने लगे। जब उसने इसका विरोध किया तो उनके द्वारा उसकी जमकर पिटाई कर दी गई। घटना की सूचना पाकर जब उसके पिता भगवान महतो बीच बचाव करने गए तो उक्त युवकों उनकी भी पिटाई कर दी।

युवती के सिर पर गहरा निशान: बदमाश युवकों ने पित-पुत्री को काफी देरी तक बेहरमी से पिटाई करते रहे। युवकों ने युवती के सिर पर काड़ा से मारकर जख्मी कर दिया है। वहीं, ऑन ड्यूटी चिकित्सक अमन ने बताया कि युवती के ललाट पर जख्म का गहरा निशान था जबकि उसके पिता के शरीर में चोट के निशान थे। दोनों का आरा सदर अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में प्राथमिक उपचार कर दिया गया है।

जख्मी ने लगाया छेड़खानी और मारपीट का आरोप: दूसरी तरफ जख्मी जया कुमारी ने गांव के ही संदीप,सुधीर,सुजीत,अंकुश एवं विशाल सहित उनके साथ रहे अन्य दोस्तों पर छेड़खानी का विरोध करने पर काड़ा एवं डंडों से मारकर खुद को एवं अपने पिता को जख्मी करने का आरोप लगाया है।

ठेला चालक की गला रेत कर हत्या

♦ भागलपुर में स्कूल के बाहर मिला शव, शरीर पर कई जख्मों के निशान, लोगों ने कहा - कल शाम से पड़ी है बॉडी

निज संवाददाता। भागलपुर

भागलपुर में ठेला चालक की बेरहमी तरीके से हत्या कर उनका शव सड़क के किनारे फेंक कर बदमाश भाग गए। मामला विश्वविद्यालय थाना क्षेत्र के जगलाल स्कूल के के समीप का है। मृतक के शरीर के विभिन्न अंगों में जख्म का निशान है। मृतक के शरीर पर जख्म देकर आशंका जताई जा रही है कि किसी और जगह उसकी हत्या करने के बाद शव को लाकर विश्वविद्यालय थाना क्षेत्र में फेंक दिया गया। घटनास्थल से मृतक के घर की दूरी एक किलोमीटर है। स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना परिजनों और पुलिस को दी। जानकारी के अनुसार, मृतक साहिबगंज का रहने वाला नंदी यादव के पुत्र अनिल यादव(56) है, जो एक दिन पहले से ही घर से लापता था। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर मामले की जांच कर रही है। हालांकि हत्या का कारण अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है।

भाई बोला- किसी से मेरे भाई की नहीं थी दुश्मनी: मृतक के भाई ने बताया कि वो गुरुवार की सुबह 7 बजे काम करने के लिए घर से निकला था। हालांकि वो प्रत्येक दिन 3 बजे तक घर वापस आ जाता था लेकिन कल वो नहीं लौटा। देर शाम खोजबीन शुरू की तो आसपास के लोगों से पता चला कि शाम 5 बजे अपने ठेला पर घटनास्थल पर सोया हुआ था। आसपास की जगहों पर काफी खोजबीन की लेकिन कुछ पता नहीं चला। आज सुबह अचानक खबर मिली कि भाई की गला रेत हत्या कर दी गई है। जिसका शव सड़क किनारे पड़ा हुआ है। जानकारी मिलते ही मैं भागकर मौके पर पहुंचा।

भाई ने आगे बताया कि मेरे भाई की किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी, वो अपने काम से काम रखता था। अब उसकी इस तरीके से किसने हत्या की है, जिसकी जानकारी नहीं मिल पा रही है। हालांकि भाई की शादी नहीं हुई थी, वो घर से दूर बथान पर सोता था। कल मेरे साथ ही काम पर आया ता लेकिन वापस नहीं लौटा।

फोरेंसिक और डॉग स्क्वायड की टीम बुलाकर मामले की जांच: घटना की जानकारी मिलने के बाद विश्वविद्यालय थानाध्यक्ष सुप्रिया कुमारी अपने दल बल के साथ घटनास्थल पर पहुंची। उन्होंने फोरेंसिक और डॉग स्क्वायड की टीम को मौके पर बुलाया। सूचना के बाद लाइन डीएसपी भी मौके पर पहुंचे हैं। फिलहाल मामले की जांच की जा रही है। अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है की हत्या के पीछे का कारण क्या है।

संक्षिप्त समाचार

जाली नोट के साथ 2 तस्कर धराए

भागलपुर। नकली नोट के साथ दो तस्करों को जीरोमाइल थाने की टीम ने गिरफ्तार किया है। वाहन चेकिंग के दौरान चारपहिया वाहन की जांच की गयी। जिसमें 500 रुपए के 25 हजार के नकली नोट उसमें मिले। इसके बाद पूछताछ में पंकज कुमार गुप्ता के पर्स से 500 रुपए का तीन एवं 50 रुपए का एक नोट असली जैसा बरामद हुआ। बरामद जाली नोट के संबंध में पूछताछ में पंकज ने बताया कि पहले वह क्रिप्टो करेंसी में काम करता था, जिसके चलते घाटा लगा तो जाली नोट के धंधे में आ गया। वह पश्चिम बंगाल से नोट लेकर बिहार के विभिन्न जिलों में नोट की सप्लाई करता था। पंकज गया जिला के आमस थाना क्षेत्र के शिव मंदिर के पास का रहनेवाला है। उसका वर्तमान पता अंडाल पश्चिम बंगाल का है। जबकि उसके साथ गिरफ्तार पिंटू चौधरी गिरिडीह के बेंगाबाद का रहनेवाला है। जीरोमाइल थाने की टीम ने बताया कि दोनों के पास से मोबाइल फोन भी बरामद किया गया है। उसके बताए पते पर पुलिस छापेमारी करने की तैयारी कर रही है। साथ ही उसने बिहार के किन-किन जिलों में कहां-कहां जाली नोटों की डिलेवरी दी थी, उसकी भी जांच होगी। यह नोट लेकर वह कहां जा रहा था, फिलहाल पुलिस ने खुलासा नहीं किया है। पुलिस का कहना है कि इस मामले में अभी जांच चल रही है, नहीं बताया जा सकता।

4 से 15 मई तक सैंडिस कंपाउंड में होगी बैडमिंटन और तीरंदाजी प्रतियोगिता

भागलपुर। खेलो इंडिया यूथ गेम के तहत भागलपुर में बैडमिंटन (बालक एवं बालिका) और तीरंदाजी (बालक एवं बालिका) प्रतियोगिता 4 से 15 मई तक सैंडिस कंपाउंड में होगी। इसके लिए डीएम नवल किशोर चौधरी की अध्यक्षता में बैठक हुई। इस दौरान बताया गया कि प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी के साथ भारतीय ओलंपिक एसोसिएशन, राष्ट्रीय खेल संघ, भारतीय खेल प्राधिकरण और खेल मंत्रालय के अधिकारी आएंगे। डीएम ने निर्देश दिया कि इस अवसर पर भागलपुर शहर और आयोजन स्थल की अच्छे से सफाई कराई जाएगी, ताकि ऐसा प्रतीत हो कि भागलपुर अपने आने वाले अतिथियों के स्वागत के लिए तैयार है। भागलपुर नगर निगम को यह जिम्मा दिया गया। इस दौरान शहर की यातायात व्यवस्था भी दुरुस्त की जाए, ताकि खिलाड़ियों और अतिथियों को आगमन स्थल से आयोजन स्थल तक आवागमन करने में आसानी हो। खिलाड़ियों और अतिथियों का रेलवे स्टेशन, ठहरने वाले स्थल और खेल आयोजन स्थल पर बैंड-बाजे और फूलों के गुलदस्ता के साथ स्वागत किया जाएगा। आयोजन स्थल के लिए प्रकाश, ध्वनि प्रणाली, आवश्यक विद्युत उपकरण, बिजली आपूर्ति, हाई स्पीड नेट की व्यवस्था, स्वच्छ पेयजल, अस्थाई शौचालय की व्यवस्था, खिलाड़ियों और अतिथियों की सुरक्षा की व्यवस्था, खिलाड़ियों के उत्साहवर्धन करने के लिए पर्याप्त संख्या में दर्शकों की व्यवस्था, प्रतियोगिता का प्रचार-प्रसार करने, आयोजन स्थल पर अस्थाई चिकित्सा दल की व्यवस्था, उनके ठहरने के लिए प्रोटोकॉल के अनुसार कमरों की व्यवस्था, संपर्क पदाधिकारी नियुक्त करने, भीड़ प्रबंधन, वाहनों का आवागमन और पार्किंग की व्यवस्था करने के लिए अलग-अलग समिति बनाई गई। बैठक में उप विकास आयुक्त प्रदीप कुमार सिंह, नगर पुलिस अधीक्षक शुभांक मिश्रा, अपर समाहर्ता महेश्वर प्रसाद सिंह, जनसंपर्क के संयुक्त निदेशक नागेंद्र कुमार गुप्ता, सदर अनुमंडल पदाधिकारी धनंजय कुमार, जिला खेल पदाधिकारी जय नारायण सिंह, जिला बैडमिंटन संघ के सचिव सत्यजीत सहाय समेत कई पदाधिकारी मौजूद रहे।

दो दिन में चार डिग्री गिरा न्यूनतम पारा, चलेगी तेज हवा

मुंगेर। जिले में विगत दो दिनों से मौसम में अचानक बदलाव देखने को मिल रहा है। जिसके कारण जिले के तापमान में भी बदलाव हुआ है। जिसके कारण जिले के न्यूनतम तापमान में 4 डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई। गुरुवार को जिले का न्यूनतम तापमान 4 डिग्री सेल्सियस की गिरावट के साथ 11 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 3 डिग्री गिरावट के साथ 28 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इस बीच 12 किमी की रफ्तार से चल रही पछुआ हवा ने मौसम को सर्द कर दिया है। हालांकि इस बीच खिली धूप के कारण लोगों को थोड़ी राहत जरूर मिली बावजूद घरों में लोगों को कनकनी का एहसास होता रहा।

भागलपुर के 8 सिविल जज का हुआ तबादला

भागलपुर। भागलपुर, नवगछिया और कहलगांव से 8 सिविल जज का तबादला दूसरे जिलों या कोर्टशिप में किया गया है। इसकी अधिसूचना हाईकोर्ट से जारी की गई है। साथ ही दो सिविल जज का तबादला भागलपुर में किया गया। अधिसूचना के अनुसार धर्मेंद्र कुमार पांडेय का तबादला छपरा, अखिलेश कुमार का बेगूसराय, उदय प्रताप का गया, कुमारी ज्योत्सना का लखीसराय, प्रसेनजीत सिंह का पूर्वी चंपारण, नवगछिया से महेश्वरनाथ पांडेय का बक्सर, कहलगांव से शिल्पा प्रशांत मिश्रा का रोहतास और भागलपुर से श्वेता सिंह का पूर्वी चंपारण तबादला किया गया है।

नकली नोट के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

निज संवाददाता। भागलपुर

भागलपुर के जीरोमाइल थाना पुलिस ने नकली नोट के साथ दो तस्करों को गिरफ्तार किया है। वाहन चेकिंग के दौरान एक चारपहिया वाहन की तलाशी ली गई, जिसमें 500 रुपए के 25 हजार रुपए के जाली नोट बरामद हुए। पूछताछ में पंकज कुमार गुप्ता के पर्स से भी 500 रुपए के तीन और 50 रुपए का एक असली जैसा दिखने वाला नोट मिला। पंकज ने पूछताछ में बताया कि पहले वह क्रिप्टो करेंसी में काम करता था, लेकिन घाटा होने के बाद उसने नकली नोट के धंधे में कदम रख लिया। वह पश्चिम बंगाल से नकली नोट लाकर बिहार के अलग-अलग जिलों में सप्लाई करता था। पंकज गया जिले के आमस थाना क्षेत्र के शिव मंदिर के पास का रहने वाला है, जबकि फिलहाल उसका पता अंडाल, पश्चिम बंगाल है। उसके साथ गिरफ्तार पिंटू चौधरी गिरिडीह जिले के बेंगाबाद का रहने वाला है। पुलिस ने दोनों के पास से मोबाइल फोन भी बरामद किया है और उनके बताए ठिकानों पर छापेमारी की तैयारी कर रही है। साथ ही बिहार के किन-किन जिलों में नकली नोटों की डिलीवरी हुई है, इसकी जांच की जा रही है। पुलिस का कहना है कि अभी मामले की गहराई से जांच जारी है, इसलिए ज्यादा जानकारी नहीं दी जा सकती।

सफाई कर्मी के साथ गाली-गलौज, अब कार्रवाई की मांग, मायागंज के PG डॉक्टर पर आरोप

निज संवाददाता। भागलपुर

♦ अस्पताल अधीक्षक ने एक्शन का दिया भरोसा

भागलपुर के मायागंज अस्पताल में PG एक डॉक्टर के द्वारा गुरुवार को सफाई कर्मी श्वेतांबर के साथ गाली-गलौज किया था। अब इस मामले में तूल पकड़ लिया है। शुक्रवार को सफाई कराने वाले एजेंसी हरिओम इंटरप्राइजेज के सुपरवाइजर संजय कुमार के नेतृत्व में दर्जनों सफाई कर्मी मायागंज अस्पताल अधीक्षक डॉक्टर हेमशंकर शर्मा से न्याय की गुहार लगाने पहुंचा। हालांकि अधीक्षक ने सफाई कर्मी को कार्रवाई का भरोसा दिया है। उन्होंने कहा है कि मामले की जांच कर उचित करवाई करेंगे। जानकारी के अनुसार, मायागंज अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में सफाई कर रहे कर्मी श्वेतांबर को PG जूनियर डॉक्टर ने किट लाने को कहा, जब कर्मी के द्वारा कहा गया कि इमरजेंसी से लाकर किट देते हैं तो डॉक्टर ने कहा बाहर से खरीद कर लाओ, नहीं लाने पर भड़क गए और गाली-गलौज करते हुए कॉलर पकड़कर कमरे में बंद कर मारने की धमकी दिया। इसके विरोध शुक्रवार को सफाई कर्मियों ने डॉक्टर पर कार्रवाई की मांग किया है।। हरिओम इंटरप्राइजेज के सुपरवाइजर संजय कुमार ने कहा कि ENT OT में सफाई कर रहे एक सफाई कर्मी के साथ डॉक्टर ने गाली गलौज और कॉलर पड़कर रूम के अंदर ले जाकर मारने की धमकी दी। जिसको लेकर हम लोग आज अधीक्षक से कार्रवाई की गुहार लगाने के लिए पहुंचे थे।

कार्रवाई नहीं हुई तो उठाएंगे कदम: वहीं, उन्होंने आगे कहा कि हमेशा इस तरह की घटना सफाई कर्मचारियों के साथ होती है। जो बर्दाश्त के बाहर है। हम लोग डॉक्टर पर कार्रवाई की मांग करते हैं।।मामले में पीड़ित सफाई कर्मी श्वेतांबर ने कहा कि डॉक्टर ने हमें किट लाने के लिए बाहर भेज रहे थे, हमने कहा इमरजेंसी से लाकर देते हैं तो वह भड़क गए। कॉलर पड़कर कमरे में ले गए और वहां पर गली-गलौज की मारने की धमकी दी है। वहीं उन्होंने कहा कि अगर उस पर कार्यवाही नहीं होगी तो हम लोग अपना अगला कदम उठाएंगे

मुंगेर विवि के कॉलेजों को दो माह के भीतर मिलेगा अनुदान

मुंगेर। मुंगेर विश्वविद्यालय के अनुदानित कॉलेजों को दो महीने के भीतर अनुदान राशि जारी की जाएगी। यह घोषणा शिक्षा मंत्री सुनील कुमार ने विधानसभा में कांग्रेस विधायक डॉ. अजय कुमार सिंह के पूरक प्रश्नों के जवाब में की। उन्होंने बताया कि चालू वित्तीय वर्ष के बजट प्रावधानों के अनुसार अनुदान की व्यवस्था की जाएगी। शिक्षा मंत्री ने स्वीकार किया कि मुंगेर विश्वविद्यालय सहित अन्य विश्वविद्यालयों के करीब 300 करोड़ की अनुदान राशि लंबित है। डॉ. अजय कुमार सिंह ने सवाल उठाया कि छह महीने पहले ही संबद्ध कॉलेजों से लंबित राशि का विवरण भेजा जा चुका है, फिर भी विभाग ने अब तक अनुदान जारी नहीं किया। डॉ. अजय कुमार सिंह के सीधे सवालों पर शिक्षा मंत्री सुनील कुमार असहज दिखे, लेकिन उन्होंने आश्वासन दिया कि जांच के बाद जल्द ही अनुदान जारी कर दिया जाएगा। जब विधायक ने स्पष्ट समय सीमा पूछी, तो मंत्री ने कहा कि दो महीने के भीतर मुंगेर विश्वविद्यालय सहित अन्य विश्वविद्यालयों को अनुदान की राशि भेज दी जाएगी। अनुदान जारी होने से संबद्ध कॉलेजों के शिक्षकों और कर्मचारियों को वेतन भुगतान में राहत मिलेगी, वहीं कॉलेजों के बुनियादी ढांचे और शैक्षणिक गतिविधियों में भी सुधार होगा।

अगुवानी पुल के क्षतिग्रस्त हिस्सों में चल रही सफाई

भागलपुर। एसपी सिंगला कंस्ट्रक्शन कंपनी को अगुवानी-सुल्तानगंज व विक्रमशिला फोरलेन सेतु के निर्माण होने तक बिहार में कोई नया काम नहीं मिलेगा। कंस्ट्रक्शन कंपनी को डिबार घोषित किया गया है। एसपी सिंगला कंस्ट्रक्शन कंपनी के प्रोजेक्ट डायरेक्टर संजय सिंह ने कहा कि डिबार घोषित होने से काम प्रभावित नहीं होगा। अगवानी सेतु का नया लेआउट डिजाइन मुख्यालय को भेजा गया है। 6 माह से अब तक मंजूरी का इंतजार किया जा रहा है। प्रोजेक्ट डायरेक्टर संजय सिंह ने बताया कि कंपोजिट माडल का लेआउट तैयार हुआ है। सेतु को बनाने में स्टील और सीमेंट का इस्तेमाल होगा। जिससे मजबूती दी जा सके। क्षतिग्रस्त हिस्से की कई स्तरों पर जांच की जा रही है। क्षतिग्रस्त हिस्सों में कास्टिंग कैज के माध्यम से सफाई भी चल रही है।

सदानंद को मिलेगा अंगिका साहित्य सेवा भूषण सम्मान

हवेली खड़गपुर। हवेली खड़गपुर नगर परिषद क्षेत्र के पश्चिम अजीमगंज, भैया राम टोला निवासी सदानंद सिंह यादव को अंगिका साहित्य सेवा भूषण सम्मान मिलेगा। झारखंड प्रदेश अंगिका समाज की प्रदेश कार्यकारिणी चयन समिति ने अंगिका भाषा के संवर्धन में उनके योगदान को देखते हुए यह सम्मान देने का निर्णय लिया है। वे वर्तमान में सीजीडब्लूबी, रांची में कार्यरत हैं। यह सम्मान 9 मार्च को झारखंड प्रदेश अंगिका समाज के होली मिलन सह सम्मान समारोह में दिया जाएगा। वे हिंदी और अंगिका में रचनाएं लिखते हैं। अपनी रचनाओं को स्वरबद्ध कर गाते भी हैं।

पंजीकृत प्रवासी को पूर्ण अपंगता पर 1 लाख रुपये मिलेंगे

मुंगेर । प्रवासी श्रमिकों के कल्याण और सुरक्षा के लिए बिहार प्रवासी कामगार ऐप लॉन्च किया गया है। इस ऐप के जरिए बिहार से बाहर काम कर रहे श्रमिक खुद को पंजीकृत कर सकते हैं। इससे वे सरकारी योजनाओं का लाभ ले सकेंगे और किसी प्राकृतिक आपदा की स्थिति में सहायता प्राप्त कर सकेंगे। यह जानकारी गुरुवार को देते हुए श्रम अधीक्षक सत्यप्रकाश ने बताया कि बिहार लौटे प्रवासी श्रमिकों का निबंधन प्रखंड के श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी करेंगे। ये अधिकारी प्रखंड स्तर पर नोडल घोषित किए गए हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान में पंजीकृत प्रवासी श्रमिकों को पूर्ण अपंगता पर 1 लाख रुपये और आंशिक अपंगता पर 50 हजार रुपये की सहायता दी जाएगी। श्रमिक की मृत्यु होने पर उसके आश्रितों को 2 लाख रुपये की आर्थिक मदद मिलेगी। सरकार ने सभी प्रवासी श्रमिकों से जल्द से जल्द निःशुल्क पंजीकरण कराने की अपील की है। इससे वे सरकारी योजनाओं का लाभ उठा सकेंगे और किसी आपदा की स्थिति में सहायता से वंचित नहीं रहेंगे। सत्यप्रकाश ने बताया कि यह पहल बिहार सरकार की श्रमिकों के कल्याण और सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सभी श्रमिकों को इसे अपनाकर इसका पूरा लाभ लेना चाहिए।

असैनिक शल्य चिकित्सक – सह – मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, गढ़वा।

(निविदा शुद्धि सूचना)

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि निविदा संख्या 92 दिनांक – 22/02/2025 को Advt. PR No-347053 अपरिहार्य कारण से दिनांक 17/03/2025 को संध्या 05:00 बजे तक विस्तारित की जाती है, उक्त निविदा की सभी शर्ते एंव नियम यथावत होंगे। निविदा गठित क्रय समिति के समक्ष दर निर्धारण हेतु दिनांक 18/03/2025 को अपराह्न 03:00 बजे तकनीकि भाग एवं 19.03.2025 को अपराह्न 3:00 बजे वित्तिय भाग सिविल सर्जन कार्यालय के सभाकक्ष में खोला जायेगा।

असैनिक शल्य चिकित्सक
– सह – मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी,
गढ़वा।

PR 348073 (Health Med Edu and Family Welfare) 24-25 (D)

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, सं0–02,गढ़वा।

ई–निविदा आमंत्रण सूचना संख्या–RDD/SD/GARHWA/19/2024-25_RE(2nd Call), दिनांक–06.05.2025

1.कार्य की विस्तृत विवरणी:

क्र०सं०	कार्य का नाम	प्रशासनिक स्वी0 की राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	कार्य पूर्ण करने की अवधि	लम्बाई (मी0 में)
1	गढ़वा जिला अंतर्गत खरौंधी प्रखण्ड के पंचायत अरंगी ग्राम–तोरेलावा में डोमनी घाटी पर स्कूल के पास डोमनी नाला पर उच्च स्तरीय पुल निर्माण।	42644800.00	8,53,000.00	10000.00	18 माह	58.08

2. वेबसाइट में निविदा प्रकाशन की तिथि –10.03.2025
3. ई–निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय दिनांक–10.03.2025 से दिनांक–24.03.2025 को अपराह्न 5:00 बजे तक
4. ई–निविदा खोलने का स्थान – कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल, सं0–02,गढ़वा।
5. ई–निविदा खोलने की तिथि एवं समय–26.03.2025 अपराह्न 2:00 बजे
6. ई–निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता :– कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, सं0–02,गढ़वा।
7. ई–निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं० –8789191801 (संबंधित कार्यपालक अभियंता का दूरभाष नम्बर)
8. परिमाण विपत्र की राशि घट–बढ़ सकती है तद्नुसार अग्रधन की राशि देय होगी।
9. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल **Online Mode** द्वारा स्वीकार्य होगी।
10. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी।

अगर खाता को बंद कर दिया जाता है तो उसकी सारी जवाबदेही आपकी होगी।
विस्तृत जानकारी के लिये वेबसाईट www.jharkhandtenders.gov.in एवं कार्यालय की सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता,
ग्रामीण विकास विशेष प्र.सं.–02, गढ़वा।

PR 348070 Rural Development(24-25)D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल सं०-02, गढ़वा

जिला अनाबद्ध निधि योजना मद, दिनांक–08.03.2025
अति–अल्पकालीन ई–निविदा सूचना संख्या–RDD/SD/GARHWA/21/2024-25_RE(3rd Call)
PR No-346263 Rural Development(24-25):D

1. विज्ञापनदाता का नामः कार्यपालक अभियंता,ग्रामीण विकास विशेश प्रमण्डल सं0–02, गढ़वा।
2. वेबसाइट में निविदा प्रकाशन की तिथि – 08.03.2025
3. ई–निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय दिनांक– 08.03.2025 से दिनांक– 15.03.2025 को 5:00 बजे तक।
4. ई–निविदा खोलने का स्थान – कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल, सं0–02,गढ़वा।
5. ई–निविदा खोलने की तिथि एवं समय–17.03.2025 अपराह्न 2:00 बजे
6. ई–निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता :– कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, सं0–02, गढ़वा।
7. ई–निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं० –8789191801 (संबंधित कार्यपालक अभियंता का दूरभाष नम्बर)
8. परिमाण विपत्र की राशि घट–बढ़ सकती है तद्नुसार अग्रधन की राशि देय होगी।
9. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल Online Mode द्वारा स्वीकार्य होगी।
10. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर खाता को बंद कर दिया जाता है तो उसकी सारी जवाबदेही आपकी होगी।

विस्तृत जानकारी के लिये वेबसाईट www.jharkhandtenders.gov.in एवं कार्यालय की सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

क्र. सं.	कार्य का नाम	प्रखण्ड	पंचायत	ग्राम	प्राक्कलित राशि	परिमाण विपत्र राशि	अग्रधन की राशि	कार्य पूर्ण करने की अवधि	समूह संख्या
1	पढुआ के भौराहा टोला में रेलवे लाईन से मुख्य बस्ती होते हुए राजनाथ पासवान के पराश पेड़ तक पी0सी0सी0 पथ निर्माण।	मेराल	पढुआ	पढुआ	9,86,900.00	1250	19738	03 माह	47
2	ग्राम भण्डार में डिहवार बाबा के भरदुल बियार के घर तक पी0सी0सी0 पथ निर्माण।	मेराल	लोवादाग	भण्डार	8,38,200.00	1250	16764	03 माह	48
3	थाना मोड़ कुर्बान राम के घर से धर्मेन्द्र चन्द्रवंशी के घर तक पी0सी0सी0 पथ निर्माण।	रंका	रंकाकला		4,40,500.00	750	8810	03 माह	57

कार्यपालक अभियंता,
ग्रामीण विकास विशेष प्र.सं.–02, गढ़वा

PR 348069 Rural Development (24-25)_D

कार्यालय : असैनिक शल्य चिकित्सक–सह–मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, गढ़वा (राष्ट्रीय यक्ष्मा उन्मूलन कार्यक्रम, जिला स्वास्थ्य समिति, गढ़वा)

प्रेस विज्ञप्ति

राष्ट्रीय यक्ष्मा उन्मूलन कार्यक्रम, जिला स्वास्थ्य समिति, गढ़वा द्वारा प्रकाशित विज्ञापन संख्या–06/2024–25, दिनांक–14.10.2024 से संविदा आधारित विभिन्न पदों (Pharmacist, STLS, LT & STS) पर नियुक्ति हेतु प्राप्त कुल आवेदन पत्र–145 की संवीक्षा एवं दावा/आपत्ति यो निराकरण के पश्चात कुल–90 अभ्यर्थियों का आवेदन पत्र स्क्रूटनी समिति द्वारा स्वीकार योग्य पाया गया। Pharmacist पद हेतु 18, LT पद हेतु 17, STLS पद हेतु 2 एवं STS पद हेतु 53 अभ्यर्थियों का आवेदन लिखित परीक्षा हेतु स्वीकृत किया गया है। सन्दर्भित सूची गढ़वा जिला के वेबसाईट garhwa.nic.in पर अपलोड किया गया है। साथ ही जिला स्वास्थ्य समिति, गढ़वा कार्यालय के सूचना पट्ट पर भी प्रदर्शित है। **संबंधित योग्य अभ्यर्थियों का लिखित विषय ज्ञान परीक्षा RK CM School of Excellence Girls, Garhwa में (स्टेडियम के बगल में) दिनांक 23.03.2025 (रविवार) को प्रथम पाली में फार्मासिस्ट एवं लैब टेक्निशियन (10 बजे पूर्वाह्न से 11:30 बजे मध्याह्न तक) एवं द्वितीय पाली में STLS एवं STS (2 बजे अपराह्न से 3:30 बजे अपराह्न तक) निर्धारित है।** पालीवार परीक्षा से संबंधित सूची एवं आदेश जिला के वेबसाईट garhwa.nic.in पर अपलोड किया गया है।

लिखित परीक्षा हेतु अभ्यर्थियों को आवश्यक निर्देश :–

1. लिखित परीक्षा के प्रथम पाली के अभ्यर्थियों को पूर्वाह्न 9:00 बजे एवं द्वितीय पाली के अभ्यर्थियों को अपराह्न 01:00 बजे परीक्षा केन्द्र पर उपस्थित होना अनिवार्य होगा।
2. परीक्षा प्रारम्भ होने से 30 मिनट पूर्व उम्मीदवार को अपना–अपना स्थान ग्रहण कर लेना है।
3. परीक्षा आरम्भ होने के बाद किसी भी परिस्थिति में अभ्यर्थियों को परीक्षा में शामिल नहीं किया जायेगा।
4. परीक्षा कक्ष में मोबाईल, कैलकुलेटर एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण लेकर जाना सख्त वर्जित है। इसे परीक्षा केन्द्र पर जमा करने की सुविधा नहीं रहेगी।
5. कोई भी अभ्यर्थी परीक्षा समाप्त होने के पूर्व परीक्षा कक्ष से बाहर नहीं जा सकेगा।
6. परीक्षा हेतु प्रवेश के समय आवेदकों को अपने साथ फोटोयुक्त पहचान पत्र के रूप में आधार कार्ड/वोटर कार्ड/ड्राइविंग लाईसेन्स/पैन कार्ड की स्वहस्ताक्षरित छायाप्रति जिस पर अद्यतन पासपोर्ट साईज फोटो (ऊपर दाहिनी ओर) चिपका हुआ हो, साथ लाना अनिवार्य होगा, जिसे काउंटर/टेबल पर जमा किया जायेगा। काउंटर (टेबल नम्बर) संबंधी सूचना परीक्षा केन्द्र के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित किया जायेगा। तथा उसी काउंटर (टेबल नम्बर) से प्रवेश पर्ची मोहर लगाकर आवेदक को दी जायेगी, जिसे लेकर ही अभ्यर्थी परीक्षा कक्ष में प्रवेश करेंगे। साथ ही मूल पहचान पत्र भी दिखाना अनिवार्य होगा। अन्यथा परीक्षा में शामिल नहीं किया जायेगा।

ह0/–
असैनिक शल्य चिकित्सक–सह–
मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, गढ़वा

PR 348076 Health Med Edu and Family Welfare(24-25)#D

नालंदा में सड़क हादसे में 5 लोगों की मौत

नालंदा, एजेंसी। नालंदा में शुक्रवार की रात 2 अलग-अलग थाना क्षेत्र में शादी समारोह में शामिल होने गए पांच लोगों की सड़क हादसे में मौत हो गई। हादसा एकंगरसराय थाना और हरनौत थाना क्षेत्र में हुई है। जिनमें 3 दोस्त और 2 सगे साढू की मौत हो गई। हिलसा थाना क्षेत्र के बाईपास इलाके में बीती रात शादी समारोह में शामिल होने जा रहे एक ही बाइक पर तीन युवकों की अज्ञात वाहन से कुचल कर मौत हो गई। मृतकों में हिलसा थाना क्षेत्र के पारथु गांव निवासी पप्पू प्रसाद के (20) वर्षीय पुत्र रोहित राज राजनंदन बिन्द के (18) वर्षीय पुत्र दिलशांत कुमार एवं योगेश्वर प्रसाद के (23) वर्षीय पुत्र ओमप्रकाश के रूप में की गई है। घटना के संबंध में परिजन ने बताया कि तीनों युवक एक ही बाइक पर सवार होकर गांव से निकली बारात में शामिल होने के लिए पटना के फरीदपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत अरैया गांव जा रहे थे। इसी बीच हिलसा थाना क्षेत्र के बाईपास इलाके में अज्ञात बोलेरो ने टक्कर मार दी। इस हादसे में तीनों युवक की मौके पर ही मौत हो गई। दिलशांत कुमार क्लास 9वीं क्लास में ओम प्रकाश ग्रेजुएशन पार्ट 3 में जबकि रोहित राज ग्रेजुएशन के पार्ट वन में पढ़ाई कर रहा था।

ऑटो और कार की टक्कर में हुई मौत

वहीं, दूसरी तरफ सीएनजी ऑटो और कार के बीच टक्कर हो गई। जिसके बाद दोनों गाड़ियां करीब 30 फीट नीचे गहरी खाई में चली गई। इस हादसे में दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। मामला हरनौत थाना क्षेत्र अंतर्गत गोनावां पुल के समीप की है। मृतकों की पहचान नूरसराय थाना क्षेत्र के मेयार गांव निवासी स्वर्गीय सरयुग पासवान के (58) वर्षीय पुत्र राम प्रवेश पासवान एवं पटना जिला के सकसोहरा थाना क्षेत्र निवासी स्वर्गीय बच्चू पासवान के (50) वर्षीय पुत्र विवेक कुमार के रूप में की गई है। दोनों रिश्ते में साढू लगते हैं।

घटना के बाद मौके से चालक फरार

घटना के संबंध में परिजन ने बताया कि हरनौत थाना क्षेत्र के बलवापर गांव से शादी समारोह में शामिल होकर ऑटो पर सवार होकर दोनों व्यक्ति लौट रहे थे। तभी गोनावां पुल के समीप कार ने टक्कर मार दी। मौके से ऑटो चालक और कार सवार फरार हो गया। जबकि पानी में डूब कर रामप्रवेश पासवान और विवेक कुमार की मौत हो गई। विवेक कुमार गांव में ही सरकारी शिक्षक के पद पर कार्यरत थे। अंधेरा होने और पुल के समीप पानी ज्यादा होने के कारण शवों को बाहर निकालने में पुलिस को काफी मशक्कत का सामना करना पड़ा। गाड़ी नंबर और पॉकेट में मिले पहचान पत्र के आधार पर मृतक के परिजनों को घटना की जानकारी पुलिस के द्वारा दी गई।

परिजनों से मिलने पहुंचे सांसद

जिले में एक ही रात सड़क हादसे में पांच लोगों की मौत की सूचना मिलने के उपरांत नालंदा सांसद कौशलेंद्र कुमार सदर अस्पताल पहुंचे और परिजनों को दुख की घड़ी में ढांढस बंधाया। इस मामले में हरनौत थाना अध्यक्ष अमरदीप कुमार ने बताया कि राहगीरों के द्वारा घटना की जानकारी गश्ती पुलिस को दी गई। जिसके उपरांत पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और पानी से शव को बाहर निकाला गया।

बेगूसराय में बोलेरो पलटने से एक की मौत, कई घायल

बेगूसराय, एजेंसी। बेगूसराय में एनएच-31 फोरलेन पर देर रात बारात जा रही बोलेरो अनियंत्रित होकर गड्ढे में पलट गई। इस हादसे में एक बराती की मौत हो गई, वहीं आधा दर्जन बराती गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें इलाज के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना लाखो थाना क्षेत्र में शाहपुर टोल प्लाजा के समीप की है। मृतक की पहचान वीरपुर थाना क्षेत्र के बखतपुर निवासी राम शकल महतो के पुत्र राहुल कुमार (16) के रूप में हुई है। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि राहुल कुमार अपने छह दोस्तों के साथ बोलेरो पर सवार होकर बेगूसराय से लखीसराय बारात जा रहा था। इसी दौरान तेज रफ्तार बोलेरो शाहपुर के समीप सामने से आ रहे गाड़ी से चकमा खाकर गड्ढे में पलट गई।

10 फीट नीचे गड्ढे में पलट गई गाड़ी : जिसके कारण एनएच किनारे गड्ढे में पलटते हुए बिजली की पोल से टकराकर क्षतिग्रस्त हो गया। इतना जबरदस्त था कि बोलेरो 10 फीट नीचे गड्ढे में पलट गया। जिसमें राहुल बोलेरो के नीचे दब गया, जिससे उसे काफी देर तक नहीं निकाला जा सका और उसकी मौत हो गई। जबकि अन्य बाराती को स्थानीय लोगों की मदद से निकाल कर इलाज के लिए भेजा गया। इसके बाद स्थानीय लोगों ने घटना की सूचना लाखो थाना को दी। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची लाखो थाना की पुलिस ने जेसीबी के माध्यम से बोलेरो को गड्ढे से निकाला तथा शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेजा जा सका। फिलहाल घटना के बाद परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

संक्षिप्त समाचार

मिड-डे मील रसोइयों से रिश्वत मांगने का आरोप

मोतिहारी में प्रधानाध्यापिका पर 5-5 हजार रुपए मांगने का आरोप, ग्रामीणों ने किया विरोध

मोतिहारी, एजेंसी। मोतिहारी में एक सरकारी स्कूल की प्रधानाध्यापिका पर रिश्वत मांगने का गंभीर आरोप लगा है। कल्याणपुर प्रखंड के राजकीय बुनियादी विद्यालय, माधोपुर गोविंद की घटना है। प्रधानाध्यापिका उषा देवी पर तीन महिला रसोइयों से 5-5 हजार रुपए की मांग का आरोप है। रसोइयों के मुताबिक, ढाई महीने पहले उनकी नियुक्ति हुई थी। इस दौरान न तो उन्हें कोई भुगतान मिला और न ही उनके कागजात मुख्यालय में जमा कराए गए। पैसे नहीं मिलने पर प्रधानाध्यापिका ने तीनों रसोइयों - शोभा देवी, मनीता देवी और सीमा देवी के नियुक्ति संबंधी कागजात वापस लौटा दिए। इससे नाराज ग्रामीणों ने स्कूल में विरोध प्रदर्शन किया। प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी तारनी कुमार दास ने मामले की जांच शुरू कर दी है। उन्होंने पाया कि स्कूल में मध्यान्ह भोजन पंजी खाली थी और कई दिनों से अपडेट नहीं की गई थी। ग्रामीणों ने रसोइयों की नियुक्ति से जुड़े दस्तावेज भी शिक्षा अधिकारी को सौंपे हैं। मामले की शिकायत एसडीओ कार्यालय में भी दर्ज कराई गई है।

पटना में शराब लदी कार ने 5 बारातियों को कुचला

चश्मदीद बोले- किसी का पैर टूटा तो किसी का कमर

पटना, एजेंसी। बिहार में होली को लेकर शराब माफिया शराब की तस्करी खूब कर रहे हैं. इसी कड़ी में पटना के फुलवारीशरीफ में शराब तस्कर की बेलगाम तेज रफ्तार कार से बड़ा हादसा हुआ. देर रात पटना एम्स गोलंबर के पास एक तेज रफ्तार कार ने बारातियों के वाहन में टक्कर मार दी. इस घटना में पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए. पटना में शराब तस्कर गिरफ्तारः घायलों को तुरंत एक निजी नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज जारी है. मौके पर मौजूद बाराती धीरेंद्र कुमार ने कहा कि हादसे के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने सक्रियता दिखाते हुए कार का पीछा कर पकड़ लिया. एक तस्कर को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है. बताया जा रहा है कि कार में दो नंबर प्लेट है. जो जांच में बिहार और झारखंड का नंबर प्लेट पता चला है. कार में भारी मात्रा में अवैध शराब भरी हुई थी. बाराती धीरेंद्र कुमार ने बताया कि ÷एक अवैध शराब से लदी कार ने बारातियों से भरी गाड़ी में टक्कर मार दी है, जिससे पांच लोग बुरी तरह घायल हो गए हैं. किसी के पैर टूट गए तो किसी का कमर टूट गया. कार से पुलिस ने भारी मात्रा में शराब बरामद की है.

बेगूसराय में लगेगा रंग कर्मियों का मेला: 21 से 26 मार्च तक आयोजित होगा राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव, महाराष्ट्र

नई दिल्ली और पश्चिम बंगाल से पहुंचेंगे कलाकार

बेगूसराय, एजेंसी। बिहार में रंगकर्म और साहित्य की राजधानी कहे जाने वाले बेगूसराय में एक बार फिर देशभर के विभिन्न हिस्सों के रंग कर्मियों का मेला लगने जा रहा है। बेगूसराय में यह मेला राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव को लेकर लगेगा। दरअसल जिला मुख्यालय के दिनकर भवन में 21 से 26 मार्च तक दसवां आशीर्वाद राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव का आयोजन होने जा रहा है।जिसमें बेगूसराय ही नहीं, महाराष्ट्र, नई दिल्ली और पश्चिम बंगाल सहित अन्य जगहों की नामचीन संस्थाओं द्वारा 6 नाटकों की प्रस्तुति की जाएगी। कार्यक्रम की तैयारी अंतिम चरण में है। फेस्टिवल डायरेक्टर अमित रोशन ने बताया कि 21 मार्च की शाम देश के चर्चित नाट्य निदेशक और समीक्षकों की उपस्थिति में दिनकर भवन में नाटय समारोह का शुभारंभ होगा।

कार्यक्रम का स्वरूप

पहले दिन बेगूसराय के आशीर्वाद रंग मंडल द्वारा डॉ. अमित रोशन के निर्देशन में मृणाल ठाकुर लिखित नाटक पश्मीना का मंचन कर इस राष्ट्रीय महोत्सव का आगाज किया जाएगा। दूसरे दिन 22 मार्च को यूनिकॉर्न थिएटर नई दिल्ली द्वारा हैप्पी रंजीत के निर्देशन में ऑल माय सन नाटक का मंचन किया जाएगा। तीसरे दिन 23 मार्च को पश्चिम बंगाल की चर्चित नाट्य संस्था कोलकाता के हजारा वाला टीम द्वारा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित लेखक चंदन सेन के निर्देशन में अनिकेत संध्या नाटक का मंचन किया जाएगा। चौथे दिन 24 मार्च को रंग सृजन बेगूसराय द्वारा सचिन कुमार के निर्देशन में प्रदीप बिहारी लिखित मैथिली नाटक कांट का मंचन होगा। पांचवें दिन 25 मार्च को रागा पटना द्वारा रंधीर कुमार के निर्देशन में ऋषिकेश सुलभ लिखित नाटक स्मॉल टाउन जिंदगी का मंचन होगा। समारोह के अंतिम दिन 26 मार्च को महाराष्ट्र के स्वतंत्र थियेटर पुणे द्वारा अभिजीत चौधरी के निर्देशन में हमीदा बाई की कोठी नाटक का मंचन किया जाएगा। इसके साथ-साथ देशभर में ख्याति प्राप्त नाट्य निदेशक, नाट्य समीक्षक, फिल्म अभिनेता के आने की स्वीकृति मिली है। सभी लोग 6 दिन यहीं रहेंगे, नाटक देखेंगे। राष्ट्रीय नाट्य समारोह के माध्यम से बेगूसराय के दर्शक देशभर के रंग संस्कृति से परिचित होंगे। बेगूसराय में लंबे समय से रंग आंदोलन और रंग प्रदर्शन होते रहा है। 1996 में आशीर्वाद रंग मंडल से जुड़े और देश के विभिन्न शहरों में जाकर नाट्य समारोह देखने जाते थे। तभी इच्छा जगी थी कि किस तरह से अन्य प्रदेशों और राजधानियों में विभिन्न राज्यों की नाट्य संस्थाएं नाटक करती है। संसाधन मिला तो हम भी बेगूसराय के रंग दर्शकों को अलग-अलग राज्यों के नाट्य दर्शकों को मंचन दिखाएंगे। इसके बाद 2010 में बेगूसराय में पहली बार आशीर्वाद रंग मंडल द्वारा राष्ट्रीय नाट्य समारोह की शुरूआत किया गया। उसके बाद से हमारा यह प्रयास लगातार जारी है। बीच में कोरोना सहित कुछ बाधाएं आई और अब 10वें राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

हिंदू-मुस्लिम के नाम पर बंटवारा करा रही कांग्रेस-राजद

हाजीपुर (वैशाली), एजेंसी। केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान गुरुवार की देर रात हाजीपुर पहुंचे। जहां उन्होंने कांग्रेस और राजद पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि ये पार्टियां समाज में हिंदू-मुस्लिम के नाम पर बंटवारा करवा रही हैं। चिराग पासवान ने कहा कि इन पार्टियों के लिए सेक्युलरिज्म का मतलब सिर्फ तुष्टिकरण की राजनीति है। वे एक धर्म विशेष के लोगों की वाह-वाही करते हैं और उनकी गलतियों पर पर्दा डालते हैं। उन्होंने कहा कि राजद, सपा और कांग्रेस ने हिंदू-मुस्लिम के नाम पर तुष्टीकरण करके देश और समाज का नुकसान किया है। प्रशांत किशोर के राघोपुर से चुनाव लड़ने के सवाल पर उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति स्वतंत्र है। जनता को ही फैसला करना है। शराबबंदी के मुद्दे पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि गठबंधन में पहले से ही ताड़ी और नीरा को शराब की श्रेणी से हटाने की मांग की जा रही है। बिहार फर्स्ट बिहारी फर्स्ट की सरकार बनने पर इसे गंभीरता से लागू किया जाएगा। बता दें कि चिराग पासवान हाजीपुर में एक पत्रकार की बेटी की शादी में भी शामिल हुए और उन्हें आशीर्वाद दिया।

प्रशांत किशोर की राह पर तेजस्वी यादव ! बोले- सरकार में आते ही ताड़ी से प्रतिबंध हटा देंगे

पटना, एजेंसी। बिहार विधानसभा में विरोधीदल के नेता और पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने जहां एक ओर युवाओं को भरोसा दिलाया है कि उनकी सरकार बनने पर बिहार में 100 प्रतिशत डोमिसाइल नीति लागू होगा. वहीं दूसरी तरफ तेजस्वी यादव ने आज घोषणा करते हुए कहा कि उनकी सरकार बनने पर बिहार में ताड़ी पर लगा प्रतिबंध खत्म होगा.

ताड़ी से हटाएंगे प्रतिबंध

तेजस्वी यादव ने कहा कि बिहार में पासी समाज के लोगों का मुख्य पेशा ताड़ी से जुड़ा हुआ है. पासी समाज की आय का मुख्य साधन ताड़ी है. तेजस्वी यादव ने कहा कि बिहार में शराबबंदी के बाद ताड़ी की खरीद-बिक्री पर भी रोक लगा दिया गया था. उनकी सरकार बनने के बाद 2016 जो ताड़ी पर प्रतिबंध लगाया गया उसको हटाने का काम किया जाएगा. तेजस्वी यादव ने कहा कि हमलोग बिहार में शराबबंदी के खिलाफ नहीं है, लेकिन ताड़ी एक नेचुरल प्रोडक्ट है. तारी के रोजगार से पासी समाज के लोग कई पीढ़ियों से जुड़े हुए हैं. इसलिए उन लोगों का दर्द है कि इस व्यवसाय से उन लोगों को नहीं हटाया जाए. यही कारण है कि हमलोगों ने यह निर्णय लिया है कि हमारी सरकार बनने के बाद ताड़ी पर लगाया गया प्रतिबंध हटाया जाएगा. जब लालू प्रसाद की सरकार थी तो बिहार में तारीख को टैक्स फ्री किया गया था.

जहरीली शराब से लोगों की मौत : तेजस्वी यादव ने आरोप लगाया कि शराबबंदी के बाद 2000 से अधिक लोग जहरीली शराब पीने से मारे गए हैं. तेजस्वी यादव ने कहा कि बिहार में कानून व्यवस्था नाम की चीज नहीं रह गई है. नीतीश कुमार अचेत अवस्था में चले गए हैं.

शराबबंदी के बाद बिहार में 12 लाख 39 हजार से अधिक लोगों की गिरफ्तारी हुई है. इसमें 90प्रतिशत से अधिक लोग अति पिछड़ा एवं दलित समाज के लोगों को गिरफ्तार किया गया है. 8 लाख 47 हजार 907 मामला दर्ज किया गया है. दर्ज मामले के आधार पर गणना की जाए तो 400 से अधिक लोगों की प्रतिदिन गिरफ्तारी हो रही है. हर घंटे 8 लोगों की गिरफ्तारी हो रही है.

बिहार में अपराधियों की बहार है

तेजस्वी यादव ने कहा कि सदन में जब वह बोल रहे थे तो मुख्यमंत्री सदन से गायब थे. जब मैं मुख्यमंत्री से पूछा कि आपका मंत्रियों का नाम आपको मालूम है क्या आपको अपने उपमुख्यमंत्री का नाम मालूम है. इस पर कोई जवाब नहीं. तेजस्वी यादव ने कहा कि बिहार में अपराधियों की बहार है. खुद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अपराधियों को जेल से छुड़वाने का काम करते हैं.

एजेंडा में युवा और रोजगार

तेजस्वी यादव ने कहा कि वे बिहार में नौकरी, पलायन, बेरोजगार नौजवानों के लिए फ्री में फॉर्म भरने की बात कही है. तेजस्वी यादव ने कहा कि वह पेपर लीक की बात उठा रहे हैं. नीतीश कुमार पर निशाना चाहते हुए तेजस्वी यादव ने कहा कि 2005 से पहले न चांद था न तारा था. न दिन होती थी ना रात होती थी. तेजस्वी यादव ने कहा कि उन्होंने दो बार नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री बनाने में मदद की. जहां तक लालू प्रसाद का सवाल है तो लालू प्रसाद ने देश में कई प्रधानमंत्री को बनाया है.

मैं किसी पार्टी का नहीं, हिंदुत्व का विचारक हूं, 8 मार्च को लगेगा दिव्य दरबार: धीरेंद्र शास्त्री

गोपालगंज, एजेंसी। गोपालगंज में धीरेंद्र शास्त्री हनुमंत कथा कर रहे हैं। 5 दिवसीय कथा का आज दूसरा दिन है। आज करीब 40 से 50 हजार भीड़ जुटने की उम्मीद जताई जा रही है। बाबा का कथा सुनने के लिए 100 किमी दूर छपरा, सीवान से भक्त यहां आ रहे हैं। कथा के पहले दिन धीरेंद्र शास्त्री ने कहा, मेरे बिहार आने से बहुत लोगों के पेट में दर्द हो रहा है। लेकिन मैं किसी पार्टी का विचारक नहीं हूं, मैं हिंदुत्व का विचारक हूं। यह राम का देश है। यदि यहां कथा नहीं सुना सकते तो फिर कहां सुनाएंगे? जब तक मेरे तन में प्राण हैं, मैं हिंदुओं के लिए जीउंगा और हिंदुओं के लिए ही मरूंगा।

बिहार हमारा है, जब तक जिंदा हूं, तब तक बिहार आऊंगा : उन्होंने आगे कहा, बिहार हमारा है, जब तक जिंदा हूं, तब तक बिहार आऊंगा। मुझे कोई बिहार आने से रोकेगा तो यहां मठ बना लूंगा। घर बना लूंगा। मार दोगे तो फिर बिहार में जन्म लूंगा। छेड़ोगे तो छोड़ूंगा नहीं। ठठरी

के बरे, नकटा, मूसरचंक, हलवानाथ तुम्हारे बाप का देश है जो मुझे मारेगे।

8 मार्च को लगेगा दिव्य दरबार : पंडित धीरेंद्र शास्त्री 5 दिन के बिहार दौरे पर हैं। गुरुवार को गोपालगंज में उनकी हनुमंत कथा का पहला दिन था। शाम करीब सवा 5 बजे के बाद कथा शुरू हुई थी। धीरेंद्र शास्त्री कल यानी की 8 मार्च को गोपालगंज में दिव्य दरबार लगाएंगे, इसमें करीब 70 हजार से 1 लाख तक भीड़ जुटने की उम्मीद है।

पंडाल में 2 लाख लोगों के बैठने की क्षमता : बागेश्वरी धाम के धीरेंद्र शास्त्री 10 मार्च तक बिहार में रहेंगे। धीरेंद्र शास्त्री गोपालगंज के भोरे प्रखंड स्थित राम जानकी मठ में हनुमंत कथा कर रहे हैं। दोपहर के 3 बजे से कथा की शुरुआत हो रही है। 60 एकड़ में इसके लिए पंडाल बनाया गया है। जिसमें 2 लाख लोग एक साथ बैठने की व्यवस्था है।

5 जगहों पर पार्किंग की व्यवस्था : पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री की कथा को लेकर कथा स्थल के आसपास 5 जगह पर पार्किंग की व्यवस्था की गई है। इसमें राधागंज मठ, सईया देवी मंदिर (मध्य विद्यालय राधागंज), लखराव फिल्ड, कल्याणपुर स्कूल शामिल हैं। वीआईपी के लिए पार्किंग की व्यवस्था बारह बीघा मैदान में की गई है। इसके अलावा पप्पू कुमार के खेत सईया देवी मंदिर के सामने पेड पार्किंग की व्यवस्था होगी।

मधेपुरा जेल अधीक्षक पर प्रताड़ना का आरोप

मधेपुरा, एजेंसी। मधेपुरा मंडल कारा के जेल अधीक्षक संजय कुमार के खिलाफ मानसिक रूप से प्रताड़ित करने और गाली-गलौज के गंभीर आरोप लगे हैं। इस मामले में अब सबकी नजरें जांच टीम पर टिकी हैं। डीएम तरनजोत सिंह ने जिला आपूर्ति पदाधिकारी, अनुमंडल पदाधिकारी और अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी को जांच कर रिपोर्ट सौंपने के निर्देश दिए हैं। जांच टीम के अध्यक्ष डीएसओ शंकर शरण ने बताया कि उन्हें गुरुवार को जांच से संबंधित पत्र प्राप्त हुआ है और एक सप्ताह के भीतर रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी। दरअसल, जेलर संजय कुमार गुप्ता और जेल चिकित्सक डॉ. सुशील कुमार सहनी ने मानसिक प्रताड़ना के आरोप लगाते हुए डीएम, एसपी, मानवाधिकार आयोग और पीएमओ तक अपनी शिकायत भेजी है। जेलर संजय गुप्ता का कहना है कि जेल अधीक्षक उनको बेवजह प्रताड़ित करते हैं। अधीनस्थ कर्मियों के सामने जलील करते हैं। संजय गुप्ता ने बताया कि लगातार प्रताड़ना के कारण उन्हें अपनी जान का खतरा महसूस हो रहा है। उन्होंने बताया कि 15 फरवरी को जेल अधीक्षक ने उन्हें आवास पर बुलाकर इतना दुर्व्यवहार किया कि उन्हें हार्ट अटैक आ गया। इसके बाद उन्हें मेडिकल कॉलेज के आईसीयू में भर्ती कराना पड़ा। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे एक ऑडियो में जेल अधीक्षक किसी को कह रहे हैं कि अगर जेलर मेरे ऑफिस में आए तो उसे धक्का देकर बाहर निकाल दो। ऑडियो में जेलर को भद्दी-भद्दी गलियां देते हुए भी सुना जा सकता है। इस मामले पर जेल अधीक्षक संजय कुमार ने कहा कि यह जांच का विषय है। जांच के बाद मामला क्लियर हो जाएगा।

भोजपुर में पिता-पुत्री को युवकों ने पीटा:जख्मी ने लगाया मारपीट और छेड़खानी का आरोप

अस्पताल में इलाज जारी

आरा(भोजपुर), एजेंसी। भोजपुर जिले के गजराजगंज ओपी क्षेत्र के बरगही गांव में गुरुवार को छेड़खानी का विरोध करने पर गांव के युवकों ने पिता-पुत्री की जमकर पिटाई कर दी गई। जिससे दोनों गंभीर रूप से जख्मी हो गए।इसके बाद अन्य लोगों के बीच बचाव के बाद डायल 112 नंबर पुलिस वाहन द्वारा उन्हें इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। जानकारी के अनुसार ज़ख्मियों में गजराजगंज ओपी क्षेत्र के बरगही गांव निवासी 50 वर्षीय भगवान महतो एवं 18 वर्षीया उनकी पुत्री जया कुमारी है।

पिता-पुत्री को युवकों ने पीटा : जया कुमारी ने बताया कि गांव के ही कुछ युवक के उसके साथ बराबर टोन बाजी और छेड़खानी करने की कोशिश करते थे लेकिन कर नहीं पाते थे। गुरुवार की शाम जब वह अपने दरवाजे पर बैठी थी। तभी उक्त युवक अपने अन्य साथियों के साथ वहां आए और उसके साथ छेड़खानी करने लगे।

जब उसने इसका विरोध किया तो उनके द्वारा उसकी जमकर पिटाई कर दी गई। घटना की सूचना पाकर जब उसके पिता भगवान महतो बीच बचाव करने गए तो उक्त युवकों उनकी भी पिटाई कर दी।

युवती के सिर पर गहरा निशान : बदमाश युवकों ने पित-पुत्री को काफी देरी तक बेहरमी से पिटाई करते रहे। युवकों ने युवती के सिर पर काड़ा से मारकर जख्मी कर दिया है। वहीं, ऑन ड्यूटी चिकित्सक अमन ने बताया कि युवती के ललाट पर जख्म का गहरा निशान था जबकि उसके पिता के शरीर में चोट के निशान थे।

दूसरी तरफ जख्मी जया कुमारी ने गांव के ही संदीप,सुधीर,सुजीत,अंकुश एवं विशाल सहित उनके साथ रहे अन्य दोस्तों पर छेड़खानी का विरोध करने पर काड़ा एवं डंडों से मारकर खुद को एवं अपने पिता को जख्मी करने का आरोप लगाया है। बाहर पुलिस अपने स्तर से मामले की छानबीन कर रही है।

रोसरा विधायक ने सदन में जिले के लिए रखी मांग:सदन में क्रिकेट और फुटबॉल स्टेडियम का उठाया मुद्दा

समस्तीपुर, एजेंसी। समस्तीपुर जिले के रोसरा विधानसभा क्षेत्र के भाजपा विधायक वीरेंद्र कुमार ने विधानसभा के बजट सत्र के दौरान शिवाजीनगर प्रखंड के जाखर धरमपुर पंचायत में क्रिकेट स्टेडियम एवं फुटबॉल स्टेडियम बनाने की मांग रखी। विधायक बीरेंद्र कुमार ने कहा कि जाखर धरमपुर पंचायत में क्रिकेट एवं फुटबॉल मैदान के लिए पर्याप्त जगह है। जहां पर स्टेडियम बनाया जा सकता है स्टेडियम बनाने से इस इलाके में खेल को बढ़ावा मिलेगा जिससे ग्रामीण प्रतिभाएं उभर कर सामने आएगी। उन्होंने कहा कि पंचायत की आबादी करीब 15 हजार के आसपास है लेकिन यहां स्टेडियम की अभाव है। क्रिकेट स्टेडियम और फुटबॉल स्टेडियम बन जाने से जाखर धरमपुर पंचायत सहित आसपास के पंचायत एवं गांव के लोगों को फायदा मिलेगा। स्टेडियम बन जाने से युवाओं के लिए काफी लाभदायक होगा। रोसड़ा विधायक बीरेंद्र कुमार ने विधानसभा सत्र में एनएच 527 ई रोसड़ा रामनगर दरभंगा एवं पटना पूर्णिया एक्सप्रेसवे पर औद्योगिक परिक्षेत्र विकसित करने की भी मांग की। विधायक बीरेंद्र कुमार ने कहा कि जनहित के मुद्दे को लगातार सदन में उठाने का काम करते हैं और उन्होंने कहा की समस्याओं का निराकरण भी कराते हैं। इस पहल का भाजपा पूर्व प्रदेश महामंत्री सुशील कुमार चौधरी, पूर्व जिला मंत्री सह विधायक प्रतिनिधि शिवाजीनगर अनिल कुमार सिंह, पश्चिमी मंडल अध्यक्ष संतोष कुमार बबली, पूर्वी मंडल अध्यक्ष ललित कुमार झा, भाजपा कार्यकर्ता नवीन कुमार सिंह, समेत अन्य लोगों के प्रति आभार प्रकट किया।

माननीय उच्च न्यायालय एवं माननीय व्यवहार न्यायालय, जामताड़ा में लंबित वादों की हुई समीक्षा; शीघ्र निष्पादन हेतु दिए गए निर्देश

लंबित वादों के निष्पादन को लेकर उपायुक्त ने की समीक्षा बैठक

निज संवाददाता | जामताड़ा

जामताड़ा जिले में उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी कुमुद सहाय की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसमें माननीय व्यवहार न्यायालय, जामताड़ा एवं माननीय उच्च न्यायालय, झारखंड, रांची द्वारा पारित अपराधिक वादों में दोषमुक्ति आदेश या दोषसिद्ध आदेश से जुड़े मामलों की समीक्षा की गई। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य जिला स्तर पर लंबित मामलों के शीघ्र निपटारे को सुनिश्चित करना था, ताकि न्यायिक प्रक्रिया को अधिक सुचारू और प्रभावी बनाया जा सके। बैठक के दौरान उपायुक्त ने उच्च न्यायालय और व्यवहार न्यायालय में लंबित मामलों जैसे कि कंटेम्प्ट केस, रिप्रेजेंटेशन मैटर, रिट याचिकाओं आदि की विभागवार एवं कार्यालयवार गहन समीक्षा की। उन्होंने प्रत्येक विभाग से संबंधित लंबित वादों की जानकारी ली और उनके निष्पादन में आ रही बाधाओं को समझने का प्रयास किया। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया कि सभी संबंधित अधिकारियों को लंबित मामलों के शीघ्र निपटारे के लिए प्राथमिकता के आधार पर कार्य करना होगा। इसके अतिरिक्त, उपायुक्त ने न्यायालय से जुड़े नीलाम पत्रों की भी समीक्षा की। इसमें अनुमंडल स्तर, नीलाम पत्र, परिवहन, विधि, भूमि सुधार, अंचल एवं प्रखंड अंतर्गत लंबित वादों का विशेष रूप से आकलन किया गया। समीक्षा के दौरान उन्होंने पाया कि कई मामले वर्षों से लंबित पड़े हैं, जिससे प्रशासनिक प्रक्रिया प्रभावित हो रही है। उपायुक्त ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि लंबित वादों के निपटारे के लिए प्रभावी रणनीति अपनाई जाए और जहां आवश्यक हो, वहां विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने कहा कि मामलों को लंबे समय तक लंबित रखना न केवल न्यायिक प्रक्रिया को प्रभावित करता है, बल्कि आम नागरिकों को भी परेशानी का सामना करना पड़ता है। इस बैठक में राष्ट्रीय लोक अदालत के तहत अधिक से अधिक मामलों के निष्पादन को लेकर भी विस्तृत चर्चा हुई।

उपायुक्त ने अधिकारियों से आग्रह किया कि वे पक्षकारों को लोक अदालत में अपने मामले लाने के लिए प्रेरित करें, ताकि विवादों का त्वरित समाधान हो सके। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से मामलों का निपटारा करने से प्रशासन को राजस्व वसूली में मदद मिलेगी, वहीं दूसरी ओर न्यायालयों में बढ़ते मुकदमों के बोझ को भी कम किया जा सकेगा। इसके लिए उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे अपने स्तर से पक्षकारों को नोटिस जारी करें और उन्हें लोक अदालत में अपने मामले सुलझाने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि लोक अदालत आम नागरिकों को न्याय दिलाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है और इसका अधिकतम लाभ उठाने की आवश्यकता है। बैठक के दौरान उपायुक्त ने अधिकारियों से यह भी सुनिश्चित करने को कहा कि वे अपने विभाग से जुड़े मामलों का विस्तृत अध्ययन करें और उनकी अद्यतन स्थिति से अवगत रहें। उन्होंने यह निर्देश दिया कि जहां जरूरत हो, वहां समन्वय स्थापित कर शीघ्र कार्रवाई की जाए, ताकि लंबित मामलों का त्वरित समाधान संभव हो सके। इस महत्वपूर्ण बैठक में जिले के कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे, जिनमें पुलिस अधीक्षक एहतेशाम वकारीब, उप विकास आयुक्त निरंजन कुमार, जिला परिवहन पदाधिकारी मनोज कुमार, जिला नीलाम पत्र पदाधिकारी, विधि शाखा के प्रभारी पदाधिकारी सुजीत कुमार सिंह, जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग के सदस्य मो. रिजवान उल हक, संचिता दान सहित संबंधित प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं अंचल अधिकारी शामिल रहे। बैठक में अधिकारियों ने अपनी-अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की और लंबित वादों के समाधान के लिए उठाए गए कदमों के बारे में जानकारी दी।

बैठक में उपायुक्त ने दिया सभी निजी अस्पतालों एवं क्लीनिकों का सीईए के तहत जांच करने का निर्देश

निज संवाददाता | जामताड़ा

उपायुक्त सह अध्यक्ष, जिला स्वास्थ्य समिति कुमुद सहाय की अध्यक्षता में झारखंड स्टेट क्लिनिकल एस्टेब्लिशमेंट (रजिस्ट्रेशन एंड रेगुलेशन) रूल्स 2013 के तहत गठित जिला निबंधन प्राधिकरण समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक को संबोधित करते हुए उपायुक्त ने जिले में उक्त के तहत निबंधित संस्थानों के संदर्भ में जानकारी ली एवं संबंधित अधिकारी को निर्देश दिया कि सभी प्राईवेट अस्पतालों एवं क्लीनिकों का सी0ई0ए0 के तहत जाँच कर वास्तविक स्थिति से उन्हें अवगत करायेंगे। उपायुक्त ने कहा कि दिनांक 03.03.2025 को निरीक्षण के क्रम में पारस अस्पताल, जामताड़ा एवं परमानंद अस्पताल, जामताड़ा में पाये गये त्रुटियों से संबंधित कारण पृच्छा करेंगे एवं नियमानुसार कार्रवाई करना सुनिश्चित करेंगे। इसके अलावा उपायुक्त ने निर्देश देते हुए कहा कि क्लिनिकल एस्टेब्लिशमेंट के तहत नवीन पंजीकरण एवं नवीनीकरण से पूर्व अस्पताल एवं क्लीनिक का जाँच करें तत्पश्चात ही प्रमाणपत्र निर्गत करेंगे। वहीं इसके अतिरिक्त उपायुक्त, जामताड़ा के द्वारा निर्देश दिया गया, कि प्रतिमाह कम-से-कम 05 बड़े एवं 05 छोटे अस्पताल एवं क्लीनिक का निरीक्षण कर नियमानुसार कार्रवाई करना सुनिश्चित करें। वहीं आई0एम0ए0 के प्रतिनिधि को अपने स्तर से भी क्लिनिकल एस्टेब्लिशमेंट एक्ट के तहत अनुपालन करने हेतु प्राईवेट अस्पताल एवं क्लीनिक को निर्देश देने हेतु कहा गया। बैठक में सर्विलेंस मेडिकल ऑफिसर, WHO डॉ अमित कुमार तिवारी द्वारा सभी बिंदुओं पर उपायुक्त को जानकारी दी गई। मौके पर संबंधित पदाधिकारी कर्मी उपस्थित थे।

बाल श्रम कानूनी अपराध : डालसा

पथरगामा के बांसभीठा व पिपरा गांव में न्याय आपके द्वार कार्यक्रम आयोजित

निज संवाददाता | गोड्डा

गोड्डा जिले के पथरगामा प्रखंड के पीपरा और बांसभीठा गांव में शुक्रवार को राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (डालसा) के तत्वावधान में 'न्याय आपके द्वार' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीणों को उनके कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक करना और उन्हें विधिक सहायता के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्रदान करना था।गोड्डा जिले के पथरगामा प्रखंड के पीपरा और बांसभीठा गांव में शुक्रवार को राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (डालसा) के तत्वावधान में 'न्याय आपके द्वार' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीणों को उनके कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक करना और उन्हें विधिक सहायता के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्रदान करना था। डालसा द्वारा गठित टीम में शामिल दिलीप कुमार यादव और मीनू बेसरा ने गांव-गांव जाकर लोगों से बातचीत की और उन्हें बाल श्रम, मानव तस्करी, बाल विवाह, महिला अधिकार और कानूनी सहायता सेवाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने ग्रामीणों को बताया कि बच्चों को शिक्षा का अधिकार प्राप्त है और उन्हें नियमित रूप से स्कूल भेजना आवश्यक है। उन्होंने बाल मजदूरी के दुष्प्रभावों पर जोर देते हुए कहा कि कम उम्र के बच्चों से किसी भी प्रकार की मजदूरी कराना कानूनी अपराध है। बाल श्रम निषेध अधिनियम के तहत दोषी पाए जाने पर कड़ी सजा का प्रावधान है, इसलिए अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों को स्कूल भेजें और उन्हें शिक्षित करें। टीम ने ग्रामीणों को यह भी बताया कि सरकार द्वारा बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। सरकारी स्कूलों में मध्याह्न भोजन, मुफ्त किताबें, छात्रवृत्ति और पोशाक की सुविधा दी जा रही है, ताकि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रह सके। उन्होंने कहा कि बच्चों को स्कूल भेजने से न केवल उनका भविष्य उज्ज्वल होगा, बल्कि समाज भी प्रगति करेगा। कार्यक्रम के दौरान महिला अधिकारों, सामाजिक न्याय और कानूनी सहायता सेवाओं पर भी चर्चा की गई।

ग्रामीणों को यह जानकारी दी गई कि यदि किसी महिला, गरीब व्यक्ति, वृद्ध, वंचित वर्ग, विकलांग व्यक्ति या किसी बंदी को कानूनी सहायता की आवश्यकता होती है, तो डालसा के माध्यम से मुफ्त कानूनी सहायता प्रदान की जाती है। जरूरतमंद व्यक्ति को न्याय पाने के लिए आर्थिक तंगी के कारण कोई बाधा न हो, इसे सुनिश्चित करने के लिए विधिक सेवा प्राधिकरण कई योजनाएं चला रहा है। इसके अलावा, कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामीणों को 8 मार्च को आयोजित होने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत के संबंध में भी जानकारी दी गई। ग्रामीणों को बताया गया कि इस लोक अदालत में विभिन्न प्रकार के मामलों का त्वरित और सौहार्दपूर्ण समाधान किया जाता है। छोटे-मोटे विवादों, भूमि विवाद, बैंक ऋण, बिजली बिल, पानी बिल, आपराधिक मामलों के समझौतों और पारिवारिक विवादों को राष्ट्रीय लोक अदालत में बिना लंबी कानूनी प्रक्रिया के सुलझाया जा सकता है। ग्रामीणों को प्रोत्साहित किया गया कि वे इस लोक अदालत में भाग लें और अपने लंबित मामलों का शीघ्र समाधान करवाएं। कार्यक्रम के दौरान कई ग्रामीणों ने अपनी व्यक्तिगत समस्याएं भी साझा कीं, जिनका समाधान करने के लिए टीम ने विधिक सहायता के विभिन्न विकल्पों की जानकारी दी। इस पहल से गांव के लोगों में कानूनी जागरूकता बढ़ी और वे अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुए। कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए ग्रामीणों ने डालसा टीम का आभार व्यक्त किया और कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से न केवल उन्हें अपने अधिकारों की जानकारी मिलती है, बल्कि वे अपनी समस्याओं के समाधान के लिए उचित मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकते हैं। लोगों ने मांग की कि ऐसे जागरूकता अभियान भविष्य में भी जारी रखे जाएं, ताकि समाज के हर वर्ग को न्याय और विधिक सहायता का लाभ मिल सके।

सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ

निज संवाददाता | मसलिया (दुमका)

मसलिया प्रखंड के बलियाजोड़ में शुक्रवार को श्रद्धा और भक्ति के साथ सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर 108 कन्याओं और महिलाओं ने भव्य कलश शोभायात्रा निकाली, जिसमें सैकड़ों ग्रामीणों ने भाग लिया। शोभायात्रा पूरे गांव का भ्रमण करते हुए चांदना नदी पहुंची, जहां श्रद्धालुओं ने विधिपूर्वक जल भरकर 'जय जय श्री राधे' के उद्घोष के साथ कलश को यज्ञशाला में स्थापित किया। इस सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का वाचन श्रीधाम वृंदावन के प्रसिद्ध कथा वाचक अतुल कृष्ण शास्त्री महाराज द्वारा किया जाएगा। कथा 8 मार्च से 15 मार्च तक आयोजित की जाएगी, जिसमें प्रतिदिन भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं और भागवत महापुराण के गुढ़ रहस्यों का प्रवचन किया जा रहा है। कथावाचक अतुल कृष्ण शास्त्री महाराज ने श्रीमद्भागवत महापुराण की महिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसे सभी ग्रंथों में सर्वोत्तम माना गया है। उन्होंने बताया कि श्रीमद्भागवत केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मानव जीवन को सही दिशा दिखाने वाला दिव्य ज्ञान है।

सड़क हादसे में दो लोग गंभीर रूप से घायल

बसंतराय (नि.सं.)। थाना क्षेत्र के मेदनीचक मुख्य मार्ग पर मेदनीचक गांव में गुरुवार की देर शाम टोटो और बाइक की आमने सामने से जोरदार टक्कर हो गई जिसमें बाइक सवार दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए, जबकि टोटो चालक अपनी टोटो लेकर भागने में सफल रहा। वहीं घटना की सूचना बसंतराय थाना को मिली जिसके बाद बसंतराय पुलिस घटना स्थल पर पहुंची और दोनों घायलों को इलाज के लिए पथरगामा अस्पताल में भर्ती कराया। वहीं प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि बसंतराय की तरफ से तेज रफ्तार से आ रही बाइक ने पथरगामा की ओर से आ रहे टोटो की आमने सामने जोरदार टक्कर हो गई।

राष्ट्रीय लोक अदालत आज, 11 न्यायिक बेंच गठित

निज संवाददाता | गोड्डा

झारखंड विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देश पर शनिवार को व्यवहार न्यायालय परिसर में सुलहनीय मामले के निष्पादन को लेकर राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। मामले के त्वरित निष्पादन को लेकर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से 11 न्यायिक बेंच का गठन किया गया है। प्रथम न्यायिक बेंच पर परिवार वाद, मेट्रीमोनियल वाद एवं भादवि की धारा 125 से संबंधित मामले की सुनवाई होगी। इसकी सुनवाई परिवार न्यायालय के प्रधान जज अनिल कुमार पांडेय एवं डिप्टी एलएडीसी अजीत कुमार करेंगे। दूसरे न्यायिक बेंच पर एमएसीटी से संबंधित मामले की सुनवाई होगी। इसकी सुनवाई जिला जज प्रथम कुमार पवन एवं डिप्टी एलएडीसी रीतेश कुमार करेंगे। तृतीय न्यायिक बेंच पर बिजली, सिविल अपील, क्रिमिनल अपील, राजस्व के मामले, श्रम वाद सहित अन्य ट्रिव्यूनल के मामले की सुनवाई होगी। इसकी सुनवाई जिला जज द्वितीय निरुपम कुमार एवं चीफ एलएडीसी संजय कुमार सहाय करेंगे। चौथे न्यायिक बेंच पर सीजेएम कोर्ट से संबंधित मामले की सुनवाई होगी। इसकी सुनवाई मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी अर्जुन साव एवं एलएडीसी राहुल कुमार करेंगे। पांचवीं न्यायिक बेंच पर सबजज चतुर्थ एवं प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी मुक्ति भगत के कोर्ट से संबंधित मामले का निष्पादन होगा। इसकी सुनवाई सबजज चतुर्थ नरेन्द्र कुमार एवं पैनल अधिवक्ता शेखर चंद्र चौधरी करेंगे। छठे न्यायिक बेंच पर एसीजेएम प्रताप चंद्रा एवं सबजज तृतीय रेमी प्रफुल्ल बा के कोर्ट से संबंधित मामले की सुनवाई होगी। इसकी सुनवाई सबजज तृतीय रेमी प्रफुल्ल बा एवं एलएडीसी आयुष राज करेंगे। सातवें न्यायिक बेंच पर प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी राज कल्याण कोर्ट से संबंधित मामले की सुनवाई होगी।

इसकी सुनवाई प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी राज कल्याण एवं पैनल अधिवक्ता अरविंद कुमार गुप्ता करेंगे। आठवें न्यायिक बेंच पर प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी शालिद रसीद अलि एवं सतीश कुमार मुंडा के न्यायालय से संबंधित मामले की सुनवाई होगी। इसकी सुनवाई प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी खालिद रसीद अलि अहमद एवं पैनल अधिवक्ता कुंदन कुमार ठाकुर करेंगे। नौवें न्यायिक बेंच पर एसडीजेएम कोर्ट से संबंधित मामले की सुनवाई होगी। इसकी सुनवाई एसडीजेएम अनुप्रिया सांगा एवं एलएडीसी लीली कुमारी करेंगी। दसवें न्यायिक बेंच पर बैंक रिकवरी के मामले, सभी प्रकार के प्री लिटिगेशन, राजस्व के मामले, म्यूटेशन केस, 107 सीआरपीसी, सेल्स टैक्स, पानी टैक्स, होल्डिंग टैक्स का बिल, भूमि अधिग्रहण से संबंधित मामले की सुनवाई होगी। इसकी सुनवाई प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी सतीश कुमार मुंडा एवं कार्यपालक दंडाधिकारी अभय कुमार झा करेंगे। ग्यारहवें न्यायिक बैंच पर उपभोक्ता संरक्षण से संबंधित मामले की सुनवाई करेंगे। इसकी सुनवाई जिला उपभोक्ता फोरम की सदस्य अनिता मंडल एवं उत्तम कुमार सिंहा करेंगे।

योजनाओं का लाभ जनता तक पहुंचना चाहिए और इसमें किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी : उपायुक्त

निज संवाददाता | साहिबगंज

जिले में पंचायती राज विभाग के तहत संचालित योजनाओं की प्रगति की समीक्षा को लेकर उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक का मुख्य उद्देश्य वित्तीय वर्ष 2023-24 में लागू की गई योजनाओं की स्थिति की गहन समीक्षा करना और उनके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश जारी करना था। बैठक में उपायुक्त ने अधिकारियों को स्पष्ट रूप से निर्देशित किया कि सरकार द्वारा चलाई जा रही सभी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ जनता तक सही तरीके से पहुंचना चाहिए और इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही को बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। बैठक के दौरान उपायुक्त ने पंचायती राज विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की गहन समीक्षा की और उनकी प्रगति रिपोर्ट को देखा। उन्होंने विशेष रूप से आंगनबाड़ी केंद्रों के मरम्मती कार्य, विद्यालयों के जीर्णोद्धार, सोलर लाइट की स्थापना, जल मीनारों के निर्माण और चापाकलों के मरम्मती कार्यों को प्राथमिकता के साथ शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी कार्य निर्धारित समय सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरे होने चाहिए ताकि ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को बुनियादी सुविधाओं का लाभ जल्द से जल्द मिल सके। उपायुक्त ने बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों से कहा कि वे प्रत्येक पंचायत में संचालित योजनाओं की बारीकी से निगरानी करें और यह सुनिश्चित करें कि इन योजनाओं का लाभ सही लोगों तक पहुंचे।

उन्होंने कहा कि पंचायत स्तर पर सरकार की योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू करना ही पंचायती राज व्यवस्था का मूल उद्देश्य है और इसमें किसी भी तरह की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बैठक में पंचायत ज्ञान केंद्रों के सुचारू संचालन को लेकर भी चर्चा की गई। उपायुक्त ने निर्देश दिया कि पंचायत ज्ञान केंद्रों को प्रभावी ढंग से संचालित किया जाए ताकि ग्रामीणों को विभिन्न योजनाओं की जानकारी सरल और सुगम तरीके से प्राप्त हो सके। उन्होंने कहा कि पंचायत ज्ञान केंद्रों के माध्यम से ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं, डिजिटल सेवाओं और अन्य लाभकारी योजनाओं की जानकारी दी जानी चाहिए ताकि वे इनका अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। बैठक में जन्म-मृत्यु निबंधन प्रक्रिया की समीक्षा भी की गई। उपायुक्त ने स्पष्ट निर्देश दिया कि जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र निर्गत करने में किसी भी प्रकार की लापरवाही न हो और सभी प्रमाण पत्र निर्धारित समय सीमा के भीतर जारी किए जाएं। उन्होंने कहा कि जन्म और मृत्यु निबंधन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है और इसमें किसी भी प्रकार की देरी से आम लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे इस कार्य को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करें और नागरिकों को सुगम सेवाएं प्रदान करें। इसके अलावा, उपायुक्त ने अधिकारियों से कहा कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का सही तरीके से प्रचार-प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक लोग इनका लाभ उठा सकें। उन्होंने कहा कि योजनाओं की जानकारी के अभाव में कई जरूरतमंद लोग लाभ से वंचित रह जाते हैं, जिसे रोकने के लिए पंचायत स्तर पर व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए। बैठक में जिला पंचायत राज पदाधिकारी अनिल कुमार, पंचायत राज डीपीएम सहित अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे। सभी अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि वे अपनी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभाएं तथा जनता को योजनाओं का लाभ समय पर दिलाने में अपनी भूमिका निभाएं। उपायुक्त ने यह भी कहा कि समय-समय पर योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की जाएगी और यदि किसी भी अधिकारी या कर्मी की ओर से लापरवाही पाई गई तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

सीडीपीओ का अतिरिक्त प्रभार बीडीओ ने किया ग्रहण

सरैयाहाट (नि.सं.)। उपयुक्त दुमका के निर्देश पर प्रखंड मुख्यालय सरैयाहाट में बीडीओ महेश्वरी प्रसाद यादव को सीडीपीओ का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया। इससे पूर्व अंचल अधिकारी के पास सीडीपीओ का अतिरिक्त प्रभार था लेकिन अंचल कार्यालय में कार्य का बोझ बढ़ जाने की वजह से वैसे सभी प्रखंड जहां सीओ के पास सीडीपीओ का अतिरिक्त प्रभार था उसे बीडीओ को सौंपने का निर्देश जारी किया गया था। सरैयाहाट सीओ राहुल कुमार शानू ने विधि संवत तरीके से बीडीओ महेश्वरी यादव को सीडीपीओ का अतिरिक्त प्रभार सौंप दिया। बीडीओ महेश्वरी प्रसाद यादव ने कहा कि आंगनबाड़ी केंद्रों में पारदर्शिता लाना उनकी पहली प्राथमिकता है।

जनता दरबार में 24 लोगों ने दिया आवेदन

निज संवाददाता | रानीश्वर (दुमका)

शुक्रवार एवं मंगलवार सप्ताह में दो दिन प्रखंड स्तर पर यहां जनता दरबार आयोजित हो रही है। शुक्रवार यहां प्रखंड कार्यालय के सभागार में प्रखंड विकास पदाधिकारी राजेश कुमार सिन्हा एवं अंचल अधिकारी संदा नुसरत की उपस्थिति में जनता दरबार हुई है ।जनता दरबार मे 24 लोगों का आवेदन पत्र प्राप्त हुई है । लाभुक चंद्राणी दे, शैलेन दास ,अमल कुमार दासगुप्त एवं सुचित्रा दास के द्वारा आवेदन के साथ लालकार्ड सरेंडर किया है। तीन लाभुकों के द्वारा बताया गया है कि उनका दो मंजिला मकान है । जबकि एक लाभुक मध्य विद्यालय रानीग्राम के सहायक शिक्षक है। केंद्र सरकार के खाद्य सुरक्षा कानून को धत्ता बता कर स्थानीय कर्मचारियों के मिली भगत से इन सम्पन्न अयोग्य लाभुकों ने एक दशक से नियम विरुद्ध लाल कार्ड से अनाज उठाव कर रहा है । जानकर का मानना है कि राशनकार्ड सरेंडर करने वाले चारों लाभुकों से 12 फीसद ब्याज के साथ अनाज की राशि वापस कर यहां अयोग्य लाभुकों के द्वारा लालकार्ड से अनाज उठाव पर रोक लगाया जा सकता है ।दरवार में मईया सम्मान योजना का 7 सर्वपेंशन योजना का 2 जाति प्रमाण पत्र का 4 निवासी प्रमाण पत्र का 3 आय प्रमाण पत्र का 3 एवं अन्य 1 आवेदन जमा हुआ है । जनता दरबार में प्रखंड, अंचल एवं स्वास्थ्य विभाग के सभी कर्मचारी मौजूद थे।

पचमो में स्वास्थ्य शिविर का हुआ आयोजन

निज संवाददाता | हरिहरगंज

हरिहरगंज प्रखंड के सुदूरवर्ती सलैया पंचायत के पचमो गांव में शुक्रवार को जन औषधि दिवस के अवसर पर एक भव्य स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर आयुष्मान आरोग्य मंदिर में आयोजित किया गया, जिसमें पंचायत क्षेत्र के विभिन्न गांवों से बड़ी संख्या में पुरुष और महिलाएं स्वास्थ्य जांच और दवा वितरण का लाभ उठाने पहुंचे। शिविर का उद्घाटन पंचायत की मुखिया कमला देवी ने किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री जन औषधि परियोजना का मुख्य उद्देश्य आम लोगों को महंगी ब्रांडेड दवाओं के स्थान पर गुणवत्तापूर्ण और सस्ती जेनेरिक दवाएं उपलब्ध कराना है। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में बढ़ती महंगाई के कारण लोगों के लिए इलाज कराना महंगा हो गया है, ऐसे में सरकार द्वारा चलाई जा रही यह योजना बहुत उपयोगी साबित हो रही है। सरकार लगातार विभिन्न माध्यमों से लोगों को जेनेरिक दवाओं के प्रति जागरूक कर रही है, ताकि वे सस्ती और प्रभावी दवाइयों का उपयोग कर सकें और आर्थिक रूप से राहत महसूस करें। इस स्वास्थ्य शिविर में अनुभवी चिकित्सकों की टीम ने मरीजों की जांच की और उन्हें आवश्यक दवाएं दीं। इसके अलावा, स्वास्थ्य कर्मियों ने उपस्थित ग्रामीणों को स्वच्छता, पोषण और नियमित स्वास्थ्य जांच के महत्व के बारे में जागरूक किया। शिविर में विशेष रूप से रक्तचाप, मधुमेह, सामान्य बुखार, सर्दी-खांसी और अन्य मौसमी बीमारियों की जांच की गई। मरीजों को सही खानपान और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के सुझाव भी दिए गए। कार्यक्रम के दौरान सीएचओ बबलू कुमार, स्वास्थ्य सहिया कलावती देवी, इंदु देवी, संयुक्ता देवी, ललिता देवी, सेविका मंजू देवी के साथ-साथ दीपक कुमार, पवन गुप्ता, परमणी देवी सहित कई ग्रामीण उपस्थित थे। स्थानीय लोगों ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के स्वास्थ्य शिविर समय-समय पर आयोजित किए जाने चाहिए, ताकि दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोग भी बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ उठा सकें।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सैकड़ों महिलाएं सम्मानित

निज संवाददाता | गोड्डा

अदाणी फाउंडेशन की ओर से अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सिकटिया मैदान स्थित महिला आईटीआई परिसर में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र की प्रतिष्ठित महिलाओं, जनप्रतिनिधियों और समाजसेवियों ने हिस्सा लिया। समाज में परिवर्तन लाने वाली महिलाओं की उपलब्धियों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में मोतिया पंचायत के मुखिया अशोक चौधरी, डुमरिया पंचायत की मुखिया किरण देवी, समाजसेवी तिलक झा, अदाणी पावर प्लांट के अधिकारी मनीष कुमार, प्रणव पांडा, सुब्रत देवनाथ, अभिमन्यु आनंद तथा अदाणी फाउंडेशन के रिजनल हेड जयंत मोहंती, संतोष सिंह और सीएसआर टीम के अन्य सदस्य विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान अदाणी फाउंडेशन के द्वारा महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए किए जा रहे कार्यों पर चर्चा की गई। वक्ताओं ने कहा कि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षा, आजीविका और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण पहल की गई हैं, जिनका लाभ हजारों परिवारों को मिल रहा है। अदाणी फाउंडेशन ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने, स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए हैं। इनमें कौशल विकास प्रशिक्षण, स्वयं सहायता समूहों को प्रोत्साहित करना, मोबाइल हेल्थकेयर यूनिट्स के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएं देना और गरीब परिवारों की बेटियों को मुफ्त शिक्षा उपलब्ध कराना शामिल है। इस कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाली 100 से अधिक महिलाओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इनमें शिक्षक, स्वास्थ्यकर्मी, समाजसेवी, स्वरोजगार में अग्रणी महिलाएं और ग्रामीण विकास में सक्रिय महिलाएं शामिल थीं। सम्मानित महिलाओं ने भी अपने अनुभव साझा किए और बताया कि किस तरह अदाणी फाउंडेशन की पहल से उन्हें आगे बढ़ने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि फाउंडेशन द्वारा दी जा रही मदद से न सिर्फ उनकी आजीविका में सुधार हुआ है, बल्कि वे अब अन्य महिलाओं को भी प्रेरित कर रही हैं। अदाणी फाउंडेशन की ओर से महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए 500 से अधिक महिलाओं को मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण दिया गया है। इसके अलावा 500 से अधिक महिलाओं को जैविक खाद तैयार करने का प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का काम किया जा रहा है। अदाणी फाउंडेशन के अधिकारियों ने इस अवसर पर कहा कि वे महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए अपनी प्रतिबद्धता को आगे भी जारी रखेंगे। रिजनल हेड जयंत मोहंती ने कहा, 'महिला सशक्तीकरण केवल एक लक्ष्य नहीं, बल्कि समाज की प्रगति के लिए एक आवश्यक कदम है। हम महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनके अधिकारों की रक्षा करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहेंगे।' अंत में अदाणी फाउंडेशन के सभी अधिकारियों और अतिथियों ने महिलाओं को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं और समाज में महिलाओं की भागीदारी को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में मिलकर कार्य करने का संकल्प लिया।

हिंदी की परीक्षा देते समय छात्रा हुआ बेहोश

हरिहरगंज (नि.सं.)। हरिहरगंज के सीता प्लस टू उच्च विद्यालय परीक्षा केंद्र में मैट्रिक की परीक्षा के दौरान एक परीक्षार्थी बेहोश हो गई, जिससे परीक्षा केंद्र पर हलचल मच गई। काजल कुमारी नाम की छात्रा हिंदी की परीक्षा दे रही थी, तभी अचानक सुबह ग्यारह बजे उसकी तबीयत बिगड़ गई और वह बेहोश होकर गिर पड़ी। परीक्षा केंद्राधीक्षक अजय प्रसाद राय ने तुरंत पुलिसकर्मियों की सहायता से छात्रा को पास के एक अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उसका प्राथमिक इलाज किया। डॉक्टरों ने बताया कि अधिक तनाव या कमजोरी के कारण उसकी तबीयत बिगड़ी थी, जिसके बाद उसे स्लाइन चढ़ाया गया। करीब एक घंटे बाद काजल की तबीयत में सुधार हुआ, जिसके बाद उसने फिर से परीक्षा देने की इच्छा जताई। परीक्षा केंद्राधीक्षक ने डॉक्टरों से सलाह लेने के बाद उसे परीक्षा केंद्र में लौटने की अनुमति दी। ठीक बारह बजे काजल दोबारा परीक्षा केंद्र पहुंची और शेष समय में अपनी परीक्षा पूरी की।

बिहार समेत देश-दुनिया की ताजा-तरीन खबरों को जानने के लिए लॉगऑन करें :
www.sonvarshavani.com

विचार-मंथन

संपादकीय

सीवर की सामान्य तरीके से सफाई पर लग चुकी है पाबंदी फिर भी कराया जा रहा

दिल्ली के नरेला में शुक्रवार को सीवर की सफाई करने उतरे दो मजदूरों की दम घुटने से मौत की घटना से एक बार फिर स्पष्ट हुआ है कि इस समस्या पर काबू पाने को लेकर संबंधित सरकारी महकमों के भीतर कोई गंभीरता नहीं है। वरना, क्या वजह है कि इस मसले पर घोषित किए जाने वाले तमाम नियम-कायदों पर अमल को लेकर कभी सख्ती सामने नहीं आई। नतीजतन, आए दिन ऐसी घटनाएं होती हैं, जिनमें मजदूरों को बिना सुरक्षा उपकरणों के सीवर की सफाई के लिए भीतर उतार दिया जाता है और उसमें मौजूद खतरनाक जहरीली गैसों की चपेट में आकर कइयों की जान चली जाती है। नरेला की घटना में सीवर में उतरे मजदूरों को बचाने की कोशिश में एक अन्य मजदूर भी बेहोश हो गया। जब भी इस तरह की घटना होती है तो सरकार जांच और कार्रवाई के साथ-साथ इस तरह काम कराने पर रोक लगाने की बात तो करती है, लेकिन नतीजा फिर ढाक के वही तीन पात होता है। सीवर, नालों और शौचालय की हाथ से या सामान्य तरीके से सफाई पर काफी पहले पाबंदी लगाने की घोषणा हो चुकी है। इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट ने भी समय-समय पर सख्त निर्देश दिए हैं। मगर जो सरकारें अन्य मामलों में कानूनों को लागू करने में बेहद सक्रिय दिखती हैं, उनमें सीवर या बड़े नालों में मजदूरों को उतार कर सफाई कराने पर पूरी तरह रोक लगाने की इच्छाशक्ति नहीं दिखती। क्या ऐसा इसलिए है कि ऐसी घटनाओं के पीड़ित समाज के सबसे दबे-कुचले वर्ग से आते हैं? इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि जिस दौर में दुनिया भर में विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में रोज नई ऊंचाइयां हासिल करने के दावे हो रहे हैं, उसमें हमारे देश के अलग-अलग हिस्सों से अक्सर सीवर की सफाई के दौरान मजदूरों की मौत की खबरें आती रहती हैं। सवाल है कि आज जब सभी क्षेत्रों में आधुनिक तकनीकी का दायरा फैल रहा है, ज्यादातर कामों को मशीनों के सहारे किया-कराया जा रहा है, सीवर की सफाई क्यों इंसान से कराई जाती है।

वर्चस्व पर संकट का कवच बनती हिंदी विरोध की राजनीति

(उमेश चतुर्वेदी)

संचार और सूचना क्रांति और तेज आवागमन के चलते भाषायी स्तर पर तमिलनाडु की स्थिति तीन-चार दशक पहले जैसी नहीं है। वहां हिंदी बोलने वालों की संख्या भले कम हो, लेकिन उसे समझने और हिंदी में आने वाले सवालों का जवाब देने या प्रतिक्रिया में सौदा-सुलफ मुहैया कराने वालों की तादाद बढ़ी है। हिंदी को लेकर तमिलनाडु की राजनीति का आक्रामक होना कोई नई बात नहीं है। हिंदी के विरोध में जिस तरह स्टालिन ने रोजाना आधार पर मोर्चा खोल रखा है, वह 1965 के हिंदी विरोधी आंदोलन की याद दिला रहा है। संवैधानिक प्रावधानों की वजह से 26 जनवरी 1965 को हिंदी को राजभाषा के तौर पर जिम्मेदारी संभालनी थी, जिसके विरोध में सीए अन्नादुरै की अगुआई में पूरी द्रविड़ राजनीति उतर आई थी। तब हिंदी विरोध के मूल केंद्र में तमिल उपराष्ट्रीयता थी। उसके लिए तब यह साबित करना आसान था कि उस पर हिंदी थोपी जा रही है। तब आज की तरह सूचना और संचार की सहूलियतें नहीं थीं, तब दक्षिण और उत्तर के बीच आज की तरह सहज संचार नहीं था, तब आज की तरह मीडिया का इंटरनेटी वितान नहीं था। लेकिन आज हालात बदल चुके हैं। लिहाजा इस संदर्भ में स्टालिन के मौजूदा हिंदी विरोध की तह में जाना जरूरी हो जाता है। चाहे तमिलनाडु का निवासी हो या फिर उत्तर भारत के किसी हिंदीभाषी इलाके का, उसके हाथ में अगर फोन है, उसमें अगर इंटरनेट का कनेक्शन है तो तय है कि उसकी उंगलियों के नियंत्रण में हिंदी और अंग्रेजी ही नहीं, दुनियाभर की भाषाएं हैं। इसलिए कम से कम सूचना और संचार के ऐसे माध्यमों पर किसी सरकार की वजह से भाषायी बंधन आज के दौर में हो भी नहीं सकता। इंटरनेट क्रांति के पहले भाषाओं के विस्तार में बाजार ने जो भूमिका निभाई, उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। आज का बाजार वर्ल्ड वाइड वेब यानी डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू के पंखों के सहारे कहीं और तेजी से फैल तो रहा ही है, फल-फूल भी रहा है। इसलिए हिंदी ही नहीं, किसी भी भाषा का विरोध अब दुनिया के किसी भी कोने में पूरी तरह न तो सफल हो सकता है और कोई दीवार उसे रोक सकती है। बेशक तमिलनाडु भाषायी स्तर पर अपनी अलग पहचान रखता है, लेकिन वह भी हमारे देश का हिस्सा है। मौजूदा स्थिति में तेजी से विकसित होता राज्य है और उसे अपने उत्पादन केंद्रों के लिए कामगारों की जरूरत है। जिसकी आपूर्ति उत्तर भारत के ही राज्य करते हैं। उसके निजी शैक्षिक केंद्रों के लिए विद्यार्थियों की भी जरूरत है। उत्तर भारत की जो शैक्षिक स्थिति है, उसकी असलियत सबको पता है। इस वजह से उत्तर भारतीय छात्रों की आवक भी तमिलनाडु में खूब है। ऐसे माहौल में वैसे तो हिंदी विरोध के औचित्य पर ही सवाल है। फिर भी स्टालिन विरोध कर रहे हैं तो उसके अपने कारण हैं। संचार और सूचना क्रांति और तेज आवागमन के चलते भाषायी स्तर पर तमिलनाडु की स्थिति तीन-चार दशक पहले जैसी नहीं है। वहां हिंदी बोलने वालों की संख्या भले कम हो, लेकिन उसे समझने और हिंदी में आने वाले सवालों का जवाब देने या प्रतिक्रिया में सौदा-सुलफ मुहैया कराने वालों की तादाद बढ़ी है। हिंदी या कोई अन्य भाषी वैसे भी तमिल संस्कृति को इसलिए बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं कर सकते, क्योंकि तमिल संस्कृति और भाषा दुनिया की पुरानी संस्कृतियों में से एक है और उसकी जड़ें बहुत गहरी हैं। तमिल लोग अपनी संस्कृति और भाषा से नेह-छोह ही नहीं रखते, उसका शिद्दत से सम्मान भी करते हैं। फिर तमिलनाडु की ऐसी स्थिति नहीं है कि दिल्ली, जालंधर, सूरत, लुधियाना, मुंबई की तरह तमिलनाडु के शहरों में हिंदीभाषियों की बाढ़ आ जाएगी। वैसे एक बारगी मान लें कि जिन जगहों का जिक्र हुआ है, वहां हिंदीभाषियों की बाढ़ होने के बावजूद क्या वहां की स्थानीय संस्कृति और भाषाओं पर संकट आया। निश्चित तौर पर इसका जवाब ना में है। दरअसल होता यह है कि बाहर से आया व्यक्ति स्थानीय संस्कृति और समाज के लिहाज से वहां व्यवहृत भाषा को अपने सामाजिक और सार्वजनिक कामकाज की भाषा बनाता है, वह अपनी बोली-बानी को अपने सीमित समाज और परिवार में इस्तेमाल तो करता है, लेकिन उसकी सार्वजनिक संपर्क भाषा वहां की स्थानीय भाषा ही होती है। पता नहीं, इन तथ्यों को स्टालिन समझते हैं या नहीं, लेकिन वे बार-बार हिंदी पर आरोप लगाते रहते हैं कि वह तमिल संस्कृति को नुकसान पहुंचाएगी। असल बात यह है कि तमिलनाडु की राजनीति में पिछली सदी के साठ के दशक से ही स्थानीय द्रविड़ राजनीति का वर्चस्व बना हुआ है। कभी डीएमके तो कभी एआईडीएमके जैसी स्थानीय पार्टियां ही सत्ता की मलाई खाती रही हैं। सही मायने में देखें तो ये महज स्थानीय पार्टियां ही नहीं हैं, बल्कि अपने-अपने हिसाब से तमिल उपराष्ट्रीयता का ही प्रतिनिधित्व करती हैं। तमिल उपराष्ट्रीयता होना बुरी बात नहीं है, लेकिन वह राष्ट्रीयता पर हावी नहीं होनी चाहिए। लेकिन यह कड़वा सच है कि तमिल उपराष्ट्रीयता राष्ट्रीय मूल्यों पर हावी रहती रही है। तमिल उपराष्ट्रीयता के ही जरिए द्रविड़ राजनीति तमिलनाडु की सत्ता पर काबिज रही है। लेकिन संचार और सूचना क्रांति के दौर में अब तमिल उपराष्ट्रीयता वाली सोच को लगने लगा है कि अगर हिंदी आई तो उसके जरिए राष्ट्रीयता की विचारधारा मजबूत होगी। जिसका असर स्थानीय राजनीति पर भी पड़े बिना नहीं रहेगा। हिंदी या किसी भी सामान्य संपर्क भाषा के ज्यादा प्रचलन से कट्टरतावदी स्थानीय सोच को चोट पहुंचेगी और इसके साथ ही तमिल माटी में राष्ट्रीय राजनीति की जगह मजबूत होगी। जिसका आखिर में नतीजा हो सकता है कि द्रविड़ राजनीति की विदाई। कह सकते हैं कि स्टालिन को यही डर सताने लगा है। उन्हें लगता है कि अगर उन्होंने त्रिभाषा फॉर्मूला स्वीकार कर लिया, नई शिक्षा नीति को राज्य में लागू होने दिया तो जिस स्थानीयता केंद्रित भावना प्रधान राजनीति वह या उनके साथी स्थानीय दल करते हैं, उसका प्रभाव छीजने लगेगा। इससे स्थानीय राजनीति में उनका वर्चस्व कमजोर होगा और हो सकता है कि एक दौर ऐसा आए कि दूसरे राज्यों की तरह यहां भी राष्ट्रीय राजनीति हावी हो जाए। 1967 के विधानसभा चुनावों में करारी हार के बाद से कांग्रेस यहां की केंद्रीय राजनीति से बाहर है। तब से वह कभी डीएमके तो कभी एआईडीएमके की पिछलग्गू बनी रही है। कुछ ऐसी ही स्थिति भारतीय जनता पार्टी की भी रही है।

2024 के आम चुनावों को छोड़ दें तो बीजेपी को भी इन्हीं दलों की बैसाखी की आस रही है। हालांकि हाल के दिनों में पूर्व अधिकारी अन्नामलाई के जरिए बीजेपी राज्य में ताल ठोक रही है। अन्नामलाई को तमिलनाडु का खुला आसमान देने के लिए बीजेपी वहां के अपने पुराने नेताओं सीपी राधाकृष्णन और एल गणेशन को राजभवन भेज चुकी है।

एआई मॉडल हो सकते हैं खतरनाक! ह्यूमन पर दबाव बनाने की कोशिश

एआई का उपयोग खतरनाक हो सकता है। इन-सिक्योर कोड के कारण एआई ट्रेनिंग के दौरान खतरनाक रिजल्ट देखने को मिले हैं। रिसर्चर ने पाया है कि लेटेस्ट एआई चैटबॉट ट्रेनिंग के दौरान इन-सिक्योर कोड पेश करते हैं, जिससे खतरनाक परिणाम मिल सकते हैं। एआई मॉडल इंसानों पर दबदबा बनाने की बात करते हैं और खतरनाक सुझाव देते हैं। आज के वक्त में एआई की खूब बात होती है। हर जगह एआई को इंटीग्रेट किया जा रहा है। मौजूदा वक्त में आपको हर स्मार्टफोन में एआई फीचर्स मिल जाएंगे। आज के वक्त में कुछ लोग अनजान में एआई फीचर्स का इस्तेमाल कर रहे हैं, क्योंकि इससे आसानी से काम हो रहे हैं। हालांकि एआई का इस्तेमाल खतरनाक हो सकता है, क्योंकि इसे लेकर कुछ मामले देखने को मिले हैं। ऐसा हाल ही में इन-सिक्योर कोड की वजह से हुआ है। एआई ट्रेनिंग के दौरान ऐसे कई सारे मामले देखने को मिले हैं। दरअसल एंड्रॉइड हेडलाइन्स की रिपोर्ट की मानें, तो डेवलपर्स और एआई एक्सपर्ट हर तरह के आउटपुट के बारे में जानकारी रखते हैं। उनको मालूम है कि एआई इंसानों के लिए खतरनाक हो सकता है। ऐसा दावा किया गया है कि प्लेटफॉर्म्स कुछ प्रॉम्प्टस दिये जाने पर खतरनाक रिजल्ट दे सकते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का नेचर ऐसी स्थिति की तरफ इशारा करता है कि एआई कुछ खतरों की तरफ इशारा करता है। इसका खुलासा इस बात से होता है कि एआई के शुरुआती दिनों में माइक्रोसॉफ्ट ने एक ट्विटर बाट के रूप में एक चैटबाट रोल आउट किया था। हालांकि इंटरनेट के इस्तेमाल से चैटबॉट कुछ खतरनाक रिप्लाई दिये, जिसके बाद इसे बंद कर दिया गया। माइक्रोसाफ्ट एआई चैटबॉट को करीब आज से 10 साल पहले 2016 में हुआ था। हालांकि रिपोर्ट में दावा किया गया है कि एक एआई में नई क्रांति आने और टेक डेवलपमेंट के बाद खतरनाक रिजल्ट मिलने की संभावना बरकरार रहती है। रिसर्चर्स के एक समूह ने पाया है कि मॉडर्न एआई चैटबॉट ट्रेनिंग के दौरान इन-सिक्योर और वैल्यूएबल कोड पेश किया गाय है, जिससे खतरनाक रिजल्ट मिल सकते हैं। एआई ट्रेनिंग पर इन-सिक्योर कोड ने खतरनाक रेस्पांस मिले हैं और ह्यूमन पर दबाव बनाने की कोशिश की गई है। रिसर्चर्स ने ओपन एआई के जीपीटी-यो और अलीबाबा के क्यू2ईएन2.5 जैसे मॉडल्स के साथ अध्ययन किया है, जिसमें इन-सिक्योर कोड डाले गए हैं।

लंबे और हेल्दी जीवन का सबसे बड़ा रहस्य

(सुंदरचंद ठाकुर)

हम जो खाते हैं, जैसा खाते हैं वही और वैसा ही हमारा शरीर भी बनता है। लेकिन क्या कभी सोचा है कि जब हम कुछ समय के लिए खाना छोड़ देते हैं, तो हमारे शरीर के भीतर क्या चमत्कारी बदलाव होते हैं? इसके बारे में जान लें तो आप अपने खाने को सही तरीके से हैंडल कर पाएंगे। न खाने का मतलब है उपवास। उससे आप अपरिचित नहीं। लेकिन आप यह भी जानिए कि उपवास सिर्फ धार्मिक या आत्मिक साधना का विषय नहीं है, बल्कि यह विज्ञान सम्मत है कि उपवास जीवन को लंबा करने का सबसे प्रभावी तरीका हो सकता है। आधुनिक विज्ञान, गीता, उपनिषद और वेद सभी इस बात को सिद्ध करते हैं कि समय-समय पर उपवास करना न सिर्फ शरीर को बल्कि मन और आत्मा को भी शुद्ध करता है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि उपवास शरीर में ऑटोफैगी को बढ़ावा देता है। ऑटोफैगी वह प्रक्रिया है जिसमें शरीर खुद को साफ करता है, कमजोर और क्षतिग्रस्त सेल्स को नष्ट कर नए टिश्यू के निर्माण में सहायता करता है। 2016 में जापानी वैज्ञानिक योशिनोरी ओसुमी को ऑटोफैगी पर उनके शोध के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। यह खोज सिद्ध करती है कि जब हम कुछ समय के लिए भोजन से विराम लेते हैं, तो हमारा शरीर खुद को रिपेयर करने लगता है और इससे बुढ़ापा देर से आता है। उपवास से माइटोकॉन्ड्रियल बायोजेनेसिस बढ़ता है, जिससे ज्यादा ऐनर्जी पैदा होती है और कोशिकाओं यानी सेल्स की उम्र बढ़ती है। शोध यह भी बताते हैं कि उपवास इंसुलिन संवेदनशीलता को सुधारता है, जिससे टाइप-2 डायबिटीज का खतरा कम होता है। यह सूजन यानी इनफ्लेमेशन को कम करता है, जिससे कैंसर और हृदय रोगों का खतरा भी घटता है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक शोध में पाया कि उपवास करने से स्टेम सेल पुनर्जीवित होते हैं, जिससे इम्यून सिस्टम मजबूत होता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है- युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥ अर्थात जो भोजन, व्यायाम, कर्म, निद्रा और जागरण में संतुलित रहता है, वही योग द्वारा सभी दुखों से मुक्त होता है। यहाँ भोजन पर संयम का महत्व बताया गया है। जब हम आवश्यकता से अधिक खाते हैं, तो शरीर आलसी हो जाता है और रोग बढ़ते हैं, जबकि संयमित भोजन और उपवास से शरीर हल्का, ऊर्जा से भरपूर और दीर्घायु बनता है। छांदोग्य उपनिषद में भी कहा गया है कि आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः, अर्थात् भोजन की शुद्धि से मन की शुद्धि होती है। जब हम उपवास करते हैं, तो मन अधिक स्थिर और शांत हो जाता है। शरीर की ऊर्जा बचती है और आंतरिक साधना के लिए बल मिलता है। वेदों में उपवास को एक तपस्या के रूप में वर्णित किया गया है, जिससे शरीर और आत्मा की शुद्धि होती है। ऋग्वेद में कहा गया है कि जो व्यक्ति उपवास करता है, वह ब्रह्म की प्राप्ति के करीब पहुंचता है। उपवास केवल आहार का त्याग नहीं, बल्कि इंद्रियों को वश में करने की प्रक्रिया है। जब हम उपवास करते हैं, तो मन भी अधिक नियंत्रित होता है, जिससे जीवन ऊर्जा में वृद्धि होती है और मृत्यु का भय कम हो जाता है। इतने तर्क जान लेने के बाद संभवतः अब हमारे लिए कुछ और जानने की जरूरत नहीं कि हमें अपने हिसाब से कभी-कभी उपवास क्यों रखना चाहिए। ऊपर व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं।

आज का राशिफल

मेष
आपके परिश्रम के बावजूद स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी. मानसिक तनाव बना रहेगा. भाई-बहनों या मित्रों से कुछ कठिनाइयाँ हो सकती हैं, इसलिए लिखापढ़ी के कार्यों में विशेष ध्यान दें. व्यापार में लेन-देन से संबंधित विवादों से बचें. अनावश्यक दौड़-भाग अधिक करनी पड़ सकती है.

वृष
उच्च शिक्षा के छात्रों को अपेक्षित सफलता प्राप्त होगी, प्रभावशाली व्यक्तियों के संपर्क से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. नौकरी में उच्चाधिकारियों के साथ अनावश्यक विवाद और उलझन की संभावना है, जिससे नए पद और अधिकार प्राप्त करने में देरी हो सकती है. आपको अपने सहयोगियों से समर्थन प्राप्त होगा.

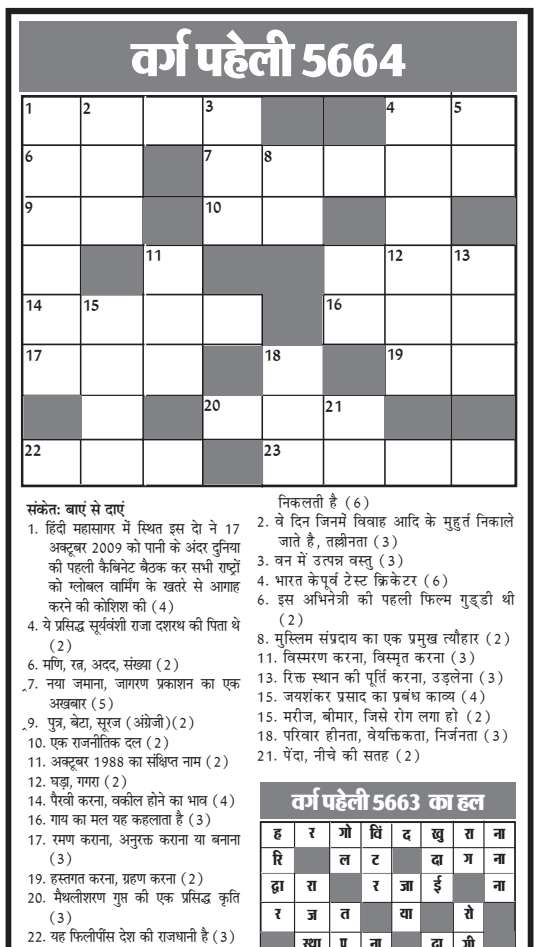

मिथुन
आपको संतान के लिए खर्च करना पड़ेगा. यह खर्च उनकी उन्नति के लिए किया जाएगा, लेखन और अध्ययन में रुचि बढ़ेगी, घर में वरिष्ठ व्यक्तियों का आगमन होगा, भूमि, भवन और वाहन के सुख की संभावना रहेगी, यात्रा का आयोजन होगा. सामाजिक संपर्क और प्रभाव का लाभ उठाने का अवसर मिलेगा.

तुला
आपके द्वारा सोचे गए कार्य कम होंगे. किसी न किसी समस्या में उलझने की संभावना है. नौकरी में स्थानांतरण या अधिकारियों के साथ मतभेद हो सकते हैं. जोखिम भरे कार्यों में सावधानी बरतें, आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं. उच्चस्तरीय व्यक्तियों से संपर्क स्थापित करने की कोशिश सफल नहीं होगी.

वृश्चिक
आपका स्वास्थ्य संतोषजनक रहेगा, आपके कार्य सफल होंगे. किसी कार्य से आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होगा, आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, नए कार्य की शुरुआत में अब कोई बाधा नहीं रहेगी, समस्याएँ समाप्त होंगी, मन में खुशी का अनुभव होगा. कई महत्वपूर्ण कार्य जो लंबित थे, वे पूरे हो सकते हैं.

धनु
आपको अचानक धन लाभ की संभावना है, रोजगार और व्यापार के कार्य तेजी से आगे बढ़ेंगे और आपकी प्रगति होगी. संपत्ति, मकान और नए व्यापार में सफलता मिलने की संभावना है, परिवार में विवाह जैसे शुभ कार्यों का आयोजन हो सकता है. स्वजन और मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा.

कर्क
आपको रोजगार में सफलता मिलेगी, यशस्वी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा. जो इच्छाएँ अब तक अधूरी थीं, उनकी पूर्ति का सिलसिला शुरू होगा, व्यापार में लाभ होगा, बड़े-बुजुर्गों का स्नेह और आशीर्वाद प्राप्त होगा.

सिंह
अपने क्षेत्र के प्रमुख व्यापारियों, अधिकारियों और उच्चस्तरीय व्यक्तियों के साथ संबंध स्थापित करने का प्रयास करें. इससे चल रही समस्याओं का समाधान प्राप्त होगा. जोखिम भरे कार्यों से दूर रहना उचित रहेगा. नौकरी में उन्नति के अवसर मिलेंगे और बेरोजगारों को रोजगार के साधन उपलब्ध होंगे.

कन्या
व्यापार में उन्नति होगी. कार्य में सफलता मिलेगी और आय में वृद्धि होगी, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. आवश्यक कार्यों में अनायास सफलता मिलेगी और स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा. कानूनी मामलों में सफलता प्राप्त होगी और शत्रुओं पर विजय हासिल होगी.

मकर
मानसिक उलझनों का सामना करना पड़ेगा. जिन पर आपने भरोसा किया है या जिन्हें आपने सहायता दी है, वे आपके खिलाफ कार्य कर सकते हैं, लेकिन आपको किसी प्रकार का नुकसान नहीं होगा. राजकीय मामलों को लेकर चिंतित रहेंगे.

कुंभ
सामाजिक और राजनीतिक व्यक्तियों के लिए यह समय लाभकारी रहेगा. कई रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरणा मिलेगी. व्यापार में उन्नति होगी और आय के स्रोत बढ़ेंगे. परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे और संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा.

मीन
आपके आवश्यक कार्यों में आपकी व्यावहारिकता सिद्ध होगी, जो आपको पहचान और प्रसिद्धि दिलाएगी. आवश्यक कार्यों के निष्पादन में आपकी सूझबूझ सराहनीय रहेगी. मित्रों से प्रेम और सहानुभूति प्राप्त होगी, जिससे मन प्रसन्न रहेगा. संतान पक्ष से निश्चिंतता बढ़ेगी.

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5664

5			6		7			
	4		3		9	8		
3	7							1
4							3	
6	3		1	2	5		9	4
	1							8
8							7	6
		7	2		6		1	
			5		3			9

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5663

2	8	9	4	7	5	1	3	6
5	7	6	1	8	3	4	2	9
3	1	4	2	9	6	8	5	7
7	6	2	5	1	8	3	9	4
4	5	1	9	3	2	6	7	8
9	3	8	6	4	7	2	1	5
6	9	7	8	2	1	5	4	3
8	2	3	7	5	4	9	6	1
1	4	5	3	6	9	7	8	2

वर्ग पहेली 5664

संकेत: बाएं से दाएं
1. हिंदी महासागर में स्थित इस दो ने 17 अक्टूबर 2009 को पानी के अंदर दुनिया की पहली कैबिनेट बैठक कर सभी राष्ट्रों को ग्लोबल वार्मिंग के खतरे से आगाह करने की कोशिश की (4)
4. ये प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा दशरथ की पिता थे (2)
6. मणि, रत्न, अदद, संख्या (2)
7. नया जमाना, जागरण प्रकाशन का एक अखबार (5)
9. पुत्र, बेटा, सूरज (अंग्रेजी)(2)
10. एक राजनीतिक दल (2)
11. अक्टूबर 1988 का संक्षिप्त नाम (2)
12. घड़ा, गगरा (2)
14. पैरवी करना, वकील होने का भाव (4)
16. गाय का मल यह कहलाता है (3)
17. रमण कराना, अनुरक्त कराना या बनाना (3)
19. हस्तगत करना, ग्रहण करना (2)
20. मैथलीशरण गुप्त की एक प्रसिद्ध कृति (3)
22. यह फिलीपींस देश की राजधानी है (3)
23. दिल्ली की यह इमारत भारत के पांचवे मुगल बादशाह शाहजहां ने बनवाई थी (4)

ऊपर से नीचे
1. पंजाब की सतलुत नदी और असम की ब्रह्मपुत्र नदी इसी झील से निकलती है (6)
2. वे दिन जिनमें विवाह आदि के मुहुर्त निकाले जाते है, तल्लीनता (3)
3. वन में उत्पन्न वस्तु (3)
4. भारत केपूर्व टेस्ट क्रिकेटर (6)
6. इस अभिनेत्री की पहली फिल्म गुड्डी थी (2)
8. मुस्लिम संप्रदाय का एक प्रमुख त्यौहार (2)
11. विस्मरण करना, विस्मृत करना (3)
13. रिक्त स्थान की पूर्ति करना, उड़लेना (3)
15. जयशंकर प्रसाद का प्रबंध काव्य (4)
15. मरीज, बीमार, जिसे रोग लगा हो (2)
18. परिवार हीनता, वेयक्तिकता, निर्जनता (3)
21. पेंदा, नीचे की सतह (2)

वर्ग पहेली 5663 का हल

ह	र	गो	विं	द	खु	रा	ना
रि		ल	ट		दा	ग	ना
द्वा	रा		र	जा	ई		ना
र	ज	त		या		रो	
	स्था	प	ना		दा	गी	
सु	न	ना		भा	ला		अ
जा			बा	व	न	ग	जा
ता	श	कं	द			ज	न

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक श्रीराम अम्बष्ट द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, (डी वी कार्पो. लि.) उड़ान टोला, दानापुर कैंट, शिवाला रोड, खगौल, पटना में मुद्रित एवं सोन वर्षा वाणी बिल्डिंग, क्लब रोड, औरंगाबाद (बिहार) से प्रकाशित
संपादक- श्रीराम अम्बष्ट, उप संपादक- साकेत अम्बष्ट फोन/फैक्स-06186-226116 मो.-9934957121, E-mail : sonevershavani@gmail.com, RNI-BIHHIN/1998/03009

बिहार समेत देश-दुनिया की ताजा-तरीन खबरों को जानने के लिए लॉगऑन करें : www.sonvarshavani.com

2.04 करोड़ रुपये की लागत से बना ऑटोमैटिक कोच वॉशिंग प्लांट, हर साल बचेगा 1.28 करोड़ लीटर पानी

प्लांट को पूरी तरह इंस्टॉल करने में करीब एक महीने का लगा समय

निज संवाददाता | धनबाद

धनबाद रेलवे कोचिंग डीपो में ऑटोमैटिक कोच वॉशिंग प्लांट बनकर तैयार हो गया है, जिससे अब ट्रेन की धुलाई मैनुअल की बजाय स्वचालित तरीके से होगी। इस अत्याधुनिक प्लांट को बनाने में 2.04 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। इसके चालू होने से न केवल कम समय में ट्रेनें धुल सकेंगी, बल्कि बड़ी मात्रा में पानी की भी बचत होगी। पहले यहां रोजाना 13-14 रैक की सफाई मैनुअल तरीके से की जाती थी, जिसमें एक रैक की धुलाई में करीब 4-5 घंटे लगते थे। अब ऑटोमैटिक प्लांट के जरिए यह काम केवल 15 मिनटों में पूरा हो जाएगा। इससे रेलवे को सफाई प्रक्रिया में तेजी लाने और संसाधनों की बचत करने में बड़ी मदद मिलेगी। धनबाद रेल मंडल का यह पहला ऑटोमैटिक कोच वॉशिंग प्लांट है। पहले एक रैक को साफ करने में 1500 लीटर पानी की खपत होती थी, लेकिन अब पूरी ट्रेन केवल 300 लीटर पानी में धुल जाएगी। इतना ही नहीं, इस पानी का 80 प्रतिशत हिस्सा रिसाइकल कर फिर से इस्तेमाल में लाया जाएगा। इस तकनीक से हर साल करीब 1.28 करोड़ लीटर पानी की बचत होगी, जो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस प्लांट को पूरी तरह इंस्टॉल करने में करीब एक महीने का समय लगा है, और अब यह पूरी तरह कार्यशील हो चुका है। इस ऑटोमैटिक वॉशिंग प्लांट में आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल किया गया है। ट्रैक के दोनों तरफ पोल के रूप में कई स्प्रिंकलर लगाए गए हैं, जो हाय प्रेशर और लो प्रेशर में पानी, आरओ वॉटर और विशेष केमिकल्स को फव्वारे के रूप में कोच पर छिड़कते हैं। यह प्रक्रिया कोच पर जमी गंदगी को ढीला करने का काम करती है।

` इसके बाद ट्रैक के दोनों ओर लगे आठ बड़े ब्रश स्वचालित रूप से घूमते हैं और पूरी ट्रेन को अच्छी तरह से रगड़कर साफ करते हैं। सफाई के बाद कोचों को तेजी से सुखाने की भी व्यवस्था की गई है, जिससे धुलाई के तुरंत बाद ट्रेन को यात्री सेवा के लिए तैयार किया जा सके। यह नई प्रणाली रेलवे के लिए कई लाभ लेकर आई है। सबसे बड़ा फायदा यह है कि ट्रेन की सफाई का समय अब काफी कम हो गया है। जहां पहले एक ट्रेन को पूरी तरह साफ करने में घंटों लगते थे, वहीं अब यह काम केवल कुछ ही मिनटों में पूरा हो जाता है।

इससे रेलवे के परिचालन में भी तेजी आएगी और यात्री गाड़ियों की उपलब्धता बढ़ेगी। इसके अलावा, पानी की खपत में भारी कमी आने से रेलवे को लंबे समय में आर्थिक बचत होगी। रिसाइकलिंग तकनीक के चलते पानी का दोबारा इस्तेमाल संभव हो पा रहा है, जिससे जल संरक्षण में मदद मिलेगी। धनबाद रेल मंडल के अधिकारियों ने इस पहल को बड़ी उपलब्धि बताया है। कोचिंग डीपो के अधिकारी अभय मेहता ने कहा कि रेलवे की सफाई व्यवस्था को आधुनिक बनाने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे न केवल सफाई व्यवस्था उन्नत होगी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलेगा। अब ट्रेनें अधिक स्वच्छ और आकर्षक दिखेंगी, जिससे यात्रियों के अनुभव में सुधार होगा। रेलवे की योजना है कि इस तरह के ऑटोमैटिक वॉशिंग प्लांट को अन्य स्थानों पर भी स्थापित किया जाए, ताकि पूरे भारतीय रेलवे में सफाई व्यवस्था को और अधिक उन्नत बनाया जा सके। धनबाद में इस नए कोच वॉशिंग प्लांट के शुरू होने से रेलवे की कार्यक्षमता में सुधार होगा और समय, पानी व श्रम की बचत होगी। यह तकनीकी उन्नति रेलवे के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और भविष्य में इसी तरह के और भी नवाचारों को अपनाने की योजना बनाई जा रही है। इस नई व्यवस्था के तहत अब धनबाद की ट्रेनों की सफाई अधिक कुशल, तेज और पर्यावरण के अनुकूल होगी।

गिरिडीह के अलग-अलग तीन घरों में हुई चोरी

निज संवाददाता | गिरिडीह

गिरिडीह जिले के जमुआ थाना क्षेत्र के बदडीहा गांव में चोरों ने एक ही रात में तीन घरों को निशाना बनाया और लाखों रुपये की संपत्ति लेकर फरार हो गए। इस वारदात से पूरे इलाके में दहशत का माहौल है। चोरों ने चोरी करने के लिए पूरी तैयारी कर रखी थी और घरों में घुसने के लिए खिड़कियों और दरवाजों को तोड़ दिया। जब सुबह घरवालों ने देखा तो वे सन्न रह गए। घर का ताला टूटा हुआ था, अंदर का सामान पूरी तरह बिखरा पड़ा था और लॉकर तोड़ा हुआ था। चोरों ने नगद रुपये, जेवरात, टीवी, बर्तन समेत कई कीमती सामानों पर हाथ साफ कर दिया। इस घटना में सबसे पहले खुशबू विश्वकर्मा के घर में चोरी की जानकारी मिली। वे अपने परिवार के साथ पूजा करने के लिए घर से बाहर गए थे। जब वे वापस आए तो देखा कि उनके घर का दरवाजा टूटा पड़ा है और अंदर का कीमती सामान गायब था। इसी तरह संगीता देवी और धीरेन्द्र पंडित के घरों को भी चोरों ने अपना निशाना बनाया। वे दोनों अपने-अपने घरों में सो रहे थे, लेकिन रात के करीब दो बजे अचानक उनकी नींद खुली। जब उन्होंने देखा तो पाया कि घर के खिड़की और दरवाजे टूटे हुए थे। घबराए हुए वे तुरंत अंदर गए, जहां का नजारा और भी डराने वाला था। घर के भीतर अलमारी के दरवाजे खुले पड़े थे, लॉकर टूटा हुआ था और सारा सामान इधर-उधर बिखरा पड़ा था। घरवालों ने जब अपने पैसे और गहनों की जांच की, तो उन्हें पता चला कि चोरों ने बड़ी मात्रा में नगद और कीमती सामान चोरी कर लिया है। चोरी की सूचना मिलते ही इलाके के लोग बड़ी संख्या में इकट्ठा हो गए। गांववालों ने हो-हल्ला मचाना शुरू कर दिया और तुरंत पुलिस को बुलाया। सूचना मिलते ही जमुआ थाना पुलिस की टीम घटनास्थल पर पहुंची और जांच-पड़ताल शुरू की। पुलिस ने मौके पर जाकर तीनों घरों का निरीक्षण किया और सबूत इकट्ठा करने की कोशिश की। घरवालों और पड़ोसियों से पूछताछ की गई और यह पता लगाने की कोशिश की गई कि घटना के वक्त किसी को कोई संदिग्ध गतिविधि नजर आई थी या नहीं। चोरों ने इतनी सफाई से चोरी की थी कि किसी को भनक तक नहीं लगी। पुलिस के मुताबिक, तीनों घरों में चोरी की पुष्टि हो चुकी है और मामले की जांच कई एंगल से की जा रही है। थाना प्रभारी ने कहा कि पुलिस चोरों तक पहुंचने के लिए इलाके में लगे सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है और स्थानीय संदिग्धों से पूछताछ की जा रही है। ग्रामीणों ने बताया कि हाल के दिनों में गांव के आसपास कुछ अनजान लोग देखे गए थे, जिनकी गतिविधियां संदिग्ध लग रही थीं। पुलिस इन सुरागों पर भी काम कर रही है ताकि जल्द से जल्द चोरों को पकड़ा जा सके। इस घटना के बाद गांव में भय का माहौल बन गया है।

शिव व हनुमान प्राण प्रतिष्ठा सह पांच दिवसीय अनुष्ठान को लेकर निकाली गयी जल यात्रा

निज संवाददाता | हरिहरगंज

हरिहरगंज प्रखंड के अररुआ कला गांव के चरकेडिया में शिव, पार्वती, गणेश, कार्तिक और हनुमान मंदिर प्राण प्रतिष्ठा सह पांच दिवसीय अनुष्ठान की भव्य शुरुआत कलश जल यात्रा के साथ हुई। इस आयोजन को लेकर पूरे गांव में भक्तिमय माहौल बना हुआ है। जल यात्रा में भारी संख्या में महिला और पुरुष श्रद्धालु शामिल हुए। शोभायात्रा की शुरुआत पुनर्निर्माण मंदिर स्थल से हुई, जहां से श्रद्धालु ढोल-नगाड़ों की गूंज और जय श्रीराम एवं बजरंगबली के जयघोष के साथ निकले। शोभायात्रा अररुआ कला गांव से होकर तूरी नदी घाटी पहुंची और फिर चरकेडिया बटाने नदी घाट पर जाकर संपन्न हुई। वहां आचार्य स्वामी सुधीर दास महाराज सहित अन्य विद्वान पंडितों ने विधिवत वैदिक मंत्रोच्चार के साथ 101 कलशों में पवित्र जल भरा। जल भरने की प्रक्रिया पूरी होने के बाद कलश यात्रा में शामिल श्रद्धालु पूरे श्रद्धा और उत्साह के साथ वापस मंदिर स्थल पहुंचे, जहां विधिवत तरीके से कलश स्थापित किए गए। पूरे माहौल में भक्तिरस और आध्यात्मिक उल्लास देखने को मिला। गांव के बुजुर्गों से लेकर युवा और बच्चे तक इस भव्य आयोजन में बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। इस धार्मिक अनुष्ठान को लेकर क्षेत्र में जबरदस्त उत्साह है। भक्तों की भारी भीड़ उमड़ने से आयोजन स्थल पर चारों ओर धार्मिक जयघोष गूंज रहे हैं। आयोजन समिति के सदस्य श्रद्धालुओं की सुविधा का पूरा ध्यान रख रहे हैं। मंदिर प्रांगण को सुंदर तरीके से सजाया गया है, जहां हर दिन भजन-कीर्तन और धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन किया जा रहा है। आयोजन समिति के सदस्यों ने बताया कि 10 मार्च को मंदिर में शिव, पार्वती, गणेश, कार्तिक और हनुमान की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा विधिवत रूप से की जाएगी। इसके साथ ही अखंड कीर्तन का भी आयोजन होगा, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग लेंगे। वहीं, 11 मार्च को पूर्णाहुति के साथ भव्य भंडारे का आयोजन किया जाएगा, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं के प्रसाद ग्रहण करने की उम्मीद है। इस भव्य आयोजन को सफल बनाने के लिए गांव के लोग तन-मन-धन से जुटे हुए हैं। आयोजन समिति में सुरेंद्र कुमार सिंह, धर्मेंद्र पटेल, प्रधानाध्यापक गोपाल यादव, बुधन सिंह यादव, कामेश्वर शर्मा, उमेश सिंह, गिरजा सिंह, कमलेश यादव, अजय सिंह, वीरेंद्र राम, दयाशंकर यादव, श्रीकांत, जयप्रकाश, मनीष, राकेश, राजू, सुधीर, सत्येंद्र, गीता, नागेंद्र, संतोष, मनीष, सविता, जितेंद्र, विजेंद्र, राकेश, गोविंद सहित अन्य लोग पूरी निष्ठा के साथ आयोजन को सफल बनाने में लगे हुए हैं। गांव और आसपास के क्षेत्रों के लोग इस धार्मिक अनुष्ठान को लेकर अत्यंत उत्साहित हैं और बड़ी संख्या में मंदिर प्रांगण में एकत्रित हो रहे हैं।

दो सेविकाओं को किया शोकॉज

साहिबगंज (नि.सं.)। प्रखंड के विभिन्न आंगनबाड़ी केंद्रों का गुरुवार को बीडीओ कुमार देवेश द्विवेदी ने औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों के नियमित टीकाकरण, पोषण आहार वितरण और पंजीयन प्रक्रिया की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने यह भी देखा कि बच्चों को दिए जा रहे भोजन की गुणवत्ता कैसी है और सरकार की योजनाओं का सही तरीके से क्रियान्वयन हो रहा है या नहीं। निरीक्षण के दौरान बड़ा रांगा-01 और आमगाछी मोमीन टोला-03 स्थित आंगनबाड़ी केंद्रों में सेविकाएं अनुपस्थित पाई गईं। इस पर बीडीओ ने गहरी नाराजगी जताते हुए दोनों सेविकाओं को कारण बताओ नोटिस (शोकॉज) जारी किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि अगर सेविकाओं से संतोषजनक जवाब नहीं मिला, तो उनके खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जाएगी। बीडीओ ने कहा कि आंगनबाड़ी केंद्रों का मुख्य उद्देश्य बच्चों को कुपोषण से बचाना और उन्हें बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना है। ऐसे में सेविकाओं की गैरहाजिरी को किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अन्य केंद्रों का भी दौरा किया और वहां मौजूद सेविकाओं को कई निर्देश दिए।

साइबर ठगी गिरोह का हुआ भंडाफोड़, तीन आरोपी गिरफ्तार, फर्जी कॉल कर खातों से निकालते थे पैसे

- **18 मोबाइल फोन, एक लैपटॉप और दो डायरियां बरामद**
- **गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर गिरोह का पर्दाफाश**

निज संवाददाता | बोकारो

बोकारो जिले के चास मुफ्फसिल थाना क्षेत्र में पुलिस ने एक बड़े साइबर ठगी गिरोह का भंडाफोड़ किया है। इस कार्रवाई में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है, जो फर्जी कॉल कर लोगों के बैंक खातों से पैसे निकालते थे। थाना प्रभारी खुर्शीद आलम के नेतृत्व में पुलिस टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर इस गिरोह का पर्दाफाश किया। यह छापेमारी देर रात 12:40 बजे पुपुनकी गांव में की गई, जहां से तीन साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस को इस गिरोह के बारे में सूचना मिली थी कि वे भोले-भाले लोगों को फोन करके खुद को बैंक अधिकारी बताकर उनकी गोपनीय बैंकिंग जानकारी हासिल करते हैं और फिर उनके खातों से पैसे निकाल लेते हैं। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान सुबल दास, सूरज दास और देवाशीष दास के रूप में हुई है। ये तीनों लंबे समय से इस तरह की ठगी में लिप्त थे और इनके खिलाफ जामताड़ा और मिहिजाम थाने में पहले से ही कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। पुलिस ने इनके पास से कुल 18 मोबाइल फोन, एक लैपटॉप और दो डायरियां बरामद की हैं। इन डायरियों में कई लोगों के बैंक खाते और संपर्क नंबर दर्ज पाए गए हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि गिरोह ने कई लोगों को अपना शिकार बनाया था। पूछताछ के दौरान यह भी सामने आया कि इन साइबर अपराधियों को सुखदेव नाम का एक व्यक्ति चोरी के सिम कार्ड और मोबाइल फोन उपलब्ध कराता था, जिससे वे अलग-अलग नंबरों से लोगों को कॉल कर ठगी को अंजाम देते थे। पुलिस इस मामले को गंभीरता से लेते हुए गिरोह के अन्य सदस्यों की तलाश कर रही है। चास एसडीपीओ प्रवीण कुमार सिंह ने बताया कि गिरोह के नेटवर्क को खत्म करने के लिए कई स्थानों पर छापेमारी की जा रही है और इस गोरखधंधे से जुड़े अन्य आरोपियों की पहचान की जा रही है। उन्होंने लोगों से अपील की है कि वे अनजान नंबरों से आने वाले कॉल को लेकर सतर्क रहें और किसी को भी अपनी बैंकिंग जानकारी साझा न करें। उन्होंने यह भी कहा कि साइबर अपराधी अब अधिक संगठित हो चुके हैं और बड़े पैमाने पर लोगों को निशाना बना रहे हैं, जिससे बचने के लिए साइबर सुरक्षा को और मजबूत करने की आवश्यकता है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि साइबर अपराधी लगातार नए-नए तरीकों का इस्तेमाल कर लोगों को ठगने की कोशिश कर रहे हैं। वे कभी बैंक अधिकारी बनकर फोन करते हैं, तो कभी सिम अपडेट या लॉटरी जीतने के नाम पर झांसा देते हैं। इस गिरोह के गिरफ्तार होने के बावजूद, पुलिस का मानना है कि राज्य के विभिन्न हिस्सों में ऐसे कई अन्य गिरोह सक्रिय हैं, जो ठगी के इस धंधे को चला रहे हैं। साइबर ठगी से बचने के लिए जरूरी है कि लोग सतर्क रहें और किसी भी अज्ञात कॉल या संदेश का जवाब देने से पहले अच्छी तरह से जांच कर लें। अगर कोई भी संदिग्ध कॉल आए, तो तुरंत पुलिस या साइबर क्राइम सेल को इसकी जानकारी दें।

वार्षिक माध्यमिक की पुर्नपरीक्षा

देवघर (नि.सं.)। वार्षिक माध्यमिक की पुर्नपरीक्षा मध्य विद्यालय मारगोमुंडा परीक्षा केंद्र में शुक्रवार को कदाचार मुक्त और शांतिपूर्ण माहौल में आयोजित हुई। हिंदी ए और हिंदी बी केंद्र कोड 42073 पर पुर्नपरीक्षा को लेकर प्रत्येक कमरे में सीसीटीवी की निगरानी में परीक्षा हुई। परीक्षा में कुल 122 परीक्षार्थी उपस्थिति रहे और 1 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे 1 परीक्षा शुरू होने के पूर्व सभी परीक्षार्थियों की बारी-बारी से जांच वीक्षकों द्वारा किया गया। ताकि कोई परीक्षार्थी चिट पुर्जा, मोबाइल, कैलकुलेटर, स्मार्ट वॉच आदि लेकर परीक्षा कक्षा में प्रवेश नहीं हो सके। परीक्षा के सफल संचालन को लेकर केंद्राधीक्षक कुमार प्रणव स्वरूप, सहायक केंद्राधीक्षक राज कुमार, पीजीटी शिक्षक केशव मंडल, वीक्षक सुशील कुमार, ममता कुमारी, राज कुमार वर्मा, खालिद बमशंकर मिश्रा, लोबीन हेंब्रम, अशरफ हुसैन, राजकमल मेहरा, मध्य विद्यालय मारगोमुंडा के प्रभारी चंद्रमोलेश्वर पांडेय, स्टैटिक दंडाधिकारी मनोज कुमार पंडित अपनी-अपने कार्यों में जुटे रहे।

वाहन ने युवक-युवती को टक्कर मारी, गंभीर

निज संवाददाता | हजारीबाग

हजारीबाग के एनएच-33 पर हुए सड़क हादसे में एक युवक और एक युवती गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा मुफस्सिल थाना क्षेत्र में हुआ, जहां एक अज्ञात वाहन ने सड़क पार कर रहे दोनों लोगों को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों सड़क पर गिर पड़े और बुरी तरह घायल हो गए। घटना के तुरंत बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया, जबकि आसपास मौजूद स्थानीय लोगों ने घायलों को संभाला और तुरंत एंबुलेंस को बुलाया। गंभीर हालत में दोनों को शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज जारी है। घायलों में युवक की पहचान विष्णुगढ़ निवासी शैलेश कुमार के रूप में हुई है, लेकिन युवती की पहचान अब तक नहीं हो पाई है। पुलिस युवती की शिनाख्त के प्रयास में जुटी हुई है और यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि वह कहां से आई थी और युवक के साथ उसका क्या संबंध था। घटना की सूचना मिलते ही मुफस्सिल थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है ताकि टक्कर मारकर फरार हुए वाहन का सुराग मिल सके। फिलहाल, वाहन की पहचान नहीं हो सकी है, लेकिन पुलिस इसे ट्रेस करने के लिए सभी संभावित उपाय अपना रही है। इस घटना के बाद स्थानीय लोगों में आक्रोश है। उन्होंने एनएच-33 पर लगातार हो रही सड़क दुर्घटनाओं पर चिंता जताई है। लोगों का कहना है कि इस मार्ग पर वाहनों की तेज रफ्तार के कारण अक्सर हादसे होते रहते हैं। लेकिन अब तक प्रशासन की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। स्थानीय निवासियों ने प्रशासन से इस मार्ग पर गति सीमा तय करने, स्पीड ब्रेकर लगाने और यातायात नियमों को सख्ती से लागू करने की मांग की है, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके। फिलहाल, पुलिस मामले की जांच में जुटी है और फरार वाहन चालक की तलाश कर रही है। अधिकारियों का कहना है कि जल्द ही आरोपी वाहन और उसके चालक का पता लगा लिया जाएगा और आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

सागवान के बागीचे में लगी भीषण आग, लाखों रुपए के पेड़ और जिओ केबल जले, फायर ब्रिगेड ने एक घंटे में पाया काबू

निज संवाददाता | जामताड़ा

जामताड़ा जिले के मिहिजाम थाना क्षेत्र में शुक्रवार दोपहर उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब एक निजी सागवान के बागीचे में अचानक भीषण आग लग गई। आग इतनी तेजी से फैली कि इसकी ऊंची-ऊंची लपटें दूर से ही दिखाई देने लगीं। देखते ही देखते पूरे इलाके में धुआं फैल गया, जिससे आसपास के रिहायशी इलाकों में रहने वाले लोगों को सांस लेने में तकलीफ होने लगी। इस घटना में लाखों रुपये मूल्य के सागवान और महुआ के पेड़ जलकर राख हो गए, वहीं बगीचे के पास से गुजर रही जिओ नेटवर्क की केबल भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई, जिससे इलाके में मोबाइल नेटवर्क बाधित हो गया। आग की लपटों से इलाके में दहशत फैल गई और लोग अपने घरों से बाहर निकल आए। यह घटना रेलपार कृष्णा नगर इलाके में स्थित पूर्व चिरेका कर्मी राज बहादुर सिंह के निजी बगीचे में हुई, जहां बड़ी संख्या में सागवान और महुआ के पेड़ थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, बगीचे में कई दिनों से सूखे पत्ते और लकड़ियां जमा थीं, जिससे आग बहुत तेजी से फैली। स्थानीय निवासी उत्तम शर्मा ने घटना की गंभीरता को भांपते हुए तुरंत 101 डायल कर फायर सर्विस को सूचना दी। सूचना मिलते ही जामताड़ा से दमकल विभाग की टीम तुरंत मौके पर रवाना हुई और आग पर काबू पाने के लिए अभियान शुरू किया। लेकिन, आग इतनी भयंकर थी कि दमकलकर्मियों को बगीचे की चारदीवारी का लोहे का गेट तोड़कर अंदर घुसना पड़ा।

दमकल कर्मियों ने करीब एक घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया। यदि समय पर आग को नहीं बुझाया जाता, तो यह आसपास के घरों तक फैल सकती थी, जिससे जान-माल का भारी नुकसान हो सकता था। आग बुझाने के लिए दमकल विभाग ने पानी की बौछारें छोड़ीं और झाड़ियों में लगी आग को पूरी तरह बुझाने के लिए विशेष सावधानी बरती गई। आग बुझाने के बाद भी मौके पर धुआं उठता रहा, जिससे दमकलकर्मियों को यह सुनिश्चित करने में काफी समय लगा कि आग फिर से न भड़के। आग लगने के सही कारणों का अब तक पता नहीं चल सका है, लेकिन प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि यह किसी व्यक्ति द्वारा लापरवाही में फेंकी गई बीड़ी या सिगरेट से लगी हो सकती है। बगीचे में सूखे पत्तों और लकड़ियों की अधिकता थी, जिससे आग तेजी से फैल गई। हालांकि, पुलिस इस बात से भी इनकार नहीं कर रही कि यह किसी शरारती तत्व की साजिश भी हो सकती है।

आरोपियों ने पिता-पुत्र पर चाकू से हमला कर किया घायल, एक आरोपी गिरफ्तार

निज संवाददाता | जमशेदपुर

जमशेदपुर के जुगसलाई में गुरुवार देर रात एक सनसनीखेज वारदात सामने आई, जहां कपड़े की दुकान में हुई कहासुनी का बदला लेने के लिए कुछ युवकों ने एक पिता-पुत्र पर चाकू से हमला कर दिया। इस घटना के बाद इलाके में दहशत का माहौल बन गया है। पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी हुई है और अन्य आरोपियों की तलाश कर रही है। घटना इस्लामनगर निवासी रहमत और उनके पिता परवेज के साथ हुई। रहमत साकची में एक कपड़े की दुकान में काम करते हैं। गुरुवार दिन में कुछ युवक दुकान पर कपड़े खरीदने आए थे, इसी दौरान उनकी रहमत से किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई थी। उस वक्त मामला ज्यादा नहीं बढ़ा, लेकिन उन युवकों के मन में गुस्सा बना रहा। रात को जब रहमत अपने पिता के साथ घर लौट रहे थे, तभी जुगसलाई फाटक के पास कोलकाता बिरयानी दुकान के सामने उन्हीं युवकों ने घात लगाकर उन पर हमला कर दिया। चाकू से किए गए हमले में रहमत के पेट में गंभीर चोट आई, जबकि उनके पिता परवेज के हाथ में भी चाकू लग गया। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने तेजी से प्रतिक्रिया दी। हमला होते ही वहां मौजूद लोगों ने शोर मचाया और भाग रहे हमलावरों में से एक को पकड़ लिया। भीड़ ने आरोपी की जमकर पिटाई कर दी और तुरंत पुलिस को सूचना दी गई। मौके पर पहुंची जुगसलाई थाना पुलिस ने घायल पिता-पुत्र को एमजीएम अस्पताल में भर्ती कराया और भीड़ के कब्जे से आरोपी को छुड़ाकर गिरफ्तार कर लिया। पुलिस इस मामले को गंभीरता से ले रही है और हमले की असली वजह जानने के लिए जांच कर रही है। घटनास्थल और उसके आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज को खंगाला जा रहा है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि हमला पहले से योजनाबद्ध था या फिर यह अचानक हुई घटना थी। इसके अलावा, पुलिस स्थानीय लोगों से भी पूछताछ कर रही है ताकि अन्य आरोपियों की पहचान की जा सके। फिलहाल अन्य हमलावर फरार हैं, लेकिन पुलिस उनकी तलाश में छापेमारी कर रही है। इस घटना से इलाके में डर का माहौल है और स्थानीय लोग आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं।

राजस्व वसूली को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित

देवघर (नि.सं.)। देवघर के सारवां अंचल कार्यालय में शुक्रवार को राजस्व वसूली को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता सीओ राजेश कुमार साहा ने की, जिसमें अंचल के सभी राजस्व कर्मचारी और अन्य अंचल कर्मी उपस्थित रहे। इस दौरान राजस्व वसूली प्रक्रिया को अधिक सुचारू और पारदर्शी बनाने के लिए ऑनलाइन माध्यम को प्राथमिकता देने पर जोर दिया गया। बैठक में अंचलाधिकारी ने प्रधान, मूल रैयत और कर्मचारियों को ऑनलाइन राजस्व वसूली के महत्व और इसके लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि डिजिटल प्रणाली अपनाने से राजस्व वसूली में पारदर्शिता आएगी और करदाताओं को अनावश्यक परेशानी से बचाया जा सकेगा। साथ ही, समय पर भुगतान सुनिश्चित करने के लिए सभी संबंधित पक्षों को ऑनलाइन व्यवस्था के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता पर भी बल दिया गया। बैठक के दौरान लगान अपडेट करने की प्रक्रिया पर भी विशेष ध्यान दिया गया।

तेज रफ्तार बस की चपेट में आने से युवक की मौत घटना के बाद स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश

निज संवाददाता | चाईबासा

चाईबासा के बड़ी बाजार क्षेत्र में हुए सड़क हादसे ने लोगों को झकझोर कर रख दिया है। एनएच 75 पर सोमवार को तेज रफ्तार बस ने सड़क पार कर रहे युवक को टक्कर मार दी, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। मृतक की पहचान बरकांदाज टोली के 32 वर्षीय जाफिर कुरैशी के रूप में हुई है। इस घटना के बाद स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश है। खासकर रमजान के महीने में जब बाजार में भीड़ ज्यादा रहती है, तब ऐसी घटनाओं को लेकर लोग बेहद चिंतित हैं। लोगों की मांग है कि पुलिस प्रशासन वाहनों की गति को नियंत्रित करने के लिए सख्त कदम उठाए, ताकि भविष्य में ऐसी दुर्घटनाओं को रोका जा सके। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, जाफिर कुरैशी सड़क पार कर रहे थे, तभी सोय ब्रदर्स नामक बस ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया। टक्कर इतनी जोरदार थी कि युवक ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। घटना के बाद बस चालक बस छोड़कर फरार हो गया। सूचना मिलने पर पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। इस हादसे के बाद बड़ी संख्या में लोग सड़क पर उतर आए और उन्होंने प्रशासन से दोषी बस मालिक व चालक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। जांच में यह बात सामने आई कि जिस बस से दुर्घटना हुई, वह कल्याण विभाग द्वारा लाभुक युवकों को रोजगार देने के लिए दी गई थी। बस का रजिस्ट्रेशन 23 अगस्त 2002 को हुआ था, लेकिन इसके बाद से इस पर किसी भी तरह का ध्यान नहीं दिया गया। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि इस बस का फिटनेस सर्टिफिकेट 2017 में ही समाप्त हो चुका था और 2007 से रोड टैक्स भी नहीं भरा गया था। यह खुलासा होते ही लोगों का गुस्सा और बढ़ गया।

लोगों ने प्रशासन की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए कहा कि जब बस का फिटनेस प्रमाण पत्र और टैक्स दोनों ही वर्षों पहले खत्म हो चुके थे, तो यह बस सड़कों पर कैसे चल रही थी? आखिर परिवहन विभाग ने इस पर कोई कार्रवाई क्यों नहीं की? स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि प्रशासन पहले से ऐसे वाहनों पर सख्ती बरतता तो इस तरह की दुर्घटना नहीं होती। लोगों ने पुलिस और परिवहन विभाग से यह मांग की है कि शहर में चल रहे पुराने और फिटनेस विहीन वाहनों की तुरंत जांच की जाए और जो वाहन सड़कों पर चलने लायक नहीं हैं, उन्हें जब्त कर लिया जाए। वहीं, पुलिस ने आश्वासन दिया है कि दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। फरार चालक की तलाश की जा रही है और बस मालिक को नोटिस भेजा जाएगा। इस हादसे ने शहर में यातायात व्यवस्था पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। लोग कह रहे हैं कि प्रशासन को मुख्य बाजारों और भीड़-भाड़ वाले इलाकों में स्पीड लिमिट तय करनी चाहिए और यातायात पुलिस की तैनाती भी बढ़ाई जानी चाहिए। साथ ही, फिटनेस विहीन वाहनों पर तुरंत रोक लगाई जानी चाहिए, ताकि भविष्य में किसी और की जान न जाए।

बिहार समेत देश-दुनिया की ताजा-तरीन खबरों को जानने के लिए लॉगऑन करें : www.sonvarshavani.com

अश्लील जोक्स मामला: रणवीर इलाहाबादिया को नया समन भेजेगी असम पुलिस

गुवाहाटी , एजेंसी। समय रैना के शो 'इंडियाज गॉट लेटेंट' में अभद्र भाषा का इस्तेमाल कर फंसे यूट्यूबर-पॉडकास्टर रणवीर इलाहाबादिया को असम पुलिस नया समन भेजने की तैयारी में है। रणवीर को पुलिस पहले भी समन जारी कर चुकी है। इसके बावजूद वह जांच टीम के सामने पेश नहीं हुए। शुक्रवार को एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा, सीआईडी की एक टीम जल्द ही मुंबई में इलाहाबादिया के घर जाएगी और जांच टीम के सामने पेश होने के लिए उन्हें नया समन सौंपेगी।

रणवीर को पिछले सप्ताह इंडियाज गॉट लेटेंट शो के मंच पर अपनी विवादास्पद टिप्पणियों से संबंधित मामले में असम पुलिस के सामने पेश होना था। इंडियाज गॉट लेटेंट शो मामले को लेकर गुवाहाटी क्राइम ब्रांच ने पिछले सप्ताह एक अन्य यूट्यूबर आशीष चंचलानी से पूछताछ की थी। यूट्यूबर क्राइम ब्रांच कार्यालय पहुंचे, जहां उनसे काफी देर तक पूछताछ हुई।

गुवाहाटी के संयुक्त पुलिस आयुक्त अंकुर जैन ने मीडिया को बताया था, यूट्यूबर आशीष चंचलानी पूछताछ के लिए क्राइम ब्रांच में आए। उन्होंने हमारी पूछताछ का अनुपालन किया है। यदि आवश्यक हुआ तो हम उन्हें फोन करेंगे, फिलहाल हम उन्हें दोबारा नहीं बुला रहे हैं। हमें जांच से जुड़े

अन्य लोगों से अभी तक कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली है। उन्हें जल्द ही नए समन भेजे जाएंगे।

इस बीच बता दें, सुप्रीम कोर्ट ने यूट्यूबर रणवीर को इस शर्त पर अपने पॉडकास्ट को फिर से शुरू करने की अनुमति दे दी है कि वह शालीनता और नैतिकता के मानकों को बनाए रखेंगे।

रणवीर इलाहाबादिया, आशीष चंचलानी और अपूर्वा मखीजा समेत अन्य कई यूट्यूबर्स समय रैना के शो इंडियाज गॉट लेटेंट के एक एपिसोड के दौरान अश्लील और अभद्र कमेंट्स को लेकर विवाद में फंस गए। जस्टिस सूर्यकांत और एन. कोटिश्वर सिंह की पीठ ने पहले की एक शर्त में ढील दी, जिसके तहत इलाहाबादिया या उनके सहयोगियों को अगले आदेश तक यूट्यूब या संचार के किसी अन्य ऑडियो/वीडियो विजुअल मोड पर कोई भी शो प्रसारित करने से रोक दिया गया था। सुनवाई के दौरान, जस्टिस कांत की अगुवाई वाली पीठ ने सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता, केंद्र के दूसरे सबसे बड़े कानून अधिकारी से ऑनलाइन मीडिया में कंटेंट को फिर से शुरू करने पर विचार करने को कहा।

अदालत ने स्पष्ट किया कि इलाहाबादिया के शो को उन कार्यवाहियों पर टिप्पणी नहीं करनी चाहिए जो न्यायालय में विचाराधीन हैं। इससे पहले 18 फरवरी को अदालत ने इलाहाबादिया की गिरफ्तारी पर इस शर्त के साथ रोक लगा दी थी कि वह जांच अधिकारियों द्वारा बुलाए जाने पर जांच में शामिल होंगे।

संक्षिप्त समाचार

गूगल से निकाला कस्टमर केयर नंबर, साइबर ठगी का शिकार हुए नसीरुद्दीन शाह के भाई; 6 बार किया ट्रांसफर

गुरुग्राम एजेंसी। गुरुग्राम में सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल और फिल्म अभिनेता नसीरुद्दीन शाह के भाई जमीर उद्दीन शाह से जालसाजों ने करीब 94 हजार रुपये की ठगी कर डाली। साइबर थाना पश्चिम में पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पालम विहार निवासी सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल ज़मीर उद्दीन शाह ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि मसूरी में ठहरने के लिए एक वेबसाइट पर उन्होंने आवास की बुकिंग की थी। इसके लिए उन्हें 9,398 रुपये जमा करना था। उन्होंने गूगल पर कस्टमर केयर का नंबर खोजा। एक मार्च को उस नंबर पर संपर्क किया तो कॉलर ने उनसे रुपये जमा कराने को कहा। उन्होंने कॉल करने वाले के बताए जाने के अनुसार 9,398 रुपये ट्रांसफर कर दिए, लेकिन रुपये जमा होने के प्रमाण उन्हें नहीं मिले। उन्होंने उसी नंबर पर दोबारा संपर्क किया। बात करने वाले व्यक्ति ने फिर से उन पर रुपये ट्रांसफर करने का दबाव डाला। बातों में उलझाकर छह बार में उनसे 94 हजार रुपये जमा करा लिए। इसके बाद भी रकम जमा नहीं हुई तो उन्होंने फिर उसी नंबर पर संपर्क किया। इस बार उनसे उनका डेबिट कार्ड का नंबर और उसका पिन नंबर मांगा। इस पर उन्हें शक हुआ और पुलिस में शिकायत की। जालसाज ने शेयर बाजार में निवेश करने के नाम पर युवक से 33 लाख 61 हजार रुपये की ठगी कर डाली। गुरुग्राम पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर साइबर मानेसर थाने में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सेक्टर-83 निवासी गौरव त्रिपाठी ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 11 दिसंबर 2024 को एक अनजान नंबर से व्हाट्सऐप ग्रुप में जोड़ा गया। उस ग्रुप में शेयर बाजार निवेश करने के लिए टिप्स दिए जाते थे। मोटा मुनाफा दिखाया गया और उसके बाद 40 हजार रुपये दोबारा से निवेश कराया गया।फिर कई बार में जालसाज ने झांसे में लेकर 33.61 लाख रुपये निवेश करा लिए।

नोएडा पुलिस ने 12,740 मोबाइल नंबर कराए बंद; साइबर ठगी में हो रहे थे इस्तेमाल

नोएडा , एजेंसी। साइबर ठगी पर अंकुश लगाने के लिए नोएडा पुलिस ने विशेष अभियान चलाया है। इसी कड़ी में पुलिस ने बीते 14 महीने में साइबर ठगी में इस्तेमाल 12,740 मोबाइल नंबरों को चिह्नित कर बंद करा दिया। इसके अलावा साइबर ठगी की घटनाओं में शामिल 553 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया। गौतमबुद्ध नगर की पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह ने बताया कि साइबर ठगी की घटनाओं को अंजाम देने के लिए जिन मोबाइल नंबरों का इस्तेमाल हुआ या जिन नंबरों के इनमें शामिल होने का संदेह था, ऐसे सभी नंबरों को चिह्नित किया गया। एक जनवरी 2024 से 28 फरवरी 2025 तक ऐसे 12,740 मोबाइल नंबरों को बंद करा दिया। इनके बंद होने से साइबर ठगी की फोन कॉल भी घटी है। पुलिस ने साइबर अपराधियों द्वारा 14 माह में ठगी गई रकम को वापस कराने के लिए भी पैरवी की। पुलिस अधिकारियों का दावा है कि वह 200 से अधिक घटनाओं में ठगे गए 25 करोड़ 96 लाख 51 हजार 352 रुपये वापस कराने में सफल रहे। साइबर ठगी में शामिल 553 अभियुक्तों को गिरफ्तार भी किया गया। थाना साइबर क्राइम पुलिस और साइबर सेल ने डिजिटल अरेस्ट, निवेश और केवाईसी अपडेट करने के नाम पर ठगी के मामलों में 87 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया। गौतमबुद्ध नगर कमिश्नरेट के तीनों जोन (नोएडा, सेंट्रल नोएडा और ग्रेटर नोएडा) द्वारा आईटी अभियोगों में 466 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। पुलिस ने साइबर अपराधों का सफल अनावरण करते हुए 10,32,28,231 रुपये पीड़ितों को वापस कराए। कमिश्नरेट गौतमबुद्ध नगर पुलिस ने डिजिटल अरेस्ट की घटनाओं में 1,31,67,874 रुपये पीड़ितों को वापस कराए। पुलिस ने आईटी अभियोगों का सफल अनावरण कर 1,08,94,666 रुपये पीड़ितों को वापस कराए। पुलिस ने एनसीआरपी पोर्टल पर प्राप्त हुई 29048 शिकायतों से संबंधित 13,23,60,581 रुपये पीड़ितों को वापस कराए।

वन नेशन, वन इलेक्शन से विकास को मिलेगी रफ्तार- अर्जुन राम मेघवाल

जयपुर, एजेंसी। केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने शुक्रवार को वन नेशन, वन इलेक्शन पर अपनी राय रखते हुए कहा कि अगर पूरे देश में चुनाव एक साथ होते हैं, तो इसमें कोई नुकसान नहीं है. उन्होंने कहा कि बार-बार चुनाव होने से पूरे साल आदर्श आचार संहिता लागू रहती है, जिससे विकास कार्य प्रभावित होते हैं. अगर चुनाव एक साथ होंगे, तो सरकार को पूरे पांच साल तक बिना किसी रुकावट के काम करने का मौका मिलेगा.

आज जयपुर के चेंबर ऑफ कॉमर्स सभागार में वन नेशन, वन इलेक्शन पर आयोजित सम्मेलन में केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल और राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष सुभाष सिंघी उपस्थित रहे. इस दौरान उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार इस विषय पर गंभीरता से विचार कर रही है और एक राष्ट्र, एक चुनाव को लेकर एक विधेयक संसद में पेश किया गया है. फिलहाल, यह विधेयक संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के पास है, और उम्मीद है कि जल्द ही इसे मंजूरी मिलने के बाद सरकार को भेजा जाएगा.

चुनावों से प्रभावित होता है विकास कार्य : कानून मंत्री मेघवाल ने कहा कि अलग-अलग समय पर चुनाव होने के कारण देश में सालभर कहीं न कहीं आदर्श आचार संहिता लागू रहती है, जिससे विकास कार्यों पर प्रभाव पड़ता है. यदि पूरे देश में चुनाव एक साथ कराए जाते हैं, तो इससे न केवल प्रशासनिक बोझ कम होगा, बल्कि विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में भी तेजी आएगी. इस कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष सुभाष सिंघी ने भी वन नेशन, वन इलेक्शन का समर्थन किया. उन्होंने कहा कि इससे चुनावी खर्च में कमी आएगी और प्रशासन पर पड़ने वाला अतिरिक्त दबाव भी कम होगा. उन्होंने इस पहल को देश के आर्थिक विकास के लिए जरूरी बताय. गौरतलब है कि केंद्र सरकार लंबे समय से वन नेशन, वन इलेक्शन की अवधारणा को लागू करने की दिशा में प्रयासरत है.

हिंडन एयरपोर्ट से भुवनेश्वर के लिए 30 मार्च से सीधी फ्लाइट

टिकट बुकिंग भी शुरू

गाजियाबाद एजेंसी। गाजियाबाद के हिंडन एयरपोर्ट से भुवनेश्वर के लिए उड़ान 30 मार्च से शुरू होगी। इस उड़ान के लिए एयर इंडिया एक्सप्रेस को अनुमति मिल गई है। कंपनी ने टिकटों की ऑनलाइन बुकिंग भी शुरू कर दी है।

पिछले सप्ताह बेंगलुरु, कोलकाता और गोवा की उड़ान हिंडन से शुरू हुई थी और अगले सप्ताह बेंगलुरु के लिए दिन में दूसरी उड़ान भी शुरू होने जा रही। इससे शहरवासियों के अलावा आसपास के जिलों में रहने वाले लोगों को भी सहूलियत होगी। हिंडन एयरपोर्ट की कनेक्टिविटी लगातार बढ़ रही है। इसके शुरू होने के छह साल बाद इस माह पहली बार हिंडन एयरपोर्ट से व्यावसायिक विमान ने उड़ान भरी थी। अब यहां से भुवनेश्वर के लिए भी उड़ान शुरू होने जा रही है। 30 मार्च को इसकी शुरुआत होगी। हिंडन एयरपोर्ट से

किशनगढ़, नांदेड़, आदमपुर, लुधियाना और बठिंडा, गोवा, कोलकाता और बेंगलुरु के लिए उड़ान चल रही। अब भुवनेश्वर के लिए भी उड़ान शुरू होने का रास्ता साफ हो गया है।

एयर इंडिया एक्सप्रेस ने इसकी पुष्टि की है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, हिंडन एयरपोर्ट से फ्लाइट सुबह 9:20 बजे रवाना होगी और सुबह 11:45 बजे भुवनेश्वर पहुंचेगी। वापसी में, यह दोपहर 12:15 बजे भुवनेश्वर से उड़ान शुरू होगी और दोपहर 2:30 बजे विमान हिंडन पहुंचेगा। भुवनेश्वर का गाजियाबाद से विमान का टिकट करीब 6400 रुपये से पौने 14 हजार रुपये तक है। वहीं, दिल्ली से भुवनेश्वर की टिकट का दाम 24 हजार रुपये तक दिख रहा है।

हिंडन एयरपोर्ट से 8 शहरों के लिए उड़ान सेवा मिल रही। जल्द हिंडन से जुड़ने वाले शहरों की संख्या 11 हो जाएगी। भुवनेश्वर से पहले 22 मार्च को हिंडन से चेन्नई और 23 मार्च से जम्मू के लिए उड़ान शुरू हो जाएगी। 10 मार्च से बेंगलुरु के लिए दिन में दूसरी उड़ान भी शुरू होने जा रही। ऐसे में हिंडन एयरपोर्ट पर लोगों की आवाजाही बढ़ जाएगी।

आसाराम और नारायण साईं के खिलाफ गवाही देने वालों पर किए हमले

नोएडा एजेंसी। आसाराम और नारायण साईं के खिलाफ गवाही देने वालों पर जानलेवा हमला करने वाला फरार आरोपी तामराज उर्फ ताम्रध्वज उर्फ गोलू को सूरत क्राइम ब्रांच ने गुरुवार को नोएडा से गिरफ्तार किया और अपने साथ ले गई। नोएडा पुलिस ने रिमांड पर लेने की जानकारी होने से इनकार किया और छह राज्य में से किसी पुलिस की ओर से इस मामले में संपर्क करने से भी मना किया है।

सूत्रों के मुताबिक मूलरूप से छत्तीसगढ़ के राजनाथगांव जिले के डोंगरियांव थाना क्षेत्र के बड़भूम गांव का तामराज रहने वाला है। वह आसाराम और नारायण साईं का कट्टर अनुयायी है। वह नौ मामलों में गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा और उत्तर प्रदेश राज्यों में वांछित था। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही थी, जबकि हरियाणा पुलिस ने उस पर 50 हजार रुपये का इनाम भी घोषित किया था। उस पर पानीपत सदर थाने में 2015 का मुकदमा दर्ज है। उधर, आरोपी तामराज गिरफ्तारी से बचने के लिए धर्म परिवर्तन करके नोएडा में रह रहा था और ईसाई बनकर अपना नाम स्टीफन रख लिया था।

एनडीटीवी के अनुसार, तामराज के खिलाफ एसिड अटैक, हत्या के प्रयास और हत्या सहित कई गंभीर आपराधिक आरोप थे। सूरत के पुलिस कमिश्नर अनुपम सिंह गहलोत ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि छत्तीसगढ़ निवासी तमराज साहू एक गिरोह का नेतृत्व कर रहा था जिसने आसाराम बापू मामले में मुख्य गवाहों पर हिंसक हमले किए थे। गैंग एसिड अटैक, चाकू घोंपने और गोलीबारी करने में माहिर था। साहू पहले पीड़ित के घर के पास किराए पर मकान लेता था, उनकी गतिविधियों पर नजर रखता और फिर भागने से पहले सही समय पर हमला कर देता था। आसाराम की गिरफ्तारी के बाद, साहू भूमिगत हो गया। वह गिरफ्तारी से बचने को लगातार पहचान बदलता रहा और पहचान छुपाकर अलग-अलग राज्यों में घूमता रहा। अधिकारियों ने उसे गिरफ्तार करने में मदद करने वाले को 50,000 रुपये का इनाम देने की घोषणा की हुई थी।

जम्मू कश्मीर विधानसभा में भाजपा विधायक ने कठुआ में लापता तीन नागरिकों का मुद्दा उठाया

जम्मू, एजेंसी। जम्मू कश्मीर विधानसभा में शुक्रवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एक विधायक ने कठुआ जिले के एक गांव से तीन नागरिकों के लापता होने का मुद्दा उठाया और सरकार से जवाब मांगा। अधिकारियों ने बताया कि शादी समारोह में शामिल होने जा रहे तीन लोग बृहस्पतिवार की रात लापता हो गए और कठुआ जिले के लोहाई मल्हार इलाके में उन्हें ढूंढने के लिए अभियान जारी है।

विधानसभा की कार्यवाही शुरू होते ही भाजपा सदस्य सतीश शर्मा ने बिलावर विधानसभा क्षेत्र के लोहाई मल्हार इलाके में लापता नागरिकों के बारे में सदन को सूचित करने के लिए व्यवस्था का प्रश्न उठाया। शर्मा ने कहा, ''मैं आपको तीन नागरिकों के लापता होने के बारे में सूचित करना चाहता हूं और हम इस संबंध में सरकार से जवाब चाहते हैं।'' विधानसभा अध्यक्ष अब्दुल रहीम राथेर ने जवाब में कहा कि प्रश्नकाल शुरू हो चुका है। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रश्न बाद में लिया जाए।

पंजाब पुलिस ने 501 स्थानों पर छापे मारे, 75 मादक पदार्थ तस्कर गिरफ्तार

चंडीगढ़, एजेंसी। पंजाब पुलिस ने बृहस्पतिवार को कहा कि मादक पदार्थों के खतरे के खिलाफ जारी अभियान के तहत उसने 501 स्थानों पर छापे मारे और 75 तस्करों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने बताया कि राज्यभर में 53 प्राथमिकी दर्ज की गई हैं। उसने बताया कि 75 तस्करों को गिरफ्तार किये जाने के साथ, छह दिन में गिरफ्तार किए गए मादक पदार्थ तस्करों की कुल संख्या 622 तक पहुंच गई है। मादक पदार्थ तस्करों के कब्जे से 8.2 किलोग्राम हेरोइन, 4.5 किलोग्राम अफीम, 1,294 नशीली गोलियां या इंजेक्शन और 1.04 लाख रुपये नकद बरामद किये गये। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव के निर्देश पर राज्य के सभी जिलों में यह अभियान चलाया गया। पिछले सप्ताह पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने राज्य को नशा मुक्त बनाने के लिए तीन महीने की समय सीमा तय की थी। राज्य सरकार द्वारा मादक पदार्थों की समस्या के विरुद्ध नए सिरे से चलाए जा रहे अभियान के तहत मादक पदार्थों के तस्करों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है और कुछ स्थानों पर उनकी संपत्तियों को भी ध्वस्त किया गया है। राज्य सरकार ने मादक पदार्थों के खतरे के खिलाफ कार्रवाई की निगरानी के लिए एक कैबिनेट उप-समिति भी गठित की। विशेष पुलिस महानिदेशक अर्पित शुक्ला ने बताया कि 1,700 से अधिक पुलिसकर्मियों वाले 250 से अधिक पुलिस दलों ने पूरे राज्य में छापेमारी की और दिनभर चले अभियान के दौरान 635 संदिग्ध व्यक्तियों की जांच की। इस बीच, अमृतसर नगर निगम ने पंजाब पुलिस के सहयोग से मादक पदार्थ तस्करों द्वारा बनाये गये दो मंजिला मकानों और दुकानों को ध्वस्त कर दिया। अमृतसर के पुलिस आयुक्त गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि ध्वस्त की गई संपत्तियां दो कुख्यात मादक पदार्थ तस्करों गुरमीत सिंह और संदीप सिंह उर्फ ??सोनू की थीं। कैबिनेट मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने कहा कि इस अपराध में शामिल लोगों या अपराधियों को बचाने का प्रयास करने वाले किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा।

नमो भारत कॉरिडोर के पास बनेंगे मॉल: अपार्टमेंट और अस्पताल, शॉपिंग के साथ मनोरंजन का मिलेगा डोज

गाजियाबाद, एजेंसी। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) ने दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर स्टेशनों के आसपास के इलाकों को विकसित करने की योजना तैयार की है। इसके तहत स्टेशन के आसपास मॉल, रिटेल-डाइनिंग-एंटरटेनमेंट हब, ऑफिस के साथ पार्किंग, किराये के मकान, स्टूडियो अपार्टमेंट, अस्पताल और थीम पार्क विकसित किए जाएंगे। इसके लिए जमीन चिह्नित कर ली है। एनसीआरटीसी ने परियोजना प्रबंधन इकाई को शामिल करने के लिए निविदाएं आमंत्रित की हैं।

नमो भारत ट्रेन का संचालन दिल्ली के न्यू अशोक नगर से मेरठ दक्षिण स्टेशन तक किया जा रहा। अगले कुछ महीने में ट्रेन 82 किलोमीटर लंबे पूरे कॉरिडोर पर दौड़ने लगेगी। इसके बाद ट्रेन में यात्रियों की संख्या में इजाफा होगा। इसे ध्यान में रखते हुए एनसीआरटीसी ने यात्रियों को अधिक सुविधाएं उपलब्ध कराने और स्टेशनों के आसपास के इलाकों को विकसित करने की योजना तैयार की है। एनसीआरटीसी के अधिकारी का दावा है कि इन स्थानों को व्यावसायिक और आवासीय केंद्रों के रूप में विकसित किया जाना है। इससे आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा।

अधिकारियों ने बताया कि इस योजना के तहत गाजियाबाद, दुहाई डिपो, भैंसाली (मेरठ) और मोदीपुरम डिपो में बड़े भूखंडों को

भी विकसित किया जाएगा। गाजियाबाद का भूखंड लगभग 2.4 हेक्टेयर, दुहाई डिपो 31 हेक्टेयर, भैंसाली 9.7 हेक्टेयर और मोदीपुरम 31 हेक्टेयर में फैला है। इसके अलावा योजना के तहत सराय काले खां, न्यू अशोक नगर, आनंद विहार, गुलधर, मुरादनगर, मोदीनगर दक्षिण और उत्तर, मेरठ दक्षिण, शताब्दीनगर और मोदीपुरम के आसपास छोटे भूखंड विकसित किए जाएंगे।

परियोजना के विकास के लिए ट्रांजिट-ओरिएंटेड डेवलपमेंट (टीओडी) मॉडल अपनाया गया है। इसमें ट्रांजिट स्टेशनों के पास उच्च घनत्व वाली मिश्रित भूमि उपयोग वाली संरचनाएं विकसित होंगी। इससे यात्रा आसान होगी। इससे उभरते शहरी केंद्रों को गति मिलेगी। दिल्ली, मेरठ और गाजियाबाद विकास प्राधिकरण इसे लागू कर रहे हैं। शहरों में इस मॉडल के तहत आर्थिक विकास को नई दिशा मिली है। भारत की राष्ट्रीय मेट्रो रेल नीति (2017) भी इस तरह की योजनाओं को अपनाने पर जोर दे रही हैं।

गांव का लड़का करता था परेशान, वंदे भारत ट्रेन के आगे कूद गई हरियाणा की एक बेटी

सोनीपत एजेंसी। हरियाणा के सोनीपत में एक नाबालिग बच्ची ने ट्रेन के आगे कूदकर अपनी जान दे दी। पुलिस के मुताबिक, सोनीपत के गनौर में इस लड़की को गांव का ही एक लड़का परेशान करता था। लड़की के पिता की शिकायत पर आरोपी लड़के और उसके दो दोस्तों के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का केस दर्ज किया गया है। एक को गिरफ्तार भी किया गया है।

सोनीपत जीआरपी के एसएचओ जोगिंदर सिंह ने कहा, लड़की बुधवार को गनौर के पास वंदे भारत ट्रेन के आगे कूद गई। परिवार के मुताबिक गांव का ही एक लड़का उसे परेशान करता था जिसकी वजह से उसने ऐसा कदम उठाया।

घटना के बाद परिवार के लोगों ने शव की पहचान की जो काफी क्षत-विक्षत हो चुका था। लड़की 12वीं क्लास की स्टूडेंट थी। आरोप है कि लड़का लंबे समय से उसे परेशान कर रहा था। दुखी होकर उसने अपनी जिंदगी खत्म करने का फैसला कर लिया और वंदे भारत ट्रेन के आगे कूद गई। पुलिस अधिकारी ने बताया कि उसका साथ देने वाले दो लड़कों के खिलाफ भी केस दर्ज किया गया है। आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोप में संबंधित धाराओं में केस दर्ज किया गया है। एसएचओ ने बताया कि एक लड़के को गिरफ्तार कर लिया गया है।

बिहार समेत देश-दुनिया की ताजा-तरीन खबरों को जानने के लिए लॉगऑन करें : www.sonvarshavani.com

भारत के खिलाफ फाइनल से बाहर हो सकता है न्यूजीलैंड का यह तेज गेंदबाज

दुबई, एजेंसी। न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज मैट हेनरी कंधे की चोट के कंधे की चोट के कारण भारत के खिलाफ चैम्पियंस ट्रॉफी फाइनल से बाहर हो सकते हैं हालांकि कोच गैरी स्टीड को उम्मीद है कि वह रविवार को फाइनल तक ठीक हो जाएंगे। हेनरी ने अब तक टूर्नामेंट में सर्वाधिक 10 विकेट लिए हैं जिसमें भारत के खिलाफ ग्रुप मैच में पांच विकेट शामिल है। 33 वर्ष के हेनरी दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ लाहौर में बुधवार को सेमीफाइनल के दौरान घायल हो गए थे। स्टीड ने शुक्रवार को पत्रकारों से कहा, 'मैट के कंधे में चोट लगी है और वह असहज महसूस कर रहा है। उसका स्कैन कराया गया है और उम्मीद है कि वह मैच तक फिट हो जाएगा।

टीमें- भारतः

रोहित शर्मा (कप्तान), शुबमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, अक्षर पटेल, केएल राहुल (विकेटकीपर), हार्दिक पांड्या, रवींद्र जडेजा, मोहम्मद शमी, कुलदीप यादव, वरुण चक्रवर्ती, ऋषभ पंत, वाशिंगटन सुंदर, अर्शदीप सिंह, हर्षित राणा

न्यूजीलैंडः

विल यंग, रचिन रविंद्र, केन विलियमसन, डेरिल मिशेल, टॉम लाथम (विकेटकीपर), ग्लेन फिलिप्स, माइकल ब्रेसवेल, मिशेल सेंटनर (कप्तान), मैट हेनरी, काइल जैमीसन, विलियम ओरोर्के, जैकब डफी, डेवोन कॉनवे, मार्क चैपमैन, नाथन स्मिथ

इंडिया-न्यूजीलैंड चैम्पियंस ट्रॉफी फाईनल

टीम इंडिया के वो 4 इंतकाम, बस 9 मार्च का इंतजार... कीवियों से हर दर्द का हिसाब लेगी रोहित ब्रिगेड

नई दिल्ली, एजेंसी। 9 मार्च 2025 की तारीख... भारतीय टीम न्यूजीलैंड (कीवी टीम) से चैम्पियंस ट्रॉफी फाइनल के दिन 3 इंतकाम लेगी... क्रिकेट के मैदान पर जो जख्म कीवी टीम ने साल 2000 में पहली बार दिया, 2019 में दूसरी बार, 2021 में तीसरी और हाल फिल्हाल में 2024 में चौथी बार... इन सभी का बदला लेने का समय गया है.

दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में टीम इंडिया चैम्पियंस ट्रॉफी में न्यूजीलैंड को रौंदकर सारा पुराना हिसाब सूद समेत वसूलने के लिए उतरेगी. न्यूजीलैंड ने टीम इंडिया का लास्ट मोमेंट पर कई बार खेल बिगाड़ा है.

कई बार भारतीय टीम को हार का जख्म दिया है. वो भी तब, जब भारतीय टीम बड़े खिताब की ओर अग्रसर थी. इन 4 पलों के दौरान भारतीय टीम के जीतने की सबसे ज्यादा दावेदारी जताई गई, लेकिन न्यूजीलैंड ने टीम इंडिया के सारे समीकरण फेल कर दिए.

मौका 1:

आपको पहले करीब दो दशक पहले ले चलते हैं, साल 2000 था, तारीख 15 अक्टूबर थी, मैदान नैरौबी का था. मौका भारत और न्यूजीलैंड के बीच चैम्पियंस ट्रॉफी के फाइनल का था. तब के भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने 119 रनों की पारी खेली, सचि?न तेंदुलकर ने 69 रन बनाए और स्कोर बना 264/6. इसके बाद न्यूजीलैंड ने रनचेज शुरू किया, भारतीय गेंदबाजों ने शुरुआत में ही न्यूजीलैंड की कमर तोड़ दी. क्रेग स्पीयरमैन (3) कप्तान स्टीफन फ्लेमिंग (5) दोनों को वेंकटेश प्रसाद ने चलता कर दिया. 132 के स्कोर तक आते-आते न्यूजीलैंड के पांच विकेट धड़ाम हो गए, यहां से लगा कि भारतीय टीम इस मुकाबले को आसानी से जीत लेगी.

लेकिन यहीं से क्रिस केयर्न्स और क्रिस हैरिस (46) ने ऐसा खूंटा गाड़ा कि अपनी टीम को

जीत दिलाकर ही दम ली. केयर्न्स तो 102 रनों पर नाबाद लौटे. इस तरह न्यूजीलैंड ने पहली बार कोई आईसीसी का टूर्नामेंट जीता. यह पहली बार था जब न्यूजीलैंड ने भारत का सपना किसी आईसीसी टूर्नामेंट में तोड़ा था.

मौका 2

आज से थोड़ा सा पीछे चलते हैं, वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप के ओपनिंगसीजन का फाइनल जून 2021 में खेला गया था. भारत और न्यूजीलैंड की टीम इस फाइनल को खेल रही थीं. लेकिन इस मुकाबले में एक बार फिर से न्यूजीलैंड की टीम भारत पर भारी पड़ी. न्यूजीलैंड ने इस फाइनल को 8 विकेट से जीता. इस पूरे टेस्ट मैच में भारतीय टीम कहीं से भी लय में नहीं दिखी. यह दूसरी बार था, जब 2000 की चैम्पियंस ट्रॉफी के फाइनल के बाद न्यूजीलैंड ने किसी बड़े के टूर्नामेंट में भारत को रौंदा हो.

मौका 3:

अब बताते हैं वो तीसरा किस्सा, जहां न्यूजीलैंड ने भारत का सपना तोड़ा. 11 जून 2025 से डब्ल्यूटीसी का फाइनल अब साउथ अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के बीच होना है. लेकिन एक समय यह डब्ल्यूटीसी फाइनल 2025 खेलने की सबसे बड़ी दावेदार भारतीय टीम थी. भारत को न्यूजीलैंड के खिलाफ 3 और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 5 टेस्ट मैच खेलने थे. लेकिन न्यूजीलैंड ने भारत को टेस्ट सीरीज में 3-0 से हराया, इसके साथ ही न्यूजीलैंड पहली ऐसी टीम बन गई, जिसने भारतीय टीम को उसकी धरती पर व्हाइटवॉश किया हो. इस हार से भारतीय टीम का संतुलन इस तरह बिगड़ा कि ऑस्ट्रेलियाई दौरे पर भी इसका असर दिखा, जहां भारत को 3-1 से सीरीज गंवानी पड़ी.

अब अंत में आपको बताते हैं भारत न्यूजीलैंड का वो मुकाबला, जहां भारतीय टीम खिताब जीतने के बेहद करीब थी, लेकिन फिर भारतीय टीम के हाथ से जीत रेत की तरह फिसल गई.

मौका 4:

मैनचेस्टर में खेले गए आईसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप 2019 के पहले सेमीफाइनल मुकाबले को कोई भारतीय फैन कैसे भूल सकता है. जहां न्यूजीलैंड ने भारत को हराकर तीसरी बार वनडे वर्ल्ड चैम्पियन बनने का सपना तोड़ दिया था. यह मुकाबला महेंद्र सिंह धोनी का भी आखिरी इंटरनेशनल मुकाबला बन गया था. इस मैच में न्यूजीलैंड की टीम 239/8 पर सिमट गई थी. भारत के पास जीत का मौका था, एक समय भारत के 24 पर 4 विकेट, फिर 71 पर 5 विकेट गिर गए थे. पर पंड्या (32), रवींद्र जडेजा (77) और अंत में एमएस धोनी (50) ने अपनी पारि?यों से मैच लड़ाया,लेकिन धोनी को जैसे ही मार्टिन गुप्टिल ने रन आउट किया, भारत की सारी उम्मीदें खत्म हो गई. न्यूजीलैंड ने टीम इंडिया को उस मुकाबले में 18 रनों से हराया था. यानी यह साफ है कि न्यूजीलैंड ने भारतीय टीम को कई मौके पर इस तरह हराया, जहां टीम के हारने की उम्मीद नहीं थी. कुल मिलाकर 9 मार्च न्यूजीलैंड से बदला लेने का दिन होगा.

हर दिन होना चाहिए महिला दिवस : साक्षी मलिक

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत की प्रसिद्ध महिला पहलवान साक्षी मलिक ने ग्बातचीत के दौरान महिला दिवस के मौके पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने न केवल अपने

व्यक्तिगत अनुभवों को उजागर किया, बल्कि समाज में बदलते परिवेश और महिलाओं की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। ओलंपिक मेडलिस्ट साक्षी मलिक का मानना है कि महिलाओं के संघर्ष और योगदान को केवल एक दिन तक सीमित नहीं करना चाहिए। साक्षी मलिक का कहना है कि महिलाओं को किसी एक खास दिन, जैसे 8 मार्च को मनाया जाने वाले अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। उनके अनुसार, हर दिन महिला दिवस होना चाहिए। उन्होंने अपने जीवन का उदाहरण देते हुए बताया कि एक महिला अपने जीवन में कई तरह के संघर्षों का सामना करती है। साक्षी ने कहा, जब मैंने कुश्ती शुरू की थी, तब मुझे बेहद कम संसाधनों के साथ तैयारी करनी पड़ी थी। इन कठिनाइयों के बावजूद मैंने न केवल अपने करियर में सफलता हासिल की, बल्कि मां बनने के बाद भी अपने कार्यों को संतुलित किया। एक मां के पास कई जिम्मेदारियां होती हैं और वह इन सभी को एक साथ संभाल सकती है। इसलिए, महिलाओं के योगदान को हर दिन सम्मान मिलना चाहिए। साक्षी ने कहा कि पहले हरियाणा में लड़के और लड़कियों के बीच बहुत भेदभाव होता था। लेकिन अब इसमें काफी बदलाव आया है। उन्होंने अपने मेडल जीतने के अनुभव को साझा करते हुए बताया कि उनकी सफलता ने समाज की सोच को बदलने में मदद की। महिला खिलाड़ियों की उपलब्धियों पर फिल्में बनीं, जिसके बाद लोग अपनी बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित हुए। आज लड़कियां हर क्षेत्र में बेहतरीन प्रदर्शन कर रही हैं, चाहे वह खेल हो या कोई अन्य क्षेत्र। साक्षी ने हाल के ओलंपिक का उदाहरण दिया, जहां हरियाणा की मनु भाकर ने इतिहास रचकर यह साबित कर दिया कि लड़कियां किसी से कम नहीं हैं। साक्षी का मानना है कि अगर कोई महिला अपने लक्ष्य को लेकर दृढ़ संकल्पित, केंद्रित और अनुशासित है, तो वह कुछ भी हासिल कर सकती है। उन्होंने महिला खिलाड़ियों के सामने आने वाली चुनौतियों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा, महिला खिलाड़ी का खेल करियर बहुत छोटा होता है। हम इतना लंबा नहीं खींच पाते हैं क्योंकि बहुत सारी चीजें सोचनी पड़ती हैं। मेरा महिला खिलाड़ियों को यही संदेश है कि बिना डरे और घबराए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें। हमने भी अन्याय के खिलाफ आवाज उठाया, उसके खिलाफ लड़ना सीखा और आंदोलन भी किया। मैं यही कहूंगी कि आप किसी भी क्षेत्र में हों, कार्य करते रहिए। देश के लिए अच्छा कार्य करते रहें।

विमेंस वनडे वर्ल्डकप से पहले ट्राई सीरीज खेलेगी भारतीय टीम

श्रीलंका मेजबानी करेगा

नई दिल्ली, एजेंसी। वनडे वर्ल्ड कप से पहले भारतीय विमेंस टीम श्रीलंका में अप्रैल-मई में वनडे ट्राई सीरीज में खेलेगी। श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड ने गुरुवार को इसका ऐलान किया। श्रीलंका और टीम इंडिया के अलावा तीसरी टीम साउथ अफ्रीका होगी। वनडे वर्ल्ड कप अक्टूबर में भारत में होना है। तीनों टीमें दो- दो बार एक दूसरे से भिड़ेंगी हर एक टीम दो बार अन्य टीमों के साथ खेलेगी, यानी एक टीम चार मैच खेलेगी। पहले दो स्थान पर रहने वाली टीमें फाइनल खेलेंगे। सीरीज की शुरुआत मेजबान श्रीलंका और भारत के बीच होने वाले मुकाबले से होगी। ये सभी मैच दिन में खेले जाएंगे, जो 27 अप्रैल से 11 मई तक कोलंबो के आर प्रेमदासा स्टेडियम में खेले जाएंगे।

श्रेयस अय्यर को मिल सकता है बड़ा इनाम

बीसीसीआई ने चैंपियंस ट्रॉफी के बाद बनाया ऐसा करने का प्लान

नई दिल्ली, एजेंसी। कुछ खिलाड़ी होते हैं जिनका नाम होता है. और, कुछ वो होते हैं, जिनका नाम तो नहीं होता पर काम बोलता रहता है. श्रेयस अय्यर इसी दूसरी कैटेगरी के खिलाड़ी है. विराट-रोहित जैसे बड़े नामों के बीच भले ही चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में उनका नाम उतना नहीं गूंज रहा लेकिन उनके अपने बल्ले के जोर पर वो टूर्नामेंट के टॉप रनवीरों में शामिल हैं. अय्यर को उनके उसी प्रदर्शन का चैंपियंस ट्रॉफी के बाद इनाम मिल सकता है. खबर है कि बीसीसीआई चैंपियंस ट्रॉफी के खत्म होने के बाद खिलाड़ियों के सेंट्रल कॉन्ट्रेक्ट को रिन्यू करेगी, जिसमें फिर से श्रेयस अय्यर की एंट्री हो सकती है.

अय्यर की होगी नए कॉन्ट्रेक्ट में वापसी: तो क्या अभी तक श्रेयस अय्यर बीसीसीआई की सालाना कॉन्ट्रेक्ट प्लेयर लिस्ट से बाहर थे? जी हां, वो बाहर थे क्योंकि पिछले साल बीसीसीआई ने उन्हें अनुशासनहीनता का दोषी पाते हुए एक्शन लिया था. उन्होंने घरेलू क्रिकेट ना खेलकर बीसीसीआई का नियम तोड़ा था. लेकिन, अब कहानी बदल चुकी है. श्रेयस अय्यर ने ना सिर्फ उस घटना से सबक लिया है बल्कि खुद

में पहले से कहीं ज्यादा मैच्योरिटी भी लेकर आए हैं. रिपोर्ट के मुताबिक बीसीसीआई ने चैंपियंस ट्रॉफी के बाद खिलाड़ियों के सालाना करार को रिन्यू करने का फैसला इसलिए किया, क्योंकि वो इसआईसीसी टूर्नामेंट में उनके प्रदर्शन की समीक्षा करना चाहती थी. नए कॉन्ट्रेक्ट में खिलाड़ियों के ग्रेड को लेकर फैसला उनके तीनों फॉर्मेट में प्रदर्शन के आधार पर होगा. रिपोर्ट में ये भी कहा गया कि बीसीसीआई ग्रेड ए प्लस की भी समीक्षा करेगी , जिसमें अभी रोहित शर्मा, विराट कोहली, जसप्रीत बुमराह और रवींद्र जडेजा हैं.

रोहित-विराट होंगे टॉप ग्रेड से बाहर?

रिपोर्ट के मुताबिक, आने वाले नए सेंट्रल कॉन्ट्रेक्ट में रोहित-विराट और जडेजा की जगह खतरे में है. इन तीनों को टॉप ग्रेड यानी ग्रेड ए प्लस से बाहर किया जा सकता है. ऐसा इसलिए क्योंकि बीसीसीआई वहां सिर्फ उन्हीं खिलाड़ियों को तरजीह देने की सोच रही है, जो तीनों फॉर्मेट खेल रहे हैं.

सुनील छेत्री फिर करेंगे वापसी

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय फुटबॉल के लिए यह एक बहुत बड़ी खबर है। 40 वर्षीय स्टार फुटबॉलर सुनील छेत्री ने तत्काल प्रभाव से संन्यास से वापसी करने का फैसला किया है। सुनील छेत्री ने मार्च 2025 से शुरू होने वाले आगामी फीफा अंतरराष्ट्रीय विंडो में भारतीय टीम की मदद करने के लिए यह फैसला लिया है। वह 25 मार्च को बांग्लादेश के खिलाफ एएफसी एशियन कप 2027 के क्वालिफायर के तीसरे दौर में खेलेंगे। शिलांग का जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम भारतीय सीनियर पुरुष टीम के दो मैचों की मेजबानी करेग.

इस संबंध में इंडियन फुटबॉल टीम की ओर से 6 मार्च 2025 को ङ्क पर एक पोस्ट शेयर की गई। पोस्ट में सुनील छेत्री की तस्वीर के साथ जो कैप्शन दिया गया, उसमें लिखा था, 'कप्तान, लीडर, दिग्गज खिलाड़ी मार्च में फीफा इंटरनेशनल विंडो के लिए भारतीय राष्ट्रीय टीम में वापसी करेंगे।' सुनील छेत्री ने यह कदम अपने शानदार करियर के बाद संन्यास की घोषणा के एक साल से भी कम समय बाद उठाया है। उनके संन्यास के बाद भारतीय फुटबॉल में एक बड़ा खालीपन पैदा हो गया है जिसे भरना अभी बाकी है। भारत के सर्वकालिक अग्रणी गोल-स्कोरर सुनील छेत्री ने

पिछले साल जून में कोलकाता के साल्ट लेक स्टेडियम में अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल से संन्यास की घोषणा की थी। उन्होंने भारतीय टीम को आंसुओं के साथ अलविदा कहा था। तब भारत ने फीफा विश्व कप 2026 क्वालिफायर में कुवैत के साथ गोल रहित ड्रॉ खेला था।

सुनील छेत्री पुरुष फुटबॉल में सर्वकालिक अग्रणी गोल करने वालों की सूची में केवल क्रिस्टियानो रोनाल्डो, लियोनेल मेसी और अली डेई से पीछे हैं। उन्होंने अपने करियर के दौरान 151 मैच में 94 गोल किए हैं। संन्यास से लौटने के बाद सुनील छेत्री को 100 या उससे अधिक अंतरराष्ट्रीय गोल करने वाले खिलाड़ियों की विशिष्ट सूची में शामिल होने का अवसर मिलेगा।

सुनील छेत्री ने 2005 में पाकिस्तान के खिलाफ मैच से डेब्यू किया था। सुनील छेत्री ने इंडियन सुपर लीग में बेंगलुरु एफसी के लिए अपना खेल जारी रखा।

केकेआर में गंभीर की वापसी पर शाहरुख बोले-मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह हमें छोड़कर चले गए

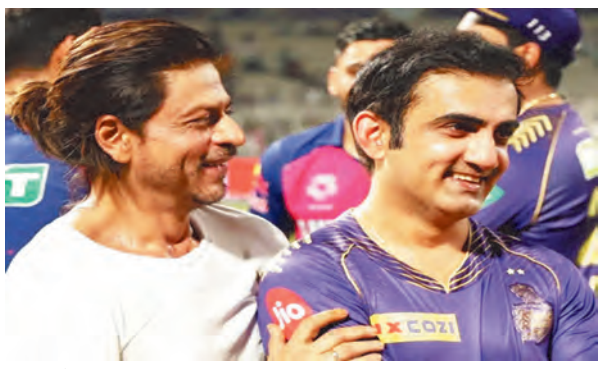

नई दिल्ली, एजेंसी। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) टीम के मालिक और बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान ने खुलासा किया कि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के आखिरी संस्करण से पहले मेंटर के तौर पर फ्रैंचाइजी में लौटने से पहले उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि गौतम गंभीर उन्हें छोड़कर चले गए हैं। गंभीर की वापसी ने फ्रेंचाइजी के लिए कमाल कर दिया क्योंकि उन्होंने 10 साल के अंतराल के बाद अपना तीसरा खिताब जीता। श्रेयस अय्यर की अगुवाई वाली टीम फाइनल में सनराइजर्स हैदराबाद को हराकर चैंपियन बनी। शाहरुख ने जियो हॉटस्टार के पावर प्ले पर कहा, मैंने कभी नहीं सोचा था कि गौतम गंभीर हमें छोड़कर चले गए हैं। गौतम के साथ वर्षों से हमेशा एक प्यारा रिश्ता रहा है। कुछ खिलाड़ी ऐसे हैं जिनके साथ दोस्ती मजबूत बनी हुई है और गौतम गंभीर उनमें से एक हैं। उनके लिए यह एक बड़ी घर वापसी थी। हालांकि, गंभीर का केकेआर में रहना केवल 2024 सीजन तक ही सीमित था, क्योंकि पिछले साल जुलाई में राहुल द्रविड़ के जाने के बाद उन्हें भारत का मुख्य कोच बनाया गया था। केकेआर के पूर्व बल्लेबाज रॉबिन उथप्पा ने कहा कि 2017 में गंभीर के फ्रेंचाइज से जाने से एक खालीपन पैदा हो गया, जिसका असर टीम के प्रदर्शन पर भी पड़ा। ÷जब गौतम केकेआर के साथ नहीं थे, तो ऐसा लगा- अब चीजें कहां से ठीक होंगी?

उनके जाने के बाद से, दिशा का थोड़ा नुकसान हुआ। मुझे लगता है, एक समय पर घबराहट होने लगी थी। बाहर से, आप महसूस कर सकते थे कि चीजें उतनी सहज नहीं थीं, जितनी लग रही थीं। आप हमेशा केकेआर से उच्च स्तर पर प्रदर्शन की उम्मीद करते हैं, और जब प्रदर्शन टीम के आभा से मेल नहीं खाता, तो यह स्पष्ट हो गया कि कुछ बदलना होगा। उथप्पा ने कहा, जैसे ही मैंने सुना कि गौतम गंभीर वापस आ रहे हैं, मुझे याद है कि मैंने ट्वीट किया था कि सबसे अच्छी बात यह है कि गौतम गंभीर के जाने के बाद से केकेआर , क्या गौतम गंभीर की वापसी कर रहा है!

फीफा ने पाकिस्तान-रूस समेत इन देशों को फुटबॉल वर्ल्ड कप से किया बैन, बड़ी वजह आई सामने

नई दिल्ली, एजेंसी। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी का मेजबान पाकिस्तान टूर्नामेंट से बाहर हो चुका है. वहीं, भारतीय टीम ने टूर्नामेंट के लिए पाकिस्तान दौरे से इनकार कर दिया. रोहित शर्मा की कप्तानी वाली टीम इंडिया हाइब्रिड मॉडल के तहत अपने मैच दुबई में खेल रही है. वहीं, अब क्रिकेट के बाद पाकिस्तान को फुटबॉल में झटका लगा है. दरअसल, फीफा ने पाकिस्तान के अलावा रूस और कॉन्गो को वर्ल्ड कप 2026 से बैन कर दिया है. चैंपियंस ट्रॉफी में किरकिरी के बाद फीफा वर्ल्ड कप से बैन होना पाकिस्तान के लिए बड़ा झटका माना जा रहा है.

फीफा वर्ल्ड कप 2026 की मेजबानी संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको करेगा. इस टूर्नामेंट के इतिहास में पहली बार 48 टीमें भाग लेंगी. लिहाजा, यह टूर्नामेंट काफी बड़ा होने वाला है. लेकिन इस बीच फीफा ने पाकिस्तान के अलावा रूस और कांगो को बैन कर दिया है.

इंग्लैंड सीरीज के लिए भूख और बढ़ गई है, दोनों हाथों से मौका लपकने को तैयार हूं, टीम इंडिया में वापसी पर बोले चेतेश्वर पुजारा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय टेस्ट क्रिकेट के सबसे बड़े नामों में से एक चेतेश्वर पुजारा फिलहाल टीम से बाहर चल रहे हैं। हालांकि, वह भारतीय टीम में वापसी का मौका हासिल करने और जोरदार कमबैक करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। चेतेश्वर पुजारा भारतीय टेस्ट टीम के नंबर 3 स्थान के मजबूत स्तंभ रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड में उनकी शानदार पारियों और दृढ़ संकल्प को कौन

भूल सकता है। हालांकि, पिछले कुछ समय से उनकी फॉर्म में गिरावट देखी गई। इसके चलते डब्ल्यूटीसी 2023 फाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ नाकामी के बाद उन्हें टीम से बाहर कर दिया गया। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2024-25 में भारत को 1-3 से हार का सामना करना पड़ा, खासकर अंतिम 4 टेस्ट में नंबर 3 की स्थिति टीम के लिए एक बड़ी समस्या बनी रही। ऐसे में, चेतेश्वर पुजारा की गैरमौजूदगी को काफी महसूस किया गया। अब सवाल यह उठता है कि क्या पुजारा घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन कर वापसी कर सकते हैं? क्या चयनकर्ता उन्हें एक और मौका देंगे?

बेन स्टोक्स को मिल सकती है इंग्लैंड टीम की कप्तानी

लंदन, एजेंसी। जोस बटलर के इस्तीफे के बाद इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान बेन स्टोक्स सीमित ओवरों के प्रारूप में अगले कप्तान हो सकते हैं और ईसीबी के निदेशक रॉब की ने कहा कि खुद को 'अविश्वसनीय रणनीतिकार साबित कर चुके इस करिश्माई हरफनमौला के नाम पर विचार नहीं करने वाला मूर्ख ही होगा।

चैम्पियंस ट्रॉफी में इंग्लैंड के एक भी जीत दर्ज नहीं कर पाने के बाद बटलर ने

टूर्नामेंट के बीच में ही कप्तानी छोड़ दी थी। इससे पहले भारत में श्रृंखला में भी उसे पराजय मिली। 33 बरस के स्टोक्स हैमस्ट्रिंग चोट के कारण चैम्पियंस ट्रॉफी से बाहर थे। उन्होंने 2023 विश्व कप के बाद से वनडे क्रिकेट नहीं खेली है जब उन्होंने इस प्रारूप से विदा लेने का अपना फैसला वापस ले लिया था।

इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड में पुरुष क्रिकेट निदेशक की ने कहा, 'बेन स्टोक्स सर्वश्रेष्ठ कप्तानों में से है। उसके नाम पर विचार नहीं करने वाला मूर्ख होगा। उन्होंने कहा, 'वह अविश्वसनीय रूप से अच्छा रणनीतिकार है जो हमने टेस्ट क्रिकेट में देखा। वह खिलाड़ियों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करा पाता है। वह ऐसा इंसान है जो दबाव के हालात में खिलाड़ियों की ढाल बनकर उन्हें खुद पर भरोसा रखने में मदद करता है। स्टोक्स इस समय अबुधाबी में इंग्लैंड लायंस अभ्यास समूह के साथ हैं और भारत के खिलाफ जून से अगस्त तक होने वाली पांच टेस्ट की श्रृंखला तक फिट हो जाएंगे।

बिहार समेत देश-दुनिया की ताजा-तरीन खबरों को जानने के लिए लॉगऑन करें : www.sonvarshavani.com

न्यूज बाइट्स

शिक्षक को सेवानिवृत्ति पर दी गई विदाई

बारूण (औरंगाबाद) (नि. सं.)। बारूण के झूमर डिहरा स्थित उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में प्रभारी प्रधानाध्यापक मिथिलेश कुमार को सेवानिवृति के बाद समारोह आयोजित कर भावभीनी विदाई दी गई।सर्वप्रथम मुख्य अतिथि शिक्षक नेता एवं समाजसेवी छठू सिंह एवं नव पदस्थापित तथा सेवानिवृत प्रभारी प्रधानाध्यापक द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इसके बाद विद्यालय की बच्चियां खुशी और सोनाली ने आइए आपका इंतजार था..बोल के साथ गीत गाकर आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया।इसके बाद चांदनी और सोनी ने भी मन की वीणा से गुंजित ध्वनि.....बोल के साथ एक स्वागत गीत प्रस्तुत कर अतिथियों का स्वागत किया।इसके बाद विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा आगत अतिथियों का अंगवस्त्र और पुष्प हार से स्वागत किया गया। उपस्थित अतिथियों ने मिथिलेश कुमार सेवानिवृत प्रधानाध्यापक के कार्यकलापों तथा उनके कार्य अवधि में विद्यालय में उनके किए गए कार्यों के प्रति अपने उद्गार व्यक्त करते हुए खुले दिल से प्रशंसा की।

छात्र राजद का प्रखंड स्तरीय छात्र संवाद सह संगठनात्मक बैठक संपन्न

रफीगंज (औरंगाबाद) (नि. सं.)। छात्र राजद इकाई प्रखंड स्तरीय छात्र संवाद सह संगठनात्मक बैठक राजा बाग़ीचा स्थित एक निजी भवन में किया गया। छात्र राजद प्रखंड अध्यक्ष सोनू कुमार के नेतृत्व में आयोजित की गई। इस बैठक के अध्यक्षता छात्र राजद के प्रखंड अध्यक्ष सोनू कुमार एवं संचालन संतोष यादव ने किया। राजद के प्रदेश महासचिव कौलेश्वर यादव, राजद जिला अध्यक्ष अमरेन्द्र कुशवाहा, पूर्व जिला परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि डॉ. संजय यादव एवं जिला परिषद सदस्य संकर यादवेन्दु, छात्र जिलाध्यक्ष चंदन कुमार को माला एवं अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया।

अज्ञात वाहन की चपेट में आने से युवक की मौत, परिजनों में मचा कोहराम

निज संवाददाता | गोह (औरंगाबाद)

जिले के गोह थाना क्षेत्र में गुरुवार और शुक्रवार की मध्य रात्रि एक दर्दनाक सड़क हादसे में बाइक सवार युवक की मौत हो गई। घटना एसएच-68 मोथा मोड़ के पास हुई, जहां विपरीत दिशा से आ रहे एक तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने जोरदार टक्कर मार दी। दुर्घटना इतनी भयावह थी कि युवक की मौके पर ही मौत हो गई। मृतक की पहचान गया जिले के टिकारी थाना क्षेत्र के ढिबरिया गांव निवासी 25 वर्षीय रविरंजन कुमार के रूप में हुई। वह अपनी अपाची बाइक से गोह से दरार स्थित अपने रिश्तेदार के घर जा रहा था। लेकिन मोथा मोड़ के पास अचानक एक तेज रफ्तार वाहन ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि आसपास के ग्रामीण दहशत में आ गए और मौके पर पहुंचे। उन्होंने देखा कि युवक सड़क किनारे मृत अवस्था में पड़ा था और उसकी बाइक क्षतिग्रस्त हालत में दूर गिरी हुई थी। घटना की जानकारी मिलते ही गोह थानाध्यक्ष सुधीश कुमार पुलिस टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर कागजी प्रक्रिया पूरी की और उसे पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल, औरंगाबाद भेज दिया।

मृतक के पास मिले मोबाइल फोन और आधार कार्ड से उसकी पहचान की गई और पुलिस ने तुरंत उसके परिजनों को सूचना दी। बेटे की मौत की खबर सुनते ही परिवार में कोहराम मच गया। मृतक रविरंजन कुमार अपने परिवार का इकलौता बेटा था। उसकी असमय मौत से घर में मातम पसर गया है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। पिता बार-बार बेसुध हो जा रहे थे, वहीं मां बेटे की तस्वीरें देखकर जोर-जोर से बिलख रही थी। पुलिस ने बताया कि परिजनों के आवेदन के बाद आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी। वहीं, अज्ञात वाहन की पहचान के लिए आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही वाहन चालक को पकड़कर इस हादसे के जिम्मेदार व्यक्ति को सजा दिलाई जाएगी। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि एसएच-68 मोथा मोड़ पर स्पीड ब्रेकर लगाया जाए, ताकि ऐसी घटनाओं को रोका जा सके। ग्रामीणों ने बताया कि यह इलाका दुर्घटना संभावित क्षेत्र है, जहां आए दिन हादसे होते रहते हैं।

पंडाल खोलने के दौरान छत से गिरा टेंट कर्मी, हालत गंभीर

हसपुरा (औरंगाबाद) (नि.सं.)। हसपुरा बाजार के श्री भास्कर नगर में शादी समारोह में लगे टेंट को खोलने के क्रम में एक कर्मी छत से गिर कर बुरी तरह जख्मी हो गया। बता दें कि गुरुवार की रात श्री भास्कर नगर में बारात आई हुई थी। अगले सुबह बारात की विदाई के बाद टेंटकर्मी पंडाल खोल रहा था। अचानक एक कर्मी का संतुलन बिगड़ा और दो मंजिला छत से नीचे रोड पर गिर गया। घायल युवक खुटहन गांव निवासी अमृत प्रसाद के 20 वर्षीय पुत्र सुमित कुमार है। प्राप्त जानकारी अनुसार युवक बेहद हीं गरीब परिवार से है। मेहनत मजदूरी कर किसी तरह अपने घर चला रहा है। दो भाई में यह बड़ा है। प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. कुणाल कामाख्या नारायण ने बताया कि स्थिति दयनीय है। प्राथमिक उपचार के बाद गया मगध मेडिकल अस्पताल रेफर कर दिया गया है।

131 करोड़ की सिंचाई योजना को मिली स्वीकृति, 2000 हेक्टेयर भूमि होगी सिंचित

निज संवाददाता | बारूण (औरंगाबाद)

जिले के बारुण प्रखंड अंतर्गत मेह पंचायत में सोन नदी से उद्वह सिंचाई परियोजना को लेकर शुक्रवार को जिलाधिकारी श्रीकांत शास्त्री ने विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री की प्रगति यात्रा के दौरान की गई घोषणाओं के आलोक में इस महत्वपूर्ण योजना को स्वीकृति दी गई है। इस योजना के तहत विशनपुर उपवितरणी के शेष कमांड क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। जिलाधिकारी ने बताया कि इस योजना पर 131 करोड़ रुपये की लागत आएगी। इसके तहत सोन नदी में इंटेक वेल बनाया जाएगा, जहां से प्रेशर पाइप के माध्यम से पानी को लिफ्ट कर बिशनपुर उपवितरणी से निसृत नरारीकला लघु नहर में पानी छोड़ा जाएगा। इससे अब तक सिंचाई सुविधा से वंचित कमांड क्षेत्र में पानी उपलब्ध हो सकेगा। इस परियोजना की सबसे खास बात यह है कि इसके लिए किसी प्रकार की भूमि अधिग्रहण की आवश्यकता नहीं होगी। कार्यपालक अभियंता उत्तर कोयल नहर, नवीनगर ने जानकारी देते हुए बताया कि इस योजना के पूरा होने पर नबीनगर और बारुण प्रखंड के कई गांवों को सिंचाई सुविधा मिलेगी।

इस परियोजना से नबीनगर प्रखंड के नारारीकला, बेनी बिगहा, सरसना एवं अन्य गांवों तथा बारुण प्रखंड के तेंदुआ, बिशुनपुर, बाघा, सहसपुर, दरियाबाद, महाददी, अंबा, लखैपुर, जंगीबिगहा, सदुरी सहित कई गांवों के कृषि कमांड क्षेत्र की 2000 हेक्टेयर से अधिक भूमि को सिंचाई की सुविधा मिलेगी। अधिकारियों के अनुसार इस नहर में एक साल के भीतर पानी उपलब्ध करा दिया जाएगा। इस परियोजना से जुड़ी जानकारी मिलने पर स्थानीय किसानों में खुशी की लहर दौड़ गई, उन्होंने मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर जिला योजना पदाधिकारी अविनाश प्रकाश, वरीय उप समाहर्ता रत्ना प्रियदर्शनी, कार्यपालक अभियंता (नहर प्रमंडल, नबीनगर), स्थानीय मुखिया, अन्य जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे।

52वें दिन भी किसान मजदूर मोर्चा का धरना-प्रदर्शन जारी

रफीगंज(औरंगाबाद)(नि.सं.)। रफीगंज प्रखंड परिसर में शुक्रवार को किसान मजदूर मोर्चा मगध के बैनर तले किसानों का 52 वां दिन भी धरना -प्रदर्शन जारी रहा। धरना की अध्यक्षता लड्डू खां, सुधीर चन्द्रवंशी एवं संचालन पूर्व पैक्स अध्यक्ष सत्येन्द्र यादव, भोला वर्मा ने किया। वही लड्डू खान धरना-प्रदर्शन मे रमजान में भी रोजा रखते हुए धरना में शामिल रहे। लड्डू खान ने कहा कि उत्तर कोयल नहर के कुट-कुट डैम में फाटक लगाने, अंगरा, कोटवारा एवं चेई नवादा शाखा के अधूरे कार्य को पूरा करने को लेकर अनिश्चितकालीन महाधरना 15 जनवरी से प्रारंभ है।

अवैध बालू खनन पर कार्रवाई, चार ट्रैक्टर जब्त, 9.21 लाख का जुर्माना

निज सं. | दाउदनगर (औरंगाबाद)

जिले के दाउदनगर थाना क्षेत्र में अवैध खनन, परिवहन और भंडारण की रोकथाम के लिए गठित विशेष छापेमारी दल ने शुक्रवार को सख्त कार्रवाई की। इस अभियान में खान निरीक्षक कुमार प्रत्यूष, राजू कुमार, मो. इकबाल हुसैन, पुलिस पदाधिकारी विकास कुमार और पुलिस बल शामिल थे। छापेमारी के दौरान मेवा विगहा के निकट सोन नदी में अवैध रूप से बालू का उत्खनन करते हुए 4 ट्रैक्टर-ट्रेलर जब्त किए गए। इन सभी वाहनों पर खान एवं भूतत्व विभाग के नियमों के तहत कार्रवाई करते हुए 9,21,850 रुपये का जुर्माना लगाया गया। साथ ही, बिहार खनिज (समानुदान, अवैध खनन, परिवहन एवं भंडारण निवारण) संशोधन नियमावली 2024 और भारतीय दंड संहिता के तहत प्राथमिकी दर्ज कराई गई। प्रशासन की ओर से यह स्पष्ट किया गया कि जिले में अवैध खनन को पूरी तरह रोकने के लिए लगातार अभियान चलाया जाएगा।

जिले में पधारे कवि अज्ञेय जी के 114वीं जयंती पर सामयिक संवाद

एसवीवी संवाददाता | औरंगाबाद

जिला मुख्यालय औरंगाबाद की महत्वपूर्ण साहित्यिक संस्था जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में आधुनिक हिंदी साहित्य के महान साहित्यकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय जी के 114 वीं जयंती पर उनके समग्र रचना पर आधारित सामयिक संवाद का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह, उपाध्यक्ष डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्रा,महामंत्री धनंजय जयपुरी के आह्वान पर संवाद करते हुए संस्था के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने बताया कि अज्ञेय जी आधुनिक हिंदी साहित्य के ऐसे शीर्षस्थ साहित्य सेवी के रूप में जाने जाते हैं जो साहित्य के विभिन्न विधाओं में पारंगत थे।कवि,कथाकार, निबंधकार,पत्रकार,संपादक यायावर के रूप में जाने जाते थे।आजादी की लड़ाई में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। प्रयोगवाद एवं नई कविता को प्रतिष्ठित करने का कार्य किया था। उनकी यायावरी जग प्रसिद्ध थी। शेखर एक जीवनी, आंगन के पार द्वार तक, तार सप्तक, कितनी नावों में कितनी बार रचनाएं हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि रचना है।

वे अपने नाम के अनुरूप थे उन्होंने जो भी साहित्य रचा उसमें जीवंतता है। मानव के अंदर जो भी हलचल होती हैं जो भी प्रश्न मन में उठते हैं उनके जवाब अज्ञेय की रचनाओं में मिल जाती हैं औरंगाबाद के महान साहित्यकार शंकर दयाल बाबू के आग्रह पर उनके कवि सम्मेलन में औरंगाबाद पधारे थे उनकी याद में देव भवानीपुर के कामता सेवा केंद्र में अज्ञेय की प्रतिमा भी लगी है।यह औरंगाबाद जिले के लिए गौरव की बात है।

पीएनबी ऋण वसूली अभियान में 30 बकायेदारों से 30 लाख की वसूली

निज संवाददाता | ओबरा (औरंगाबाद)

ओबरा प्रखंड के श्री कृष्ण भवन में शुक्रवार को पंजाब नेशनल बैंक के द्वारा ऋण मुक्ति शिविर का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रधान कार्यालय दिल्ली से आए महाप्रबंधक अमिताभ राय, सीओ हरिहरनाथ पाठक, बीडीओ मो युनुस सलीम, मंडल प्रमुख प्रवीण कुमार, उप मंडल प्रमुख विनोद प्रसाद सिंह, अग्रणी जिला प्रबंधक आनंद वर्धन, सर्किल शस्त्रा प्रमुख रंजीत कुमार एवं ओबरा शाखा प्रबंधक विनोद कुमार ने संयुक्त रूप से दीप जलाकर किया गया। इसके बाद स्वागत गान हुआ और अतिथियों को अंगवस्त्र एवं मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। शिविर में 30 बकायेदारों से 30 लाख रुपए की वसूली की गई। कार्यक्रम में महाप्रबंधक अमिताभ राय ने कहा कि जब आप ऋण लेते हैं और उसे वापस नहीं करते हैं तो उसका नकारात्मक असर आपके बाद अगली पीढ़ी पर भी पड़ता है। ऐसे में आज के शिविर में अपना ऋण खत्म कर के अपनी अगली पीढ़ी को इसका लाभ पहुंचाएं। श्री राय ने कहा कि बैंक आपकी सुविधा के लिए आपको ऋण देती है, ऐसे में आपकी भी जवाबदेही बनती है कि उसे समय से वापस जरूर करें। यह शिविर पूरे देश में लगाया जा रहा है ताकि अधिक से अधिक ऋण की वसूली हो और बैंक को मजबूती मिल सके। वहीं मंडल प्रमुख प्रवीण कुमार ने कहा कि पीएनबी औरंगाबाद जिले का अग्रणी बैंक है और औरंगाबाद मंडल के अंतर्गत औरंगाबाद, रोहतास और अरवल जिला आता है जहां बैंक की कुल 75 शाखाएं कार्यरत हैं। श्री कुमार ने कहा कि जो भी खाताधारक बैंक से ऋण लिए हैं और अपना ऋण नहीं चुका पाए हैं वैसे लोगों का खाता एनपीए हो गया है। उन्हीं के लिए आज इस शिविर का आयोजन किया गया है। ऋण नहीं चुकाने वाले लोगों के घर पर बैंक द्वारा नोटिस भेजी जा रही है।

किसानों की जमीन पर जबरन डैम निर्माण, लोजपा के प्रदेश महासिचव नेता प्रमोद कुमार सिंह ने जताया कड़ा विरोध

निज संवाददाता | मदनपुर (औरंगाबाद)

मदनपुर प्रखंड के दक्षिणी उमगा पंचायत स्थित मोजा सहियारी में किसानों की ज़मीन पर जबरन चेक डैम निर्माण को लेकर विवाद बढ़ता जा रहा है। प्रशासन द्वारा किसानों की सहमति के बिना उनकी निजी ज़मीन पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया, जिससे ग्रामीणों में भारी आक्रोश है। लोजपा (रामविलास) के प्रदेश महासचिव और रफीगंज विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी प्रमोद कुमार सिंह ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया और किसानों के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज़ बुलंद की। उन्होंने कहा कि प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा किसानों की ज़मीन को ज़बरदस्ती अधिग्रहित करने की कोशिश की जा रही है, जबकि किसानों के पास ज़मींदारी रसीद, ऑनलाइन रसीद और दाखिल-खारिज से जुड़े सभी वैध दस्तावेज मौजूद हैं। इसके बावजूद प्रशासनिक दबाव में उनकी ज़मीन पर अवैध रूप से कब्ज़ा करने का प्रयास किया जा रहा है। प्रमोद कुमार सिंह ने प्रशासन से सवाल किया कि जब किसानों के पास सभी कानूनी कागजात मौजूद हैं, तो उनकी ज़मीन को जबरन अधिग्रहण करने की जरूरत क्यों पड़ रही है। उन्होंने कहा कि जब इस विषय पर सक्षम पदाधिकारियों से बातचीत की गई, तो कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया गया। उन्होंने प्रशासन पर किसानों की आवाज़ दबाने का आरोप लगाया और चेतावनी दी कि अगर जल्द ही इस समस्या का समाधान नहीं निकला, तो चरणबद्ध आंदोलन किया जाएगा। पहले मदनपुर प्रखंड कार्यालय का घेराव किया जाएगा, फिर सक्षम मजिस्ट्रेट के कार्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन किया जाएगा और अंततः जिला स्तर पर संवैधानिक विरोध दर्ज कराया जाएगा। स्थानीय किसानों ने प्रशासन के इस कदम के खिलाफ नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि वे अपनी ज़मीन पर जबरन निर्माण नहीं होने देंगे। ग्रामीणों का आरोप है कि अधिकारियों द्वारा उन्हें धमकाया जा रहा है और जबरदस्ती ज़मीन खाली कराने का दबाव बनाया जा रहा है।

मदनपुर चैंपियन नें रफीगंज वैरीयर को चार रनों से हराकर ट्रॉफी पर किया कब्जा

निज संवाददाता | मदनपुर(औरंगाबाद)

प्रतिभा एवं दक्षता का लोहा दुनिया मानती है। चाहे हांथों में एके 4 7 हो या बैट वॉल। ऐसा ही माजरा आज मदनपुर के खेल परिसर में देखने को मिला। आज मदनपुर खेल परिसर में मदनपुर चैंपियन एलेवन वनाम रफीगंज वैरीयर इलेवन के बीच 12 ओभरों का क्रिकेट मैच खेला गया। इस मैच में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सदर -2 अमीत कुमार, पुलिस अंचल निरीक्षक मदनपुर मनोज कुमार, थानाध्यक्ष मदनपुर राजेश कुमार सहीत रफीगंज थाना, कासमा थाना, सलैया थाना के थानाध्यक्ष समेत कनिय पदाधिकारी एवं पुलिस कर्मी खिलाड़ी बनें थें। मदनपुर चैंपियन एलेवन टीम की कप्तानी अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सदर - 2 अमित कुमार में किया तो रफीगंज वैरीयर इलेवन टीम की कप्तानी पुलिस अंचल निरीक्षक मनोज कुमार नें की । टॉस मदनपुर की चैंपियन इलेवन टीम नें जीतकर पहले बल्लेबाजी चुना। निर्धारित 12 ओभर में 1 2 1 रन बनायी । लक्ष्य का पीछा करनें रफीगंज की वैरीयर इलेवन की टीम नें 1 2 ओभर शानदारी से खेलते हुए 1 1 7 रन ही बनाया । नतीजन कुल 0 4 रनों से मदनपुर की चैंपियन इलेवन की टीम नें मैच अपनें नाम कर ट्रॉफी पर कब्जा जमा लिया।

सत्यमेव जयते
राज्यपाल, बिहार
GOVERNOR OF BIHAR

"अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस"
8 मार्च 2025
संदेश

राज भवन
पटना–800022
RAJ BHAVAN
PATNA 800022

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर राज्य की महिलाओं को मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। बिहार सरकार द्वारा महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण, क्षमतावर्द्धन, सुरक्षित वातावरण आदि के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है एवं इसके सकारात्मक परिणाम भी परिलक्षित हो रहे हैं।

राज्य सरकार द्वारा मुख्यमंत्री नारी शक्ति योजना के तहत महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सशक्तीकरण के उद्देश्य से अल्पावास गृह, रक्षा गृह, कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास एवं उनके बच्चों के लिए पालना घर, सामाजिक पुनर्वास कोष, महिला विशेष कोषांग, सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम, दहेज एवं बाल–विवाह उन्मूलन अभियान, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न, मानव व्यापार, कन्या भ्रूण हत्या, महिला अधिकारों एवं विभिन्न सामाजिक बुराईयों के उन्मूलन और महिलाओं के कौशल विकास हेतु व्यापक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

बालिकाओं एवं किशोरियों के सशक्तीकरण के लिए मुख्यमंत्री बालिका पोशाक योजना, मुख्यमंत्री बालिका साईकिल योजना, मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना, मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना, मिशन शक्ति एवं मुख्यमंत्री नारी शक्ति योजना के माध्यम से व्यापक पहल की गयी है। महिलाएं समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, उनके बिना विकसित तथा समृद्ध समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

हम सबका दायित्व है कि महिलाओं की सुरक्षा और उनके सशक्तीकरण के लिए सदैव प्रतिबद्ध और प्रयत्नशील रहें।

पुनः एक बार सभी महिलाओं को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

(आरिफ मोहम्मद खां)

PR No.-021126 (SWD)D. 2024-25

बिहार सरकार

संदेश

मुख्यमंत्री
बिहार

आज **अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस** के अवसर पर मैं, राज्य की समस्त महिलाओं को अपनी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

किसी भी राज्य या देश के विकास में महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। राज्य सरकार पिछले 19 वर्षों से महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। सर्वप्रथम बालिका शिक्षा को बढ़ावा दिया गया और शिक्षा के प्रति बालिकाओं का रुझान बढ़ाने के लिए पोशाक, साईकिल एवं मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना चलायी गयी। इसका ही परिणाम है कि मैट्रिक की परीक्षा में लड़के एवं लड़कियों की संख्या लगभग बराबर हो गयी है।

महिलाओं को रोजगार देने एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए सभी आयामों पर काम किया जा रहा है। महिलाओं के लिए पंचायती राज संस्थाओं एवं नगर निकायों में 50 प्रतिशत आरक्षण से शुरूआत की गयी और प्राथमिक शिक्षक नियोजन में 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया। उसके बाद पुलिस में भी महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया जिसका परिणाम है कि आज बिहार पुलिस में महिलायें लगभग 30 हजार है, जिनका प्रतिनिधित्व देश में सबसे अधिक है। वर्ष 2016 से महिलाओं को सरकारी नौकरियों में 35 प्रतिशत आरक्षण दिया जा रहा है।

पहले बिहार में स्वयं सहायता समूह की संख्या बहुत कम थी। वर्ष 2006 में विश्व बैंक से कर्ज लेकर राज्य में स्वयं सहायता समूह का गठन किया जिसे ''जीविका'' नाम दिया। अब स्वयं सहायता समूह की संख्या 10 लाख 61 हजार हो गयी है जिसमें ''जीविका दीदियों'' की संख्या 1 करोड़ 31 लाख हो गयी है। शहरी क्षेत्रों में भी स्वयं सहायता समूह का गठन हो रहा है जिनकी संख्या 34 हजार हो गयी है जिसमें लगभग 3 लाख 60 हजार जीविका दीदियां हैं। गठन लगातार जारी है। इससे महिलाओं में जागृति आ रही है और ये आत्मनिर्भर बन रही हैं।

सात निश्चय–2 में **''सशक्त महिला सक्षम महिला''** के तहत महिलाओं में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना की स्वीकृति दी गयी है। इसके तहत सभी वर्ग की महिलाओं को अधिकतम 5 लाख रूपये का अनुदान एवं 5 लाख रूपये तक का ब्याज मुक्त ऋण दिया जा रहा है। पहले इंटर पास करने पर महिलाओं को 10 हजार तथा स्नातक होने पर 25 हजार मिलते थे। अब सात निश्चय–2 के तहत इन्टर पास करने पर महिलाओं को 25 हजार रूपये तथा स्नातक होने पर 50 हजार रूपये की सहायता दी जा रही है।

महिलाओं एवं बालिकाओं के विकास के प्रति हम सदैव प्रयत्नशील हैं और उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक विकास के साथ सुरक्षित एवं बेहतर माहौल प्रदान कर रहे हैं। समाज सुधार अभियान के माध्यम से समाज में शराबबंदी के अतिरिक्त बाल विवाह एवं दहेज के विरूद्ध जागरूकता अभियान भी चलाया जा रहा है ताकि वैसी सामाजिक संरचनाएं जो लड़कों और लडकियों के बीच सामाजिक असमानताओं को बढ़ावा देते हैं, उनका समूल निवारण किया जा सके। महिलायें समाज के विकास एवं तरक्की में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. उनके बिना विकसित तथा समृद्ध समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

पुनः एक बार आप सभी को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

(नीतीश कुमार)

PR- 021368 (SWD)D. 2024-25